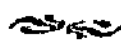
# बेचारी माँ



लेखिका

**ग्रेजिया डेलेडा**

( नोबुल पुरस्कार प्राप्त, सन् १९२७ )



संपादक

।० विश्वनाथप्रसाद मिश्र बी० ए०

साहित्यरत्न

अनुवादक

**श्रीराधाविनोद गोस्वामी**

१]        प्रथम संस्करण        [ मू

प्रकाशक
बजरंगबली, विशारद
साहित्य सेवक-कार्यालय
जालिपादेवी, बनारस सिटी

प्रथम संस्करण


---

मूल्य सवा रुपया

मुद्रक
बजरंगबली, विशारद
श्रीसीताराम प्रेस, जालिपादेवी, काशी

# भूमिका

प्रस्तुत पुस्तक ग्रेजिया डेलेडा की 'दी मदर' (The Mother) पुस्तक का भाषांतर है। ग्रेजिया डेलेडा आधुनिक की इटली की सबसे उत्तम लेखिका समझी जाती है। उसे न्यास-लेखन-कला की विदग्धता के लिये १९२७ में 'नोबुल रस्कार' भी मिल चुका है।

उपन्यास का कथानक साधारण है। उसने सार्डीनिया के क अर्धसभ्य ग्राम को घटना का स्थान चुना है और ग्राम के के पादरी को नायक बनाया है। लेखिका ने पुस्तक में रखाने का यत्न किया है कि नायक पादरी आजीवन विवाहित रहने का व्रत लेकर भी एक युवती के प्रेम-पाश में सकर अपने पथ से किस प्रकार विचलित होने लगता है और की माँ किस तरह कवच बनकर उसकी रक्षा के लिये यत हो जाती है और उसी अध्यवसाय एवं चिंता में अपने ाण त ,खो देती है। पर उसे सफलता मिलती है या नहीं, ह अंत तक अस्पष्ट रह जाता है। क्योंकि माँ की मृत्यु के साथ उपन्यास का पर्दा गिर जाता है और सबका वहीं अंत हो ाता है। सारी घटना का विकास और अंत जिस शीघ्रता के ाथ हुआ है उसके कारण चरित्र चित्रण का पूरा विकास नहीं सका है। आरंभ में मालूम होता है कि लेखिका 'माँ' के त्र को बहुत ही उज्ज्वल चित्रित कर उसे ही प्रधान पद देना ती है, पर अंत में वह उसके चरित्र में असाधारण दुर्बलता र्शित करती है और उसमें अपने पुत्र पाल के अपवाद की कथा

तक सहन करने की क्षमता नहीं दिखलाती तथा इसे आशंका का शिकार बनाकर उसका अंत तक कर देती है तरह पाल तथा उसकी प्रेयसी एगनेस के चरित्र को भी रखा गया है। फिर भी एक साधारण सी घटना को लेकर समाज की एक अवस्था का जितनी सुंदरता से चित्रण है। उसके लिये लेखिका को हर तरह से बधाई दी जा है जिस सावधानी से उसने इस कथानक को साँचे में और जिस खूबी के साथ उसने इसे निबाहा है, कमा नायक की प्रवृत्ति का उसने विश्लेषण कर डाला है, प चरित्र पर कहीं से आँच नहीं आने दी है। माँ की पुरानी रूढ़ियों का एक ज्वलंत नमूना है। देहातियों की का चित्रण अर्धसभ्य जातियों का उदाहरण है। इन सन भी लेखिका ने इतनी सुंदरता से दिखलाया है कि उस विश्वासों पर भी किसी तरह का लाछन या कलंक नहीं लग इस तरह पुस्तक अपने ढंग की निराली और अनोखी पुस्तक का अनुवाद कर अनुवादक ने बड़ा अच्छा काम

प्रस्तुत पुस्तक में जो लोग लंबी-चौड़ी कहानी उत्सुक हैं अथवा प्रेम की इस कथा का विकास चाहते इसके द्वारा किसी तरह का प्रोपगैंडा कराना चाहते हैं उपन्यास में आनंद नहीं आ सकता, क्योंकि यह पुस्तक दृष्टि से लिखी गई है और जो लोग उपन्यास में आनंद चाहते हैं उनके लिये इसमे पर्याप्त सामग्री एक चरित्र के चित्रण में कला का स्पष्ट दर्शन मिलता के ही चरित्र को ले लीजिए। 'माँ' आदर्श रमणी

पुत्र की मंगल-कामना से वह विवश है। वह उसे पादरी के नियम से किसी तरह भी विचलित नहीं होने देना चाहती। पर लेखिका यह भलीभाँति जानती है कि 'माँ' एक देहाती अपढ़ औरत है। उसकी इस कामना में उच्च आदर्श नहीं हो सकता। लेखिका उसे किस सौंदर्य के साथ प्रकट करती है। भूतों की भावना और उस पद से हटाए जाने का भय ही उसकी चिंता का प्रधान कारण है। कला का कितना सुंदर प्रदर्शन है। वही झलक पाल और उसकी प्रेयसी एगनेस के चरित्र में मिलती है। कला की दृष्टि से पुस्तक अपना जोड़ नहीं रखती। संभव है साधारण जनता को पुस्तक रुचिकर न प्रतीत हो और व्यवसाय की दृष्टि से प्रकाशक को पुस्तक की खपत में आशाजनक सफलता न मिले, पर इससे अनुवादक तथा प्रकाशक को निराश नहीं होना चाहिए। हिंदी के पाठकों की रुचि बिगड़ी हुई है। कला की उनमें परख नहीं है। वे उपन्यास में लंबी-चौड़ी कहानी खोजते हैं, सेंसेशनल (Sensational) घटना खोजते हैं, नायक और नायिका तथा अन्य प्रधान पात्रों के चरित्र में भयानक उथल-पथल देखना चाहते हैं, घटनावली में आकाश-पाताल एक कर डालना चाहते हैं, और उनकी रुचि के अनुनायक लेखक तथा अनुवादक अधिकतर इसी तरह की पुस्तकों को लिखते आए हैं। इधर कुछ वर्षों से हिंदी के एकाध प्रकाशकों ने कला की दृष्टि से पुस्तकें प्रकाशित करने का यत्न किया था, पर उन्हें यथेष्ट सफलता नहीं मिल सकी और वे उदासीन-से होते जा रहे हैं। यह उचित नहीं है। इसके लिये अध्यवसाय की जरूरत है। बिना इसके उपन्यास में कला का दर्शन नहीं हो सकता।

अनुवाद का काम बड़ा ही कठिन है। दूसरे के भाव को अपना जामा पहनाकर इस तरह खड़ा करना पड़ता है कि देखनेवाले उसके विदेशीपन को ताड़ न सकें। उत्तम अनुवाद की यही कसौटी है और अनुवादक इसमें पूरा सफल हुआ है। पुस्तक की भाषा में मौलिकता का पूरा आनंद आता है। विदेशी नामों को यदि उड़ा दिया जाय और उनके स्थान पर देशी नाम रख दिए जायँ तो कोई नहीं कह सकता कि पुस्तक मौलिक नहीं है। हम अनुवादक को इस सफलता पर बधाई देते हैं।

अनुवाद हर दृष्टि से बहुत ही सुंदर हुआ है। भाषा बड़ी ही प्रांजल और संस्कृत है। अनुवादों में इसी तरह की भाषा की आवश्यकता है। क्योंकि पढ़नेवालों को यदि मौलिक विचार नहीं मिलते तो भी सुंदर और परिष्कृत भाषा तो मिल जाती है और वे अपना साहित्यिक विकास कर सकते हैं। भिन्न-भिन्न यूनिवर्सिटी के कोर्सों (पाठ्य-ग्रंथों) में जो मौलिक किताबें चुनी गई हैं उनमें से अधिकांश की अपेक्षा तो यह अनूदित पुस्तक कहीं अच्छी है। यों तो नाक-भौं सिकोड़नेवाले अपनी अनधिकार चेष्टा से कभी बाज नहीं आ सकेंगे। वे तो अपनी मौलिकता की धुन में इस तरह पागल हो रहे हैं कि वे ... और अनुवादकों को बवंडर बनकर उड़ा देना चाहते हैं।

जो हो हम अनुवादक की हर तरह से सफलता चाहते और आशा करते हैं कि हिंदी-भाषा-भाषी जनता इनके ... को बढ़ाकर इन्हें मातृभाषा की सेवा में अवश्य अग्रसर ...

जलालपुर माफी, चुनार
गणेश चतुर्थी, १९९०

छविनाथ पांडेय
( बी० ए०, एल एल० बी० )

# बेचारी माँ

## १

सम्भवत आज रात को पाल फिर बाहर जानेवाला है।

पास के कमरे से उसकी माँ उसके धीरे-धीरे टहलने की ध्वनि सुन रही है। शायद, पाल इस प्रतीक्षा में है कि माँ दीपक बुझाकर सोने के लिये चली जाय।

माँ ने रोशनी बुझा दी, पर वह बिस्तरे पर नहीं गई। वह दरवाजे के पास जा बैठी। वह अपनी हथेलियाँ मलने लगी, ठीक उसी प्रकार, जैसे कोई दासी काम करते करते हाथों को मलते हुए बोलने की चेष्टा करती है। वह अँगूठों को बड़े जोर से मसल रही थी। प्रतिक्षण उसकी व्याकुलता बढ़ती ही जाती थी। रह-रहकर उसे यह आशा होने लगती कि पाल अब चुपचाप बैठकर नियमानुसार कुछ पढ़ने लगेगा अथवा

सोने के लिये बिस्तरे पर जा लेटेगा। थोड़ी देर के लिये उस नवयुवक पुरोहित के पैरों की आहट सचमुच बन्द हो गई। उस समय उसे जान पड़ा कि मैं एकदम अकेली हूँ। बाहर प्रभंजन की ध्वनि पिछवाड़े की ओर की ऊँची भूमि पर लगे हुए वृक्षों की खड़खड़ाहट में मिलकर शोर मचा रही थी। वायु प्रबल नहीं थी, पर उसकी ध्वनि अविरत हो रही थी, कानों को बड़ी बुरी जान पड़ती थी। वह किसी अदृश्य बंधन से उस गृह को कर्कशता के साथ बाँध रही थी। वह धीरे धीरे समीप आती जाती थी। वह उस छोटे से गिर्जे को जड़ से उखाड़ फेंकना चाहती थी, धराशायी बना देने का प्रयत्न कर रही थी।

माँ ने पहले ही से द्वार बंद कर लिए थे, भीतर से दो बेंड़े लगा दिए थे जिससे कोई प्रेत भीतर न आ सके। जिस दिन रात में आँधी चला करती है, उस दिन प्राय भूत घरों में घुसकर जीवों के पकड़ने की ताक में घूमा करते हैं। पर माँ को इन बातों में बहुत कम विश्वास था। फिर भी वह अनमनी होकर इस पर विचार कर रही थी। भूतों की बात सोचते समय उसे अपने ही ऊपर घृणा हो रही थी। उसने विचारा कि इस छोटे गिर्जे के भीतर ही कोई प्रेतात्मा रहती है। वह मेरे पाल के साथ साथ खाती पीती है और खिड़की के पास दीवार पर टँगे हुए उसके शीशे के चारों ओर चक्कर काटा करती है।

इसी समय उसे फिर पाल के चलने की आहट मिली। शायद, वह अपने कमरे में शीशे के सामने खड़ा था। यद्यपि ऐसा करना

पादरियों के लिए निषिद्ध था, तथापि पाल बहुत दिनों से इन बातों को नहीं मानता था।

माँ को स्मरण हो आया कि मैंने पिछले दिनों उसे बराबर शीशे के सामने खड़े होकर सुंदर रमणी की भाँति स्वयं अपने ही सौंदर्य पर मुग्ध होते देखा है। कभी तो वह अपने नखों को साफ किया करता और कभी बालों को सँवारता। उसने अपने केश बढ़ा रखे थे, अब वह उन्हें ऊपर की ओर झाड़कर सँवार लेता। उसके केश सारे मस्तक को ढके ऐसे जान पड़ते, मानों उसने गुरुदीक्षा के समय जो चौर कराया था, उसके पवित्र चिह्न को वे एकदम ढक लेना चाहते हैं। अब वह इत्र भी लगाने लगा था। ब्रश से दाँतों को भी साफ करता, उनमे सुगंधित मंजन लगाता। इतना बनाव-सिंगार कि अपनी भौंहों को भी कंघी से झाड़ लेता।

माँ को वह इतना स्पष्ट दिखाई देने लगा, मानो दोनों के बीच की दीवार का कोई अस्तित्व ही न रह गया हो। उसने देखा कि उजली दीवार से सटकर एक काली सी मूर्त्ति खड़ी है, क्षीणकाय और लंबी—बहुत लंबी। वह इधर उधर बच्चों की तरह मनमानी गति से टहल रही है। उसकी गर्दन तो पतली थी, पर मस्तक अपेक्षाकृत कुछ बड़ा था। उसका चेहरा पीतवर्ण का था और विशाल ललाट आगे की ओर उभड़ा हुआ था, मानों वह भौंहों को कुपित होने के लिये उत्तेजित कर रहा हो और बड़ी बड़ी आँखों को अपने बोझ से दबा रहा हो। दूसरी ओर उसके पुष्ट जबड़े,

सोने के लिये बिस्तरे पर जा लेटेगा। थोडी देर के लिये उस नवयुवक पुरोहित के पैरों की आहट सचमुच बद हो गई। उस समय उसे जान पडा कि मैं एकदम अकेली हूँ। बाहर प्रभंजन की ध्वनि पिछवाडे की ओर की ऊँची भूमि पर लगे हुए वृक्षों की खड़खड़ाहट में मिलकर शोर मचा रही थी। वायु प्रबल नहीं थी पर उसकी ध्वनि अविरत हो रही थी, कानों को बड़ी बुरी जान पडती थी। वह किसी अदृश्य बधन से उस गृह को कर्कशता के साथ बाँध रही थी। वह धीरे धीरे समीप आती जाती थी। वह उस छोटे से गिर्जे को जड से उखाड़ फेंकना चाहती थी, धराशायी बना देने का प्रयत्न कर रही थी।

माँ ने पहले ही से द्वार बद कर लिए थे, भीतर से दो वेंडे लगा दिए थे जिससे कोई प्रेत भीतर न आ सके। जिस दिन रात में आँधी चला करती है, उस दिन प्राय भूत घरों मे घुसकर जीवों के पकड़ने की ताक में घूमा करते हैं। पर माँ को इन बातों में बहुत कम विश्वास था। फिर भी वह अनमनी होकर इस पर विचार कर रही थी। भूतों की बात सोचते समय उसे अपने ही ऊपर घृणा हो रही थी। उसने विचारा कि इस छोटे गिर्जे के भीतर ही कोई प्रेतात्मा रहती है। वह मेरे पाल के साथ साथ खाती पीती है और खिडकी के पास दीवार पर टँगे हुए उसके शीशे के चारों ओर चक्कर काटा करती है।

इसी समय उसे फिर पाल के चलने की आहट मिली। शायद, वह अपने कमरे में शीशे के सामने खडा था। यद्यपि ऐसा करना

पादरियों के लिए निषिद्ध था, तथापि पाल बहुत दिनों से इन बातों को नहीं मानता था।

माँ को स्मरण हो आया कि मैंने पिछले दिनों उसे बराबर शीशे के सामने खड़े होकर सुंदर रमणी की भाँति स्वयं अपने ही सौंदर्य पर मुग्ध होते देखा है। कभी तो वह अपने नखों को साफ किया करता और कभी बालों को सँवारता। उसने अपने केश बढ़ा रखे थे, अब वह उन्हें ऊपर की ओर झाड़कर सँवार लेता। उसके केश सारे मस्तक को ढके ऐसे जान पड़ते, मानों उसने गुरुदीक्षा के समय जो क्षौर कराया था, उसके पवित्र चिह्न को वे एकदम ढक लेना चाहते हैं। अब वह इत्र भी लगाने लगा था। ब्रश से दाँतों को भी साफ करता, उनमें सुगंधित मंजन लगाता। इतना बनाव-सिंगार कि अपनी भौंहों को भी कंघी से झाड़ लेता।

माँ को वह इतना स्पष्ट दिखाई देने लगा, मानों दोनों के बीच की दीवार का कोई अस्तित्व ही न रह गया हो। उसने देखा कि उजली दीवार से सटकर एक काली सी मूर्त्ति खड़ी है, क्षीणकाय और लंबी—बहुत लंबी। वह इधर उधर बच्चों की तरह मनमानी गति से टहल रही है। उसकी गर्दन तो पतली थी, पर मस्तक अपेक्षाकृत कुछ बड़ा था। उसका चेहरा पीतवर्ण का था और विशाल ललाट आगे की ओर उभड़ा हुआ था, मानों वह भौंहों को कुपित होने के लिये उत्तेजित कर रहा हो और बड़ी बड़ी आँखों को अपने बोझ से दबा रहा हो। दूसरी ओर उसके पुष्ट जबड़े,

चौडा और भरा हुआ मुँह, सुदृढ़ ठुड्डी घृणा के साथ उसके विरुद्ध विप्लव करती हुई जान पड़ती थी, पर उसे गिरा देने में किसी प्रकार समर्थ नहीं हो रही थी।

वह शीशे के पास पहुँचकर रुक गया। उसका मुख मंडल प्रदीप्त हो उठा। पलकें एक-दम ऊपर को उठ गई और भूरी-भूरी स्वच्छ आँखों की पुतलियाँ हीरे की भाँति चमकने लगीं।

उस समय अपने स्वस्थ और मनोहर पाल का वह सौंदर्य निरखने के लिये माँ का हृदय नाच उठा। उसके हृदय का कोना कोना प्रफुल्लित हो गया। ठीक उसी समय पाल के दबे पावों चलने की आहट फिर आने लगी। इस ध्वनि ने उसे तुरत ही फिर चिंता मग्न कर दिया।

वह बाहर जा रहा है, निस्सदेह वह बाहर जा रहा है। उसने अपने कमरे का दरवाजा खोला। वह फिर ठिठक गया। शायद, वह भी बाहर होनेवाली ध्वनि को सुन रहा था। पर बाहर कुछ नहीं था, केवल मकान के चतुर्दिक वायु के प्रबल थपेडे अविरत गति से ध्वनित हो रहे थे। वही ध्वनि सुनाई पड़ रही थी।

माँ ने एक बार कुर्सी से उठकर पुकारने का प्रयत्न किया कि 'पाल! मेरे प्यारे बच्चे पाल! जरा ठहर जाओ!' किंतु उसके मुँह से आवाज न निकल सकी। उसकी इच्छा से भी प्रबलतर किसी शक्ति ने उसे उठने ही नहीं दिया। उसके घुटने काँपने लगे, मानों उस आसुरी-शक्ति के विरुद्ध विप्लव कर रहे हों। घुटने तो काँप ही रहे थे, पैरों ने तो चलने से भी इनकार कर दिया। ऐसा

जान पड़ा, मानो कोई दोनों हाथों से उसे बल-पूर्वक कुर्सी पर बैठे रहने के लिये दबा रहा है।

इसलिये पाल चुपचाप सीढ़ियों से नीचे उतर आया और दरवाजा खोलकर बाहर हो गया। वायु का प्रचंड वेग मानो उसे चारों ओर से घेरकर बाण की तरह उड़ाए लिए जा रहा हो।

जब वह चला गया, तब कहीं माँ फिर से उठकर दीपक जला सकी। पर यह भी उसने बड़ी कठिनाई से कर पाया, क्योंकि जब वह दीवार पर सलाई घिसती तो जलने के स्थान पर वह केवल चमक कर ही रह जाती। जहाँ जहाँ वह सलाई घिसती, केवल धुँधला प्रकाश होकर रह जाता, सलाई जलती ही न थी। अंत में, कुछ देर बाद उस छोटे से कमरे में पीतल का एक छोटा दीपक अपनी धुँधली ज्योति छिटकाने लगा। कमरा इतना सादा और साधारण था कि मजदूरों के घर सा लग रहा था। माँ दरवाजा खोलकर खड़ी हो गई और आहट लेने लगी। वह अब तक काँप रही थी। फिर भी चलने में उसके पैर भरपूर पड़ते थे, लड़खड़ाते नहीं थे। उसका मस्तक भारी था और कद नाटा, उसके स्थूल शरीर पर काले काले मैले कुचैले कपड़े पड़े थे। उसे देखने से जान पड़ता, मानों कुल्हाड़ी से उतना बड़ा कुंदा काटकर खड़ा कर दिया है।

ड्योढ़ी पर से उसने नीचे की सीढ़ियों पर दृष्टि डाली। सीढ़ियों के अगल-बगल की दीवारें चूने से पुती हुई थीं और जहाँ सीढ़ियों का अंत होता था वहाँ बाहरी फाटक लगा हुआ था। उसने

देखा कि किवाड़ वायु के प्रखर वेग से खड़खड़ा रहे हैं। उसने जो डंडे लगा दिए थे, उन्हें पाल निकालकर किवाड़ के पीछे लटका गया है। यह देखते ही सहसा उसका मुख भीषण रोष से तमतमा उठा।

ओह, न, भूत को जीतना ही होगा। उसने दीपक को लाकर सीढ़ी पर रख दिया और नीचे उतर कर बाहर चली ही तो गई।

वायु ने उसे बड़े जोरों से झकझोरना आरंभ किया। वह उसके कपड़े खींचती, सिर का रूमाल उड़ा देती, मानों उसे बरबस पुनः घर में ढकेल देने का प्रयत्न कर रही हो। पर उसने रूमाल को तो ठुड्डी पर खींचकर बाँध लिया और सिर को झुका लिया। इस प्रकार वह आगे बढ़ी, मानों मार्ग में आनेवाली विघ्न बाधाओं से भिड़ने के लिये उसने कमर कस ली हो। उसे जान पड़ा कि मैं गिर्जे को पार कर चुकी, रसोई घर की दीवार भी पीछे छूट गई। जब वह गिर्जे के कोने पर पहुँची तो रुक गई। यहीं से पाल मुड़ा था। वह जल्दी-जल्दी खेत को पार करता हुआ काले पक्षी की भाँति उड़ गया था। उसके कपड़े पर भी भाँति फड़फड़ा रहे थे। खेत के उस ओर एक पुराना मकान खड़ा था। मकान के पीछे एक बड़ा टीला उठा हुआ था। गाँव के ऊपर उठा हुआ यह टीला क्षितिज को ढँके हुए था।

चंद्र कभी मेघ पटल में छिप जाता, कभी बाहर आकर झाँकने लगता। उसका वर्ण कभी नीला होता और कभी पीला। चंद्रिका पटपर की लंबी लंबी घास, गिर्जे के प्रागण और सड़क के दोनों

ओर की झोपड़ियों पर चाँदी की चादर बिछा रही थी। झोपड़ियो की शृंखला सुदूर घाटी के सुंदर वृक्ष समूह तक चली गई थी। यद्यपि चंद्रदेव चारो ओर शीतल प्रकाश फैला रहे थे, पर गाँव के भीतर न तो किसी प्रकार का प्रकाश ही था, न कहीं धूम्र की टेढ़ी मेढ़ी रेखाएँ ही दिखाई पड़ती थीं। सभी लोग दरिद्रता की मारी इन झोपड़ियों मे सो रहे थे। रात्रि के समय झोपड़ियों की ये दो श्रेणियाँ पंक्ति-बद्ध भेड़ो की दो बड़ी श्रेणियो सी जान पड़ती। अब उनके अंत में गिर्जे का शिखर गड़ेरिये की भाँति खड़ा था, मानों अपनी लकड़ी टेके उनकी रखवाली कर रहा हो।

गिर्जे के आँगन की चहारदीवारी के पास खड़े विशाल वृक्ष वायु के थपेड़ों से इधर-उधर झोंके खा रहे थे। भीषण अंधकार में भूतों की धुँधली और अस्पष्ट मूर्तियाँ सी दिखलाई पड़ रही थीं। घाटी के वृक्षो और नरकुलों की ध्वनियाँ उन मूर्तियो को और भी भयावनी बनाए दे रही थीं। रात्रि की इस भीषणता मे, मेघों की चादर में से अपना मुख दिखानेवाले चंद्र के उस धुंधले प्रकाश में माँ अपने बच्चे को ढूढती फिरती थी। उन भीषण दृश्यों मे उसके हृदय की व्यथा का भी भयानक सम्मिश्रण हो रहा था।

अब तक माँ अपने हृदय को व्यर्थ ही यह आशा बँधा रही थी कि मेरा पाल मुझे शीघ्र ही किसी अस्वस्थ की सेवा करने के लिये जाता हुआ मिल जायगा। किंतु हाय! उसकी धारणा गलत निकली। इसके बदले उसने देखा कि मेरा बच्चा टीले के नीचे उठे हुए एक पुराने मकान की ओर तेजी से जा रहा है।

उस टीले के नीचेवाले मकान में केवल एक स्वस्थ, और सुंदरी नवयुवती के अतिरिक्त और कोई न था। पाल साधारण आगंतुक की भाँति सदर फाटक पर नहीं गया। वह बगीचे की चहारदीवारी के पास के एक छोटे से दरवाजे पर पहुँचा। उसके पहुँचते ही दरवाजा खुला और तुरंत ही बंद हो गया, मानों उसका विकराल श्याम मुख पाल को निगल गया।

इसके बाद माँ भी पाल के पैरों से कुचली हुई बड़ी-बड़ी घास पर दौड़ती हुई उसी दरवाजे के पास पहुँची। वह अपने दोनों हाथों से किवाड़ों को शक्ति-भर खोलने का प्रयत्न करने लगी। किंतु द्वार ज्यों-का त्यों बंद रहा। उसे ऐसा प्रतीत होने लगा, मानों कोई प्रबल शक्ति उसे पीछे ढकेल देना चाहती है। उस बेचारी ने चाहा कि किवाड़ों को जोर से ढकेल कर शोर मचाऊँ। पर वह ऐसा न कर सकी। उसने धीरे से अपना हाथ दीवार पर रखा। शायद वह दीवार की मजबूती का अंदाज लगा रही थी। इसके उपरांत वह हताश भाव से गर्दन झुकाए द्वार पर कान लगाकर खड़ी हो गई। किंतु, उसे कुछ भी सुनाई न पड़ा। पेड़ों की खड़खड़ाहट की तुमुल ध्वनि, मानों वाटिका के भीतर होनेवाले प्रेमालाप को अपने में मिला लेने का प्रयत्न कर रही हो। फिर भी माँ धोखा नहीं खा सकती थी। वह कुछ अवश्य सुनेगी। अवश्य जानेगी। संभव है, उसका हृदय सच्ची बात जान भी गया हो। फिर भी वह अपने हृदय को धोखा देने का प्रयत्न करने लगी। वह बगीचे की चहारदीवारी के किनारे किनारे मकान के

सामने आई, सदर फाटक तक पहुँच गई। चलते समय वह दीवार के पत्थरों को स्पर्श करती जाती थी। मानों वह सोच रही हो कि कोई न-कोई पत्थर अपने स्थान से हटकर मुझे भीतर जाने के लिये मार्ग दे देगा। पर वहाँ तो सब कुछ ठोस और सुदृढ था। मजबूती से वद सदर फाटक, दरवाजे और वेंडों से दनी हुई खिडकियों ने तो उसे छोटा सा दुर्ग ही बना रखा था।

इसी समय मेघों का पटल चीरकर चद्रमा नील सरोवर में सोल्लास थिरकने लगा। गृह का रक्ताभ वर्ण चद्रिका की ज्योति से जगमगा उठा। लबी लंबी घास से आच्छादित छत के आगे लटकते हुए छज्जे उसमें बीच बीच में श्यामता का भी मिश्रण कर रहे थे। गृह के अतर्भाग में गवाक्षों के पट बद थे उनमें लगे हुए शीशे हरिताभ ज्योति छिटका रहे थे। वे दर्पण से जान पड़ते थे। उनमें चचल मेघ, नीलवर्ण गगन और सामने की उच्च भूमि पर झूमते हुए वृक्ष प्रतिबिंबित हो रहे थे।

वह फिर लौटी। दीवार में घोड़ा बाँधने के लिये बँधी हुई कड़ियों से उसका माथा टकरा गया। चलते चलते वह फिर सदर फाटक के पास रुकी। द्वार की तीन भूरी भूरी बडी सीढियों और लोहे के फाटक को देखते ही वह अपने को अपमानित समझकर तिलमिला उठी। वह उस बड़े फाटक के भीतर जाने में असमर्थ थी। वह अपने को उन भिखारिणी बालिकाओं से भी गई बीती समझ रही थी, जो द्वार के सामने खडी होकर इस बात की प्रतीक्षा किया करती हैं कि गृह का स्वामी आकर उनके सामने कुछ पैसे फेंक देगा।

प्राचीन काल में दरवाजे खुले रहा करते थे। भीतर का अंधकारमय भाग सामने से भलीभाँति दिखाई पड़ता था। उसके पत्थर के फर्श और चबूतरे साफ साफ नजर आते थे। बच्चे दरवाजों पर शोर मचाया करते थे। वे भीतर की ड्योढ़ी तक घुस आते, उनका शोर-गुल घर के भीतर उसी तरह गूँज उठता जैसे कंदरा में ध्वनि गूँज उठता है। तब एक नौकर भीतर से उनको भगाने के लिये निकल पड़ता और कहता—

'क्यों' तुम सब यहाँ क्यों शोर मचा रहे हो? क्यों, तुम तो इतनी सयानी हो गई हो, इन लड़कों के साथ घूमने में तुम्हें लज्जा नहीं लगती?" ऐसा सुनकर लड़की लज्जा से सिर नीचा कर लेती, पर इतने पर भी एक बार मकान के भीतर के अद्भुत दृश्य को निहार लेने से वह अपने को विरत न कर सकती। ठीक उसी प्रकार माँ भी वहाँ से पीछे हट गई। वह निराशा से हाथ मलने लगी। उसने उस छोटे से दरवाजे की ओर दृष्टि डाली, जिसने उसके प्यारे पुत्र पाल को अदृश्य कर लिया था। वह लौटने लगी। किंतु, ज्यों ही उसने पीछे फिरकर घर की ओर कदम बढाया, उसे इस बात की बड़ी चिंता हुई कि मैंने कुछ न किया। उसे सबसे बड़ा खेद यह था कि मैंने दरवाजे पर पत्थर मारकर और जोर से चिल्लाकर अपने पुत्र को बचाने का प्रयत्न क्यों नहीं किया? उसे अपनी कमजोरी पर खेद होने लगा। वह चुपचाप खड़ी हो गई। उसे कुछ सूझता ही न था। वह फिर दरवाजे की ओर मुड़ी, पर तुरत ही घर की

ओर लौट पड़ी। उसकी मतापदायिनी जिज्ञासा उसे कभी दरवाजे की ओर ले जाती, कभी घर की ओर। वह यह निश्चित ही नहीं कर पाती थी कि मुझे क्या करना चाहिए। अंत में उसके हृदय में आत्म त्राण का भाव जग उठा। फिर से जमकर युद्ध करने के लिये अपने विचारों को दृढ़ बनाने और शक्ति-सचय के निमित्त वह इस प्रकार घर की ओर बढने लगी, जैसे कोई वन्य-पशु घायल होकर अपनी माँद में शरण लेने के लिये लौट पड़ता है। वह ज्यों ही अपने उस छोटे गिर्जाघर में घुसी, उसने तेजी से दरवाजा बद कर लिया और धम्म से सीढी पर बैठ गई। ऊपर रखे हुए दीपक से धुँधला प्रकाश आ रहा था। सुनसान होने से वह छोटा सा मकान साँय-साँय कर रहा था। उस समय उसे ऐसा जान पड़ा कि यह गिर्जाघर तुरत ही गिर पडेगा। ठीक उसी प्रकार, जैसे किसी खोखली चट्टान के नीचे बना हुआ झोपड़ा चट्टान के हिलने से नीचे गिरने गिरने हो जाता है। बाहर हवा अब तक बड़ी तेजी से सनसना रही थी। शैतान भी बड़ी क्रूरता से मठ-मदिरों और भक्तजनों को नष्ट-भ्रष्ट करने में उसी प्रकार सलग्न था।

'हा भगवन्, हे करुणानिधे, यह क्या!'—सहसा माँ रो पडी। उसका स्वर प्रतिध्वनित होकर किसी दूसरी स्त्री के स्वर-सा प्रतीत हुआ। उसने सिर फेरकर सीढी की दीवार पर पडती हुई अपनी छाया की ओर देखा। उसे देखते ही वह चकपका उठी। उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि मैं सचमुच यहाँ अकेली नहीं हूँ। वह उस परछाई से इस प्रकार बातें करने लगी, मानो वहाँ कोई

दूसरा व्यक्ति खड़े-खड़े उसकी बातें सुनता और उत्तर देता।

'उसे बचाने के लिये मुझे क्या करना चाहिए ?'

'जब तक वह यहाँ नहीं आता, उसकी प्रतीक्षा करो दृढतापूर्वक उससे सब बातें साफ साफ कह दो। अभी समय है, मेरिया मेडालिना !'

'किंतु वह तो नाराज हो जायगा, इन बातों को नहीं मा अच्छा हो, मैं प्रधान पादरी के पास जाकर इस बात की करूँ कि वह हमे ऐसे भीषण स्थान से कहीं दूर भेज दे। ईश्वर का सेवक होता है। ससार की गति विधि से भली परिचित होता है। मैं उसके चरणों मे सिर नवाऊँगी। मूर्ति मेरी आँखो के सामने नाच रही है। वह उज्ज्वल पहने है, लोगों से भेंट करने के लिये अपने लाल कमरे है। छाती पर सुनहला क्रास चमक रहा है। दो अँगुलियाँ वाद के लिये उठी हैं। अहा ! वह तो स्वय ईश्वर की प्रतिमू मैं उससे कहूँगी—'श्रीमान् ! आप तो जानते ही हैं कि भर में यह स्थान जिस प्रकार सैकड़ो वर्षों से निर्धनता के मे बँधा है, उसी प्रकार नास्तिकता के पाश में भी बँधता जा र कोई सौ वर्ष हुए, यहाँ कोई पादरी ही नहीं है। इससे यहाँ के नि उस जगन्नियता जगदीश्वर को भी भूल गए हैं। अत में, यहाँ पादरी आया भी पर वह जैसा था, वह आपसे छिपा नहीं पचास वर्ष की अवस्था तक वह अनन्य धार्मिक और था। उसने गिर्जा और तत्सबंधी भूमि-भाग का सतोषजनक

किया। अपने ही खर्च से नदी पर एक पक्का पुल बँधवा दिया। किंतु, बाद में वह आखेट के लिये जाने लगा। तब तो उसका जीवन शिकारियों और गड़ेरियों की तरह व्यतीत होने लगा। सहसा उसमें इतना भीषण परिवर्तन हो गया कि उसका आचरण राक्षस के समान जान पड़ने लगा। वह तान्त्रिक अनुष्ठान करने लगा और पक्का शराबी होकर दुराचार में मग्न हो गया। वह चुरुट भी पीने लगा। बात-बात में व्यर्थ ही कसम खाता। कुछ शोहदों के साथ ताश खेला करता। वे ही उसके एकमात्र मित्र और रक्षक थे, क्योंकि कुत्सित आचरण के कारण भले आदमियों ने तो उसका परित्याग ही कर दिया था। जीवन के अंतिम दिनों में वह गिर्जे में एकांतवास करने लगा। वह बिलकुल अकेला रहता। यहाँ तक कि कोई नौकर भी उसके साथ नहीं रहता था। वह केवल प्रार्थना के समय वहाँ से निकलता। और कभी बाहर भी नहीं निकलता था। यह कार्य भी वह बड़े तड़के समाप्त कर कर लेता, जिससे कोई बाहरी मनुष्य वहाँ पहुँच ही न सके। लोग कहते हैं कि यह पवित्र कार्य भी वह शराब के नशे में चूर होकर ही किया करता था। उसके अफसर भी उसके विरुद्ध कुछ करने में डरते थे, क्योंकि वे जानते थे कि साक्षात् शैतान उसकी रक्षा किया करता है। और, जब एक दिन वह बीमार पड़ा तो उसकी सेवा सुश्रूषा के लिये कोई नहीं था। परिचारिका भी उसके निकट नहीं थी। उसके अंतिम दिन निकट थे। वह मृत्यु का आवाहन कर रहा था। पर कोई भी भला मनुष्य उसके निकट नहीं जाता था।

फिर भी न जाने कैसे, रात में गिर्जे की तमाम खिड़कियों से न ।८ आता दिखाई देता। लोग कहा करते हैं कि उन दिनों २८ उस गिर्जे से नदी तक एक सुरंग खोद रखी थी। शैतान का उसी मार्ग से उसके भौतिक शरीर को ले जाने का था। इसके बाद वर्षों तक उस पादरी की मृतात्मा उस मार्ग से आकर इस स्थान को भयानक बनाती रही, जिसमें कोई दूसरा पादरी इस स्थान पर आकर न रह सके। प्रत्येक रविवार को एक पादरी दूसरे गाँव से आकर प्रार्थना करता, मृतकों के शव-संस्कार का प्रबंध किया करता। एक दिन रात्रि में पादरी की मृतात्मा ने उस पुल को तोड़ डाला। इसके बाद दस वर्षों तक—मेरे पुत्र पाल के आने तक-यहाँ कोई पादरी नहीं था। पुत्र के साथ मैं भी यहाँ आई। हमने देखा कि यहाँ के निवासी बिलकुल जंगली, असभ्य और नास्तिक हो गए हैं। किंतु, जिस प्रकार वर्षा के आगमन से पृथ्वी का पुनरुद्धार हो जाता है उसी प्रकार मेरे पाल के आने से यहाँ के निवासियों का पुन संस्कार हुआ। फिर भी, अंधविश्वासियों की धारणा ठीक निकली। नये पादरी—मेरे बच्चे—पर भी विपत्ति आना ही चाहती है। उस पुराने पादरी की प्रेतात्मा अब भी इस गिर्जे की भूमि पर राज करती है। कुछ लोगों का विश्वास है कि वह पादरी अभी मरा नहीं है। वह जमीन के भीतर एक ऐसे तहखाने में रहता है, जिसका संबंध समीपस्थ नदी से है। मैंने स्वयं कभी इस प्रकार की कहानियों पर विश्वास नहीं किया। मैं अपने पुत्र पाल के साथ सात वर्षों से यहाँ निवास

करती हूँ। अभी कुछ दिनों पूर्व तक तो पाल एक भोले-भाले बालक की भाँति निष्कपट जीवन व्यतीत किया करता था। उसका सारा समय अध्ययन और ग्राम-वासियों की मगल कामना में लगता था। वह स्वभाव ही से शातप्रकृति होने के कारण आमोद प्रमोद से अलग रहता था। सात वर्षों तक उसने वाइबिल के आदेशानुसार पवित्रता का जीवन विताया। उसने कभी शराब नहीं पी। वह कभी शिकार खेलने नहीं गया। उसने कभी धूम्र-पान नहीं किया और किसी सुदर रमणी की ओर आँख उठाकर देखा भी नहीं। इस प्रकार निष्कपट जीवन व्यतीत करते हुए उसे जो कुछ आमदनी हो जाती, उसे वह उस पुराने पुल की मरम्मत के लिये एकत्र करता। मेरा पाल अट्ठाईस वर्ष का हो गया। पर।आज उसपर विपत्ति का वज्र गिरना ही चाहता है। वह एक बालिका के जाल में फँस गया है। हा प्रभो! हमें कहीं दूसरे स्थान पर भेज दीजिए। मेरे पाल की रक्षा कीजिए, नहीं तो उसका जीवन भी पिछले पादरी की भाँति नष्ट हो जायगा। उस स्त्री के जीवन की भी रक्षा होनी चाहिए। आखिर, वह एक स्त्री ही है। उसके पास पुरुषों को फँसानेवाले पर्याप्त साधन भी हैं। फिर भी, इस उजडे गाँव में उसे कोई उपयुक्त पुरुष नहीं मिलता। श्रीमान्, आप उस रमणी को भलीभाति जानते हैं। जिस समय आप इस गाँव का निरीक्षण करने पधारे थे, अपनी मडली सहित उसी के मेहमान हुए थे। उसके मकान में बहुत-से कमरे हैं। वह धनवाली है, स्वछद और अकेली है। उसके सारे

भाई और उसकी बहिन सब के सब विदेशों में हैं। केवल वही मकान और जायदाद की देख-रेख करने के लिये रह गई है। वह शायद ही कभी मकान के बाहर निकलती हो। कुछ समय पूर्व पाल उसे जानता तक न था। उसका पिता एक विचित्र प्रकार का आधा ग्रामीण और आधा नागरिक था। उस शिकारी और अधार्मिक पुराने पादरी का यह मित्र था। इसके अतिरिक्त मुझे और कुछ कहने की आवश्यकता नहीं। उसका पिता कभी गिर्जे मे नहीं जाता था, पर अपनी अंतिम बीमारी मे उसने पाल को बुलाया। मेरा पाल उसके पास अंतिम क्षण तक रहा, और उसीने स्वयं उसके संस्कार का विधान किया। ऐसा सुंदर और शानदार मृतक-संस्कार इस गाँव में कभी नहीं हुआ। गाँव के सभी स्त्री पुरुष यहाँ तक कि गोद के बच्चे भी उसमें समिलित हुए थे। उसी समय से पाल उस मकान की एकमात्र मालकिन के पास मिलने के लिये जाने लगा। वह मातृ पितृ-विहीना बालिका अपने दुराचारी नौकरो के साथ अकेली रहा करती है। उसे सन्मार्ग बतलानेवाला कौन है? उसे उचित सलाह देनेवाला कौन है? यदि हम और आप उसकी सहायता नहीं करेंगे तो दूसरा कौन उसका सहायक हो सकता है?"

'तब दूसरी स्त्री ने पूछा—'तुम्हे इस बात में पक्का विश्वास है मरिया मेडालिना, कि जो कुछ तुम कह रही हो वह बिलकुल सत्य है? क्या तुम इतनी हिम्मत रखती हो कि बड़े पादरी के पास जाकर अपने पुत्र और उस स्त्री के विषय की ये बातें कह सको

और उन्हें प्रमाणित भी कर दो ? मान लो, यह सत्य न हुआ तो ?'

'हा, करुणानिधे ! हे प्रभो !'—कहते हुए माँ ने अपने मुँह को हाथों में ढक लिया। उसकी आँखों के सामने पाल और रमणी का एक धुँधला छाया चित्र नाचने लगा। पाल और उसकी प्रेमिका दोनों पुराने मकान के एक कमरे में बैठे दिखाई पड़े। यह कमरा बगीचे की ओर था और बहुत बड़ा था। कमरे की गुम्बजदार छत, संगमरमर के टुकड़ों से जड़ा हुआ चितकबरा चिकना फर्श, अग्निस्थान, दाहिनी ओर रखी हुई आरामकुर्सी सामने पड़ा हुआ पलँग चूने से पुती स्वच्छ दीवारें, उनपर टँगी हिरन की सींग की खूँटियाँ सभी चीजें एक एक करके उसकी आँखों के सामने आने लगीं। कमरे की दीवारों में जगह जगह हिरन की खालों के टुकड़े लटक रहे थे। अंधकार में केवल कभी कभी काले-काले हाथ, चेहरे का आकार और स्त्री के केशों की लटें या फल के गुच्छे जहाँ-तहाँ अस्पष्ट दिखाई पड़ जाते। दोनों व्यक्ति आग के सामने एक-दूसरे का हाथ पकड़े बैठे थे।

'हे भगवन्, यह क्या !'—माँ ने शोकपूर्ण स्वर में रोते हुए कहा।

इसके उपरांत उस भीषण चित्र को सामने से हटाने के लिये उसने आँखों के समक्ष दूसरे ढंग से चित्र खींचा। वही बड़ा कमरा था। पर इस बार वह हरिताभ ज्योति से जगमगा रहा था। प्रकाश मैदान की ओर लगी हुई बंद जँगले की खिड़कियों से और वाटिका की ओर के फाटक से होकर आ रहा था। ये

सब खुले पड़े थे। उनमेंसे होकर भीतरी दृश्य साफ-साफ दिखाई पड़ रहा था। माँ ने देखा कि वृक्ष और पत्तियों पर शरद्-कालीन ओस की बूँदें पड़ी हुई अब तक चमचमा रही हैं। वायु पृथ्वी पर गिरी हुई पत्तियों को उड़ाकर धीरे से आँगन के सामने रख आती है। वह लालटेन के भीतर जलनेवाले पीतल के दीपक की सिकड़ियाँ इधर-उधर हिल रही हैं। दूसरी ओर भी एक अधखुला दरवाजा दिखाई पड़ा। उसमेंसे उसने दूसरे कमरों को भी देख लिया। वे सब-के-सब काले काले थे और उनकी खिड़कियाँ बंद थीं। माँ को जान पड़ा कि मैं अपने पुत्र के भेजे हुए फलों को उपहार में भेंट करने के लिये खड़े-खड़े घर की मालकिन की बाट जोह रही हूँ। गृह-स्वामिनी शीघ्रता से पैर रखती हुई आती दिखाई पड़ी। वह सकुचा-सी रही थी। वह अँधेरे कमरे में से आ रही थी। उसका चेहरा पीला-पीला था। उसके अगल-बगल अलकें झूल रही थी। ज्यों ही उसके गौरवर्ण हाथ अंधकार में से निकले, जान पड़ा कि कोई चित्र में खिंची हुई रमणी सामने आ रही है।

जब वह एकदम समीप आकर प्रकाश में खड़ी हो गई, तब भी माँ उसके विषय में कुछ न जान सकी। सबसे पहले उसकी बड़ी बड़ी काली आँखें मेज पर रखे हुए फलों पर पड़ीं। फिर उसने प्रतीक्षा करती हुई माँ की ओर जिज्ञासा के भाव से देखा। उस प्रकार देखते हुए उसके ओठों पर घृणा, प्रसन्नता और गंभीर विचारों से मिश्रित एक हलकी मुसकुराहट भी दौड़ आई।

उस क्षण माँ यह बिलकुल न जान सकी कि यह पहले का सा अधविश्वास क्यों और कैसे मेरे हृदय में घुस आया।

वह इसका कोई कारण स्थिर न कर सकी। क्योंकि उस समय उसका ध्यान उस लड़की के व्यवहार की ओर खिंचा था। उसने उसे आतुरता के साथ अपनी बगल में बैठाकर पाल का कुशल-सवाद पूछा। उसने पाल का नाम ऐसी स्वाभाविकता से लिया, जैसे कोई बहिन अपने भाई का नाम लेती है। किंतु उसने माँ के साथ ऐसा व्यवहार नहीं किया, जिससे यह मालूम होता कि 'वही' उन दोनों की प्यारी माता हो। इसके विपरीत उसका व्यवहार माँ के साथ ठीक वैसा ही हुआ, जैसा व्यवहार किसी प्रतिद्वंद्वी के साथ-छलकपट और प्रवचना से पूर्ण होना चाहिए। उसने उसी समय माँ के सत्कार के लिये जलपान लाने की आज्ञा दी, मुख में रुमाल कसे एक दासी ने तुरत चाँदी के प्यालों में चाय लाकर रख दी। उसने बातों के प्रसग में अपने दो प्रवासी भाइयों की चर्चा चलाई। वे दोनों बड़े प्रभावशाली और सुदूरस्थित देश में निवास करते थे। उसने बीच में अपनी और अपने एकात वास की भी प्रशसा की। अत में वह माँ को अपने साथ अपनी वाटिका दिखाने ले गई।

गुलाबी रग के शुभ्र अजीर, बडे-बडे सेव, अगूरों के सुनहरे और सघन गुच्छे हरिताभ वृक्षों और लताओं में लटक रहे थे। जिसके पास स्वय इतने सुदर फल हैं, उसके पास उन फलों की भेंट भेजने की पाल को क्या आवश्यकता थी ?

अभी तक माँ सीढ़ी पर बैठे-बैठे दीपक के क्षीण प्रकाश में यही दृश्य देख रही थी। उसे बारबार उस बालिका की वह सुकुमार एवं व्यंग्यात्मक चितवन दिखाई दे रही थी, जिस चितवन से उसने माँ को विदा करते समय निहारा था। वह रमणी निगाह को नीचे कर मनोगत भावों को छिपाने का प्रयत्न बराबर कर रही थी। अपनी आँखों के स्पष्ट भाव को छिपाने के लिये उसके पास इसके अतिरिक्त और कोई उपयुक्त साधन ही नहीं था। उसकी वे आँखें और अपने हृदय को छिपाने का वह प्रयत्न भी पाल की प्रकृति की ही भाँति अनोखा था। आगे चलकर पाल के रंगढंग पर और उसकी प्रकृति के कारण माँ का संशय बराबर दृढ़ होता गया। उसके हृदय में एक भीषण भय समा गया। इतने पर भी वह पाल को पथ-भ्रष्ट करने और पाप के मार्ग में घसीटने वाली उस नवयुवती को घृणा की दृष्टि से नहीं देखती थी। वह बराबर यही सोचती रही कि उस कुमारी की भी किसी प्रकार रक्षा होनी चाहिए। इस कार्य के सपन्न करने में भी उसे वैसी ही प्रसन्नता का अनुभव होगा, जैसा उसे स्वयं अपनी लड़की के उद्धार का प्रयत्न करने में हो सकता था।

---

## २

जाड़े और पतझड़ के मौसिम इसी प्रकार व्यतीत हो गए। इस बीच कोई ऐसी घटना नहीं हुई, जो माँ के संशय को और दृढ करती। किंतु वर्षा में वायु के चलते ही शैतान ने अपना भीषण कार्य पुन आरभ कर दिया। पाल एक दिन फिर उसी पुराने मकान में गया।

'मैं क्या करूँ? मैं उसे बचाने के लिये क्या कर सकती हूँ?'

इस प्रश्न का उत्तर देने के बदले वायु ने अपने प्रचंड झोकों से मकान के किवाड़ों को खड़खड़ाकर माँ को उलटा चिढा दिया।

उसके हृदय में अपने प्रथम आगमन की स्मृति पुन जागरित हो उठी, जब यहाँ आते ही पाल पादरी नियुक्त हो गया था। बीस वर्ष तक नौकरी करते हुए भी उसने अनेक प्रलोभनों और आकर्षणों को ठुकराकर अपने को सासारिक जजालों से बचाया था। प्रेम तो क्या उसने रोटी तक की परवा नहीं की थी। किसलिये? केवल इसीलिये कि वह अपने प्यारे बच्चे पाल को सुचारु रूप से पाल पोसकर उसके सम्मुख सुदर उदाहरण उपस्थित कर सके। इसके बाद वे लोग इस स्थान पर आए। इसी प्रकार की वायु के

प्रचंड झोंकों ने उस समय भी उन्हें विचलित कर दिया था। उस समय भी बरसात का मौसिम था। पर उस समय ऐसा प्रतीत होता था, मानों सारी घाटी में शरद् ऋतु का साम्राज्य हो। चारों ओर पत्तियाँ बिखरी हुई थीं। पेड़ वायु के झोंकों से झुके हुए ऐसे जान पड़ते मानो चतुर्दिक क्षितिज के पास उमड़ते हुए श्याम मेघों की सेना देखकर एक-दूसरे की ओर भय से निहार रहे हों। उनकी अवस्था देखने से जान पड़ता, मानों ओलों की भीषण वर्षा ने मृदुल हरियाली को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया हो।

जहाँ सड़क घाटी की ओर से मुड़कर नदी की ओर गई थी, वहाँ वायु का ऐसा भीषण झोंका था कि घोड़े भी अस्थिरता में कान उठाए सहसा रुककर भय से काँपने लगते। आँधी का झोंका उनकी जीनों को इस प्रकार झकोर डालता, जैसे कोई डाकू सवारों को बलपूर्वक रोककर लूट लेने का प्रयत्न करता है। यद्यपि पाल उस समय साहसिकता का आनंद लूट रहा था, पर फिर भी व्यर्थ के संशय के कारण उसके मुँह से अकस्मात् निकल पड़ा—

'अवश्य ही यह पुराने पादरी की मृतात्मा है जो हमें यहाँ आने से रोकना चाहती है।'—उसके ये शब्द तीव्र वायु की सनसनाहट में विलीन हो गए। यद्यपि वह भय [illegible] से [illegible] उठी, किंतु उसकी यह एकाकी हँसी [illegible] स्पर्श करके रह गई। उसकी [illegible] लगीं, मानों उस हरी-भरी

पार कोई चित्र टँगा हो और उसी को पास एकाग्र दृष्टि से निरख रहा हो।

जब उन लोगों ने नदी पार कर ली, तो वायु का झोंका कुछ कम हो गया। गाँव के निवासी बड़े उत्साह से अपने नये पादरी का स्वागत करने को प्रस्तुत थे। वे ऐसे प्रसन्न दिखाई देते, मानों स्वयं उनके आराध्यदेव उनके गाँव में पदार्पण कर रहे हों। सभी ग्रामवासी गिर्जे के आँगन में एकत्र थे।

कुछ नवयुवकों का दल पाल और उसकी माँ का स्वागत करने नदी तट तक गया। जिस समय उनका दल घाटी से उतर-कर नदी के समीप पहुँचा उस समय ऐसा मालूम हो रहा था, मानों सुंदर हंसों का झुंड उतरा आ रहा हो। जिस समय वे लोग अपने गाँव के नये पादरी के पास पहुँचे उस समय हर्ष-ध्वनि से मिश्रित वायु के तुमुल रव से सारी घाटी गूँज उठी। चारों ओर सलामी में धड़ाधड़ बदूकें दग रही थीं। बदूकों की आवाज के साथ हवा भी अपनी स्वीकृति दे रही थी। आकाश भी धीरे-धीरे साफ होकर आदर का भाव प्रकट कर रहा था।

ऐसे दुःख और निराशापूर्ण भीषण समय में भी माँ अपने पाल के उस अतीत स्वागत का स्मरण कर गर्व से फूली नहीं समा रही थी। फिर उसे ऐसा जान पड़ा, मानों मैं किसी स्वप्न लोक में निवास कर रही हूँ। इसी समय उसे उन बालकों के झुंड का स्मरण आया। उसे जान पड़ा कि मैं मेघों के विमान पर बैठकर ऊपर चली जा रही हूँ। पाल भी मेरे साथ चल रहा है।

वह बच्चा था, तथापि उसके मुख पर एक दैवी ज्योति छिटक रही थी, जिसके सामने सभी नत-मस्तक हो जाते थे। धीरे-धीरे वे लोग ऊपर चढ़ गए। पहाड़ी की चोटी के सबसे ऊँचे भाग पर बंदूकें बड़े धड़ाके से छूट रहीं थीं। गगन के श्याम पटल पर बंदूकों से निकलती हुई लाल-लाल लपटें रक्तवर्ण छटों सी जान पड़तीं। इन छटों की ज्योति—धूलिधूसरित गाँव, हरी भरी पहाड़ी और मार्ग के दोनों ओर लगे हुए छोटे बड़े वृक्षों पर छिटकी हुई थी।

वे लोग और ऊपर उठ गए। गिर्जे के अलिंद के पीछे मनुष्यों का एक दूसरा झुंड विनम्रभाव से खड़ा था। कुछ लोग टोपियाँ पहने थे, कुछ स्त्रियों के सिरों पर मनोहर रूमाल बँधे थे और कुछ के मस्तकों पर अस्त व्यस्त केशों के गुच्छे अठखेलियाँ कर रहे थे। छोटे बालकों की आँखें प्रसन्नतामिश्रित आश्चर्य से नाच रही थीं। पहाड़ी के सिरे पर बंदूकें चलाते हुए बालक दूर से भूतों की छाया से जान पड़ते थे। गिर्जे के खुले दरवाजों से दीपक की झूमती हुई ज्योति वायु से खेलवाड़ कर रही थी। गिर्जे के घंटे बड़े जोर से बज रहे थे। पीले और रुपहले आकाश में मेघ गिर्जे के शिखर के चारों ओर एकत्र होकर मानों इस महान उत्सव की प्रतीक्षा कर रहे हों। इसी समय भीड़ में से बड़ी कर्कश ध्वनि हुई-'आ गए! वे आ गए! वे कितने साधु दिखाई पड़ते हैं ?'

एक अखंड शांति के अतिरिक्त उसमें साधुओं की-सी और कोई विशेष बात नहीं थी। वह कुछ बोला नहीं, उसने इस तुमुल हर्ष ध्वनि का भी कोई उत्तर नहीं दिया। उसकी मुद्रा से यह स्पष्ट

झलक रहा था कि वह ऐसे अवसर पर होनेवाले इस प्रकार के महोत्सव से विशेष प्रभावित नहीं हुआ। उसने केवल ओठों को कस कर दबा लिया और आँखें पृथ्वी की ओर झुका लीं, मानों वे अपनी सघन भौंहों के बोझ से दबी जा रही हों। जब सब लोग गिर्जे के आँगन में पहुँच गए और सैकड़ों मनुष्यों ने पाल को घेर लिया, तो माँ को सहसा दिखाई पड़ा कि वह काँप रहा है, शायद गिर पड़ेगा। कुछ मनुष्य उसे सँभालने का प्रयत्न कर रहे थे। जब वह होश में आया तो जल्दी से गिर्जे के भीतर घुस गया। वहाँ वह प्रार्थना स्थान के समक्ष घुटने टेककर स्तोत्र पढने लगा। रोती हुई स्त्रियाँ उसका साथ दे रही थीं।

बेचारी स्त्रियाँ रो तो रही थीं, किंतु उनके आँसू दुःख के नहीं—स्नेह और आशा के आँसू थे। आनद की यह एक दिव्य अभिलाषा थी। यद्यपि मा उस समय दुखी थी, पर उसके वक्षस्थल पर गिरते हुए आँसुओं की वे बूँदें चदन की सी शीतलता प्रदान कर रही थीं। उसी का पाल प्रेम, आशा और दिव्य आनद के अभिलाष की प्रतिमा था। उसी को इस समय शैतान खींचे लिए जा रहा था। वह सीढी पर उसी प्रकार बैठी रही, जिस प्रकार कोई कुएँ की तह में बैठा हो। उसने अपने पुत्र को बचाने का कोई उद्योग तक न किया।

उसे ऐसा जान पड़ा कि उसका गला रुँधता जा रहा है, हृदय पत्थर की भाँति भारी होता जा रहा है। वह सुख से साँस ले सकने के अभिप्राय से उठकर खड़ी हो गई और सीढियों पर चढ़कर दीपक

को उठा लिया। उसने एक बार अपने छोटे-से खाली कमरे के चारों ओर देखा। उसमें केवल एक लकड़ी का पलँग था और एक कीड़ों का खाया पुराना कोट लटक रहा था। दोनों बड़े यत्न से रखे थे, क्योंकि उस कमरे में इनके सिवा और तो कुछ था ही नहीं। यह कमरा केवल नौकरों के रहने योग्य था, और किसी काम का नहीं। उसने उसे कभी साफ करने और सजाने का यत्न तक नहीं किया। वह एक ही अमूल्य सपत्ति में मगन रहती। वह सपत्ति क्या थी ? यही कि वह पाल की माँ थी।

इसके उपरात वह सफेद दीवारों और पुराने पलँग के बीच से होकर पाल के कमरे में गई। किसी समय वह कमरा चित्रसाला की भाँति साफ सुथरा और सुव्यवस्थित रखा जाता था। क्योंकि पाल सजावट और सुव्यवस्था का प्रेमी था। खिड़की के सामने वाले टेबुल पर वह हमेशा फूलों के गुच्छे सजाए रहता। पर आगे चलकर वह इन बातों से उदासीन हो गया। उसे अब किसी वस्तु की चिंता न थी। उसके टेबुल की दराजें खुली पड़ी रहतीं पुस्तकें प्राय कुर्सी पर ही नहीं, वरन् जमीन पर भी बिखरी रहतीं

जिस जल से हाथ-मुँह धोकर वह बाहर गया था, उससे गुलाब की-सी बड़ी महक आ रही थी। जमीन पर लापरवाही से फेंका पड़ा था, मानों उसकी छाया किसीको दडवत कर रही हो इन चीजों ने उसे विचार-मग्नता से चैतन्य कर दिया। उसने आगे बढ़कर कोट उठा लिया और एक बार अभिमानपूर्वक सोचा कि इसी भाँति झटककर मैं अपने पुत्र को भी उठा सकती

हूँ। उसने कमरे की चीजों को उठाकर कायदे से रख दिया। इधर-से उधर जाते हुए उसके देहाती जूते चर्रमर्र कर रहे थे। पर जूतों के शब्द पर उसका ध्यान ही नहीं था। चमड़े की जिस कुर्सी पर बैठकर पाल पढ़ा करता था उसे वह मेज के पास तक खींचकर ले गई। वह उसे इस प्रकार थपथपाने लगी, माना उसे इस बात की आज्ञा दे रही हो कि तू अपने स्वामी की प्रतीक्षा करती रहो। इसके बाद वह खिड़की के पास टगे आईने की ओर घूमी।

पादरी के यहाँ आईने का होना निषिद्ध था। पादरी को यह भूल जाना चाहिए कि मैं भी शरीरधारी हूँ। कम-से कम इस बात को पुराना पादरी अवश्य मानता था, क्योंकि जब वह प्रात-काल हजामत बनाता तो सड़क पर से दिखाई पड़ता। उसने खिड़की के शीशे के पीछे काला कपड़ा लगाकर शीशे का काम निकाला था। किंतु पाल इसके विरुद्ध आईने पर मुग्ध था। वह आईना उसे उसी प्रकार पतन की ओर खींच रहा था, जैसे कुएँ में झाँकने से अपना ही चेहरा नाश करने के लिये खिल खिलाता हुआ जान पडता है। किंतु इस समय जो प्रतिबिंब उसमें दिखाई दे रहा था, वह माँ के ही क्रुद्ध मुख और घूरती आँखों की छाया थी। वह क्रोध के भीषण आवेश में दर्पण पर टूट पड़ी और उसे खूटियों में से उखाड़ लिया। इसके बाद उसने स्वच्छ वायु आने के लिये खिड़की खोली। हवा लगते ही मानों मेज पर पड़ी हुई पुस्तकों और पत्रों में जीवन आ गया। वे उड़कर

चारों ओर छितराने लगे। पलँग पोश लहरें मारने लगा, की ज्योति झुकने झुकने हो गई।

उसने पुस्तकों और कागजों को एकत्र करके मेज पर दिया। इसके बाद वह खुली हुई बाइबिल की पोथी की ओर दे लगी। खुली हुई पोथी में सामने एक चित्र दिखाई दे रहा था उसके आराध्यदेव ईसा मसीह भेड़ों को नहला रहे थे। इस को वह बहुत प्यार करती थी। वह झुककर उसे और अच्छ तरह देखने लगी। अस्ताचलगामी भगवान् भास्कर के स्वर्ण प्रकाश में सुदूर नील गगन के समीप वृक्षों के बीच एक नगरी दिखाई दे रही थी—एक पवित्र पुरी, मुक्तिकी दिव्य नगरी।

कभी वह रात्रि में बड़ी देर तक बाइबिल का अध्ययन किया करता था। पहाड़ों के ऊपर से आकाश के तारे उसकी खिड़की में झाँका करते। बुलबुल अपना सुमधुर और कोमल संगीत सुनाया करता। गाँव में आने के बाद एक वर्ष तक वह उस दिव्यलोक मे पहुँचने की इच्छा प्रगट करता रहा। फिर वह पहाड़ी की छाया और पेड़ों की सनसनाहट में चेतना पूर्ण निद्रा में सोने लगा। इस प्रकार सात वर्ष बीत गए, पर उसकी माँ ने कभी दूसरी जगह जाने का प्रस्ताव नहीं किया। इस छोटे से गाँव को ही वह संसार में सबसे सुंदर स्थान समझती थी। क्योंकि उसका पाल ही इस स्थान का रक्षक और शासक था।

उसने खिड़की बंद कर दी। आईने को उसी स्थान पर फिर लगा दिया। उसे शीशे म दिखाई पड़ा कि मेरा मुँह सफेद पड़

या है और आँखें आँसुओं से धुँधली हो गई हैं। वह अपने न में फिर सोचने लगी कि मैं भूल तो नहीं रही हूँ। वह पीछे फिर र दीवार पर टँगे क्रॉस को देखने का प्रयत्न करने लगी। उसने ीपक को अपने सिर से ऊँचे कर लिया, जिससे क्रॉस को अच्छी रह देख सके। दीवार पर पडती हुई अपनी छाया को देखकर से जान पड़ा, मानों नग्न और क्षीणकाय ईसा क्रॉस पर लटके ुए हैं। उनका ध्यान हम लोगों की प्रार्थना की ओर लगा है। ब आँसुओं की बड़ी-बड़ी बूँदें उसकी आँखो मे न समा सकीं ो वे उसके वस्त्रों पर चू पड़ीं। वे अश्रु रक्त की भाँति भारी ान पडे।

'दयामय, हम सबकी रक्षा करो! मेरी रक्षा करो, मेरी सी ीन-दुखिया की रक्षा करो! आप पीले और रक्तहीन होकर क्रॉस र लटक रहे हैं। काँटों के मुकुट के नीचे आपका मुख जगली ुलाब की भाँति सुहावना जान पड़ता है। आप ही इस सासा-रिक मोह माया से परे हैं। दयानिधे, हम सबकी रक्षा करो! ाहि माम्!'

इसके पश्चात् वह शीघ्रता से कमरे के बाहर आई और सीढियों से नीचे उतरी। छोटे से रसोई घर से होकर जाते समय ऊँघती हुई मक्खियाँ दीपक के प्रकाश से भनभना उठीं। बाहर होनेवाली वायु की सनसनाहट और पेड़ों की हरहराहट रसोई-घर की खिड़की पर लगकर ऐसा शब्द करतीं, मानों जल बरस रहा हो। वह आग के सामने बैठ गई। उसने थोड़े-से कोयले

आग पर रख दिए, जिससे आग धीरे धीरे रात भर सुलगती रहे। उस घर में भी वायु प्रबल झोकों के साथ प्रवेश कर रही थी। … पाटन समथल नहीं थी। वह धुएँ से भर गई थी, धरनें काली गई थीं। उसे ऐसा जान पड़ा, मानों मैं किसी ऐसे जहाज पर … हुई हूँ जो शीघ्र ही तूफान में पडकर किसी चट्टान से टकरा जाना चाहता है। यद्यपि उसने यह निश्चय कर लिया था कि पुत्र आने तक यहीं बैठी रहूँगी और उसके आते ही युद्ध छेड दूँगी पर फिर भी वह अपने विचारों से झगडकर अपने हृदय को समझाने का प्रयत्न करने लगी कि मैं गलती पर हूँ।

उसे यह अनुचित जान पड़ा कि ईश्वर मुझे इस प्रकार के दुःख दिया करते हैं। वह धीरे धीरे अपने जीवन के पुराने ढर्रे पर फिर चली गई। वह हमेशा अपना दुःख दूर करने के उपाय ढूँढा करती थी। किंतु उसके दुःखमय दिन उसकी काँपती अँगुलियों पर स्थित माला के दानों की भाँति एकतार खिसकते चले जाते थे। उनमें कोई अवर नहीं पड़ता था। वह दुःख का कोई काम स्वय कभी नहीं करती थी, पर कभी-कभी अपनी विचार धारा में दुःख की नौका का आवाहन अवश्य कर लिया करती थी।

उसे ऐसा जान पड़ने लगा, मानों वह इस समय उसी स्थान में हो जहाँ पहले वह मातृ पितृ विहीन अवस्था में अनाथों की तरह रहा करती थी। सभी उसका अनादर करते थे। वह नगे पैर घूमा करती थी। सिर पर भारी बोझ ढोती, नदी में कपड़े धोती और मिल में अनाज ले जाती। अवस्था में उससे बड़ा उसका

क सनधी मिल में उसके पास नीचे जाया करता। यदि उसे अकेला पाता तो उसके पीछे पीछे लोगों की निगाह बचाता हुआ घनी झाड़ियों तक चला जाता और बरबस उसके कोमल कपोलों को चूम लेता। आटे से भरी डाढी का आटा उसके कपोलों पर आ लगता। जब वह घर आकर यह बात स्त्रियों से कहती तो वे उसे मिल में जाने से रोकतीं। वह मनुष्य गाँव में कभी नहीं आता था। परंतु एक दिन अकस्मात् वह उसके घर चला आया। वहाँ आ कर उसने इससे विवाह करने की इच्छा प्रकट की। घर के और लोग उसके प्रस्ताव पर हँस पड़े। कुछ लोगों ने उसकी पीठ पर थपकियाँ दीं, उसके कोट में लगा हुआ आटा झाड़कर समझा दिया। किंतु, उसे उनके मजाकों की परवाह न थी, उसकी आँखे इस बालिका पर लग गई थीं। अत में उसने विवाह करना स्वीकार कर लिया। किंतु विवाह के बाद भी यह अपने घर ही पर रहा करती। मिल में रोज अपने पति को देखने जाती। वह चुपचाप अपने मालिक की आँख बचाकर इसे थोड़ा सा आटा दे दिया करता था। एक दिन जब वह आटा लिए जा रही थी तो उसे ऐसा मालूम हुआ, मानों पेट के पास कोई चीज रेंग रही हो। उसने चौंककर आटा जमीन पर फेंक दिया। आटा इधर-उधर बिखर गया। उसे चक्कर सा आ गया और वह पृथ्वी पर बैठ गई। उसने सोचा शायद भूकप के कारण ऐसा हुआ होगा। उसके सामने के मकान चक्कर काट रहे थे, सड़क ऊपर नीचे हो रही थी। वह घबड़कर उसी बिखरे आटे पर लेट गई। जब उसकी तबियत

कुछ ठिकाने हुई तो वह हँसती हुई घर को दौड़ गई। क्योंकि वह समझ गई कि मेरे पेट में बच्चा है।

पाल के कुछ सयाने होने और बोल सकने के पूर्व ही वो विधवा हो गई। उसका प्यारा बच्चा उसके साथ साथ सब जगह आता जाता। यह अपने पति के लिये इस प्रकार शोक प्रकट कर रही थी, मानों वह बड़ा भला और उस पर दयालु रहा हो। शोक अधिक वह और कुछ न करती। उसकी दशा शीघ्र ही पूर्ववत् हो गई। उसके एक चचेरे भाई ने उसे यह सलाह दी कि हम दोनों 'भाई-बहिन' शहर में चलकर नौकरी कर लें।

'इस प्रकार तुम भली भाँति अपने बच्चे का पालन-पोषण कर सकोगी और बाद में उसे स्कूल भेजकर इच्छानुसार शिक्षा भी दिला सकोगी।'

इस प्रकार उसने अपने बच्चे के लिये नौकरी की, अपने को जीवित रखा।

यद्यपि वह कभी पाप पंक में लिप्त नहीं हुई, पर वह कभी आमोद प्रमोद के अवसरों से भी विमुख नहीं हुई। मालिक के नौकरों ने, किसानों ने और नागरिकों ने सबने उसे उसी प्रकार फँसाने का, बलपूर्वक उड़ा ले जाने का प्रयत्न किया, जिस प्रकार उस दिवंगत पति ने किया था। मनुष्य अहेरी है और रमणी उसका एक सुकुमार आखेट। पर वह सदैव जालों से बचकर अपने अमूल्य सतीत्व-रत्न की रक्षा कर सकने में कृत कार्य होती रही। वह अपने को एक पादरी की जननी समझने में एक अमूल्य गौरव का अनुभव

करती। इसीलिए वह इन प्रसंगों पर कह उठती—'हे भगवन'! इतना कहते ही वह अपना सिर झुका लेती। उसकी आँखों से आँसुओं की बड़ी-बड़ी बूँदें निकलकर उसकी गोद में पड़ी हुई माला पर चू पड़तीं।

धीरे धीरे वह ऊँघने लगी। उसकी अस्पष्ट पूर्वस्मृतियाँ उसके मस्तिष्क में घूमने लगीं। उसके हृदय में उस रसोई घर की स्मृति जाग उठी, जहाँ वह दस वर्ष तक नौकर रह चुकी थी और जहाँ रहकर वह अपने पाल को स्कूल में भरती कराने में समर्थ हुई थी। उसकी आँखों के समक्ष मकान के बाहर सड़क पर स्वच्छंदता से विहार करनेवाले उन बालकों की मूर्तियाँ नाचने लगीं। उनका हँसना, उनका किलोल करना भी उसे सुनाई पड़ने लगा। वह हार मानकर मरणोन्मुख व्यक्ति सी उदास हो गई और अंधकार से आच्छादित मैदान की ओर की खुली खिड़की में जा बैठी। उसकी गोद में एक अँगौछा पड़ा था। वह काम करने के लिये इतनी थकी थी कि अपनी अँगुली भी नहीं हिला सकती थी। वह स्वप्न में भी पाल की ही प्रतीक्षा कर रही थी। क्योंकि वह चुपचाप बिना कुछ बतलाए ही रसोई घर से न जाने कहाँ खिसक गया था।

'यदि वे लोग जान जायँगे तो उसे तुरत निकाल बाहर करेंगे।'—वह सोचने लगी। वह तब तक उसके आने की प्रतीक्षा करती रही, जब तक घर में भरपूर सन्नाटा नहीं छा गया। जिससे वह चुपचाप घर में आ जाय, कोई इस बात को जानने न पावे।

एकाएक उसकी आँखें खुल गईं। उसने देखा कि मैं घर में बैठी हूँ और वायु के थपेड़े घर को तूफान में फँसे जह की भाँति हिलाए दे रहे हैं। स्वप्न की भावना अत्यत थी। उसे अब तक जान पड़ रहा था कि पहले की ही व बाहर सड़क पर लड़के शोर मचा रहे हैं, एक दूसरे से ... रहे हैं। पर अत में सत्य ने फिर उसपर प्रकाश डाला। व सजग होकर सोचने लगी कि मैं गहरी नींद में सो गई थी, ... लिये पाल मेरी नजर बचाकर इस बीच अवश्य मकान में ... होगा। हवा के भीषण झोकों और खडखडाहट में उसे स ... मकान के भीतर किसी के चलने की-सी आहट जान पड़ने लगी। जान पड़ा कि कोई नीचे की सीढियों से चढकर कमरे में आया और वहाँ से रसोई घर की ओर जा रहा है। उसने सोचा कि शायद मैं अभी तक स्वप्न ही देख रही हूँ। पर उसने देखा कि सामने दाढी बढ़ाए एक नाटा पादरी मेरी ओर देखकर मुसकुरा रहा है। उसके जो थोड़े से दाँत टूटने से बच गए थे, वे अत्यधिक धूम्रपान करने से काले पड़ गए थे। यद्यपि उसकी आँखें भयानकी-सी लग रही थीं, पर वह वास्तव में हँस रहा था। उसे स्मरण हो आया कि यह वही पुराना पादरी है। पर फिर भी वह डरी नहीं।

'यह केवल स्वप्न है।'—उसने अपने मन में कहा। पर वह भली भाँति जानती थी कि मैंने वस्तुत यह बात अपने भय का आवेग कम करने के लिए कही है। यह स्वप्न नहीं है, सत्य घटना है।

'बैठ जाओ।'—इतना कहकर उसने आग के सामने से अपनी तिपाई खिसकाकर उसके आने के लिये रास्ता छोड़ दिया। वह आग के सामने बैठ गया और अपना कोट इस प्रकार ऊँचा कर लिया जिससे उसके मटमैले नीले मोजे दिखाई पड़ने लगे।

'तुम यहाँ खाली बैठी हो मेरिया महालिना, जरा मेरे मोजे ही ठीक कर दो, क्योंकि मेरी चीजों की देख-भाल करनेवाली कोई स्त्री नहीं है।' उसने यह बात स्वाभाविक भाव से प्रेरित होकर कही। माँ अपने मन में सोचने लगी—'क्या यह वही भयानक पादरी है? जान पड़ता है, मैं अब तक स्वप्न ही देख रही हूँ।'

तब तो वह इस बात का प्रयत्न करने लगी कि वह अपना रहस्य प्रगट कर दे। उसने कहा—'यदि तुम मृतात्मा हो तो तुम्हें मोजों से क्या प्रयोजन।'

'तुम कैसे जानती हो कि मैं मृत हूँ? मैं तो अच्छी तरह से जीता-जागता तुम्हारे सामने बैठा हूँ। बहुत शीघ्र मैं तुम्हें और तुम्हारे पुत्र को यहाँ से निकाल बाहर करूँगा। तुम्हारा यहाँ आना बुरा हुआ। अच्छा होता कि तुम अपने पुत्र को उसके पिता का ही व्यवसाय सिखलातीं। पर नहीं, तुम एक उच्चाभिलाषिणी रमणी हो। जिस स्थान पर तुम एक दिन परिचारिका का काम करती थीं, वहीं पर तुम स्वामिनी बनकर रहना चाहती हो। तुम्हें मालूम हो जायगा कि तुमने इससे क्या लाभ उठाया।'

'परब्रह्म परमेश्वर ने हमें इस संसार में आनद करने के लिए भेजा है। यदि हम उस आनद का अर्थ उलटा ही बैठते हैं तो वह हमें दड देने के लिए दुःखों की रचना करता है। ऐ मूर्ख रमणी! वास्तविक बात यही है। ईश्वर ने इस ससार अपना सारा सौंदर्य देकर बनाया है। उसने इसका आनद ही के लिए इसे मनुष्य के हाथों सौंपा है। यदि मनुष्य आनद को नहीं समझ सकता, तो यह उसीके लिये बुरा है। मुझे यह सब कहने सुनने की आवश्यकता नहीं। मैं तुम्हें यहाँ आनद का रहस्य समझाने नहीं आया हूँ। मेरे कहने का सारा प्रयोजन यह है कि तुम और तुम्हारा पुत्र पाल दोनों शीघ्र ही यहाँ से निकल जायँ। यदि तुम लोग यहाँ ठहराना चाहोगे तो तुम्हारे हक मे बहुत बुरा होगा।'

'हम लोग चले जायँगे, घबड़ाने की कोई आवश्यकता नहीं। हम लोग बहुत शीघ्र चले जायँगे। मैं तुमसे इसकी प्रतिज्ञा कर सकती हूँ, क्योंकि मेरी भी यही इच्छा है।'

'तुम मुझसे ऐसा केवल इसीलिए कह रही हो कि तुम मुझ से डरती हो। पर मुझसे डरना तुम्हारी भूल है। मैंने ही तुम्हारे पैरों को जकड़ दिया था, मैंने ही दीवार पर सलाइयों को नहीं जलने दिया था, सभवत. यह मेरा ही काम था। पर इससे यह मत समझो कि मैं तुम्हे या तुम्हारे पाल को किसी प्रकार की हानि पहुँचाना चाहता हूँ। मैं केवल यही चाहता हूँ कि तुम लोग यहाँ से चले जाओ। इतना स्मरण रखना कि यदि तुम अपने वचन

। हटोगे तो तुम्हें इसके लिए पछताना होगा । अस्तु, मैं तुमसे फिर मिलूँगा। तुम्हें इस वार्तालाप का स्मरण दिलाता रहूँगा। तब तक मैं अपने मोजे मरम्मत करने के लिए तुम्हारे पास छोड़े जाता हूँ।'

'अच्छा, मैं उनकी मरम्मत कर दूँगी।'

'तो अपनी आँखें बद कर लो, क्योंकि मैं नहीं चाहता कि तुम मेरे नगे पैर देख लो। हा हा!'—वह खिलखिलाकर हँस पड़ा। उसने पैर के पजे से जूता उतार दिया और झुककर मोजे उतारने लगा—'आज तक लोगों ने मुझे बदनाम करने की बहुत चेष्टाएँ की हैं, पर किसी स्त्री ने मेरा नगा शरीर कभी नहीं देखा। तुम्हीं सबसे पहले मेरा नगा शरीर देख रही हो, और तुम भी ऐसी, जो अत्यत वृद्धा और कुरूप हो। लो एक यह है और दूसरा यह। मैं शीघ्र ही आकर इन्हें ले जाऊँगा।'

उसने चकपकाकर आँखें खोल दीं। वह फिर रसोई-घर में अकेली हो गई। चारों ओर सनसनाती हवा फिर सुनाई पड़ने लगी।

'हे प्रभो, यह कैसा स्वप्न!'—वह एक लबी साँस खींच कर बड़बड़ा उठी। फिर भी ज्यों-त्यों वह मोजों को उठाने के लिये झुककर इधर उधर देखने लगी। उसे जान पड़ा कि भूत के धीरे-धीरे जाने की आहट आ रही है। प्रेत रसोई घर से निकलकर बद दरवाजे से होता हुआ बाहर जाकर अतर्धान हो गया।

---

## ३

जब पाल उस स्त्री के मकान से बाहर निकलकर मैदान में आया तो उसे ऐसा मालूम हुआ, मानो तेज हवा में कोई जीवित व्यक्ति हो। शायद भूत की ऐसी कोई चीज थी। उसका वर्णन कर सकना कठिन था। वायु ने उसे घेर लिया। पाल प्रणय के स्वप्न देखता चला जा रहा था। वायु उसे इधर-उधर ढकेलती और अपनी शीतलता से उसे कँपा देती। जब वायु के द्वारा उसका कोट फड़फड़ाता हुआ शरीर से चिपट जाता, तो उसे जान पड़ता मानो कोई सुंदरी प्रेमोन्मेष में उसे आलिंगन कर रही हो।

जब वह गिर्जे के पासवाले मोड़ से घूमने लगा तो हवा के झोंके ने उसे क्षणभर के लिए रुक जाने को बाध्य कर दिया। वह रुक गया। एक हाथ से हैट पकड़ ली और दूसरे हाथ से कोट के छोरों को समेट लिया। उसकी साँस मानो रुक सी गई हो। उसे वैसा ही चक्कर आने लगा, जैसा एक दिन उसकी नवयुवती माँ को मिल से आते समय आया था।

उसमें एक प्रकार की स्फूर्ति आ गई। उसे जान पड़ा कि कोई बड़ी और भयानक वस्तु मेरे भीतर समा गई है। उसे आज

थम बार इसका साफ-साफ और निश्चित अनुभव हुआ कि मैं
गनेस के साथ भौतिक प्रेम करता हूँ और इसी प्रेम का मुझे
र्व है।

अभी कुछ घटे पूर्व वह इस भ्रम में था कि मेरा और मेरी
मिका का प्रेम विशुद्ध है, दिव्य है। पर उसे यह स्वीकार था
कि उसी ने मेरे ऊपर अपने प्रणय कटाक्ष चलाए हैं, और अपने
प्रथम मिलन में ही अपनी एक नजर से मुझे प्रेम करने के
लिये उत्साहित किया और प्रेम पर विजय भी प्राप्त कर ली।

आँखों के मिलने के पश्चात् उन दोनों के हाथ एक दूसरे के
हाथों से जा मिले और दोनों ने एक दूसरे का चुम्बन लिया। उसका
जो रक्त वर्षों से ठढा पड़ गया था, फिर तेजी से नसों में दौड़ने
लगा। खून गर्म हो गया था और द्रवीभूत अग्नि की भाँति बह
रहा था, उसका कोमल मास उससे युद्ध और विजय- की तैयारी
करने में सलग्न हो गया।

उस रमणी ने प्रस्ताव किया था कि हम लोग चुपचाप गाँव
से निकल चलें और जहाँ कहीं भी रहें, साथ रहें, मरते समय भी
साथ ही मरें। उस मादक अवसर ने उसे तुरत इसके लिये सहमत
कर दिया था। तदनुसार निश्चय हुआ था कि अगली रात्रि में हम
लोग अपना भावी कार्यक्रम ठीक करने के लिये मिलेंगे। किंतु
अब! अब तो बाह्य जगत् की सत्यता और उसे नग्न करने में
प्रयत्नशील वायु दोनों ने आत्म प्रवचना का पर्दा फाड़ डाला।
उसकी साँस रुक गई। वह गिर्जे के द्वार पर खड़ा था, सारा

शरीर बर्फ सा ठंढा हो गया था। उसे ऐसा जान पड़ रहा था, मानो मैं गाँव में एकदम नग्न खड़ा हूँ और थके हुए निर्धन ग्रामवासी गहरी नींद ले रहे हैं। वे मुझे स्वप्न में नग्न देख रहे हैं। मेरा सारा शरीर पाप के घोर कलंक से काला पड़ गया है।

इतने पर भी वह अभी यही सोच रहा था कि मैं उस स्त्री के साथ किस प्रकार भाग सकता हूँ। उसने उससे कह रखा था कि मेरे पास पर्याप्त धन है। एकाएक उसके मन में लौट चलने के विचार उठ उठकर उसे विवश करने लगे। ऐसा विचार आते ही वह दीवार से दो-चार कदम पीछे हट गया। ठीक वहीं, जहाँ से होकर उसकी माँ कुछ समय पूर्व गई थी और थोड़ी देर बाद हताश होकर लौट आई थी। उसी गिर्जे के द्वार के सामने, उसी स्थान पर वह भी घुटने टेककर बैठ गया, वहीं जहाँ माँ घुटने टेककर कह रही थी—'हा, ईश्वर! रक्षा करो।'

उसकी अंतरात्मा उससे युद्ध करने लगी—बड़े भीषण वेग से। उसका वेग पहाड़ी पर सन सनानेवाली वायु की अपेक्षा कहीं अधिक था। वह युद्ध शरीरधारी के अघ विचारों और शैतान के बीच छिड़ा हुआ था।

कुछ ही क्षणों के उपरांत वह सहसा खड़ा हो गया। उसे यह ज्ञान नहीं था कि दोनों में-से किसकी विजय हुई। पर अब उसका मस्तिष्क निर्मल हो गया था। वह अपनी प्रकृति की विचार धारा को पहचानने लगा। उसने भली भाँति पहिचान लिया कि जो वस्तु उसके ऊपर भगवत्प्रेम से भी अधिक, मुक्ति की अभि

तापा से भी बढ़कर और पातक के प्रति घृणा से भी विशेष शासन कर रही है वह और कुछ नहीं, केवल शाघ्र ही होनेवाले अपवाद का नग्न स्वरूप और भय है।

हृदय के उस निर्दयतापूर्ण निरीक्षण ने उसके इस विचार को पर्याप्त प्रोत्साहन दिया। अब भी वह मोक्ष की आशा कर सकता था। किंतु वह जानता था कि मेरा जीवन उस रमणी हृदय के अतरतर से बँधा है। उसकी मनोहर मूर्ति घर पर भी सदैव मेरे साथ रहेगी। मैं दिनभर उसके साथ आनद पूर्वक विचरण किया करूँगा। रात्रि में उसके सघन, काले एव लवे केशों के निमुक्त जाल में फँसकर सुख मय निद्रा की उपासना करूँगा। उसके दु ख और सताप से पूर्ण हृदय की भीतरी तह में आनद का वैसा ही प्रकाश चमक उठा, जैसा पृथ्वी के अदर प्रज्वलित भीषण अग्नि से होता है।

उसने लौटकर मकान का द्वार खोला। रसोई घर मे जलते हुए दीपक के प्रकाश की एक क्षीण रेखा बाहर फाटक के पासवाले बड़े कमरे तक पड़ रही थी। उसने देखा कि माँ बुझी हुई राख के समीप बैठी है, मानो किसीके शव के पास बैठी हो, दुःख में मग्न हो—ऐसे दु ख में जो उसे कभी नहीं छोड़ता। पाल तत्काल सब बातें समझ गया।

प्रकाश की रेखा का अनुसरण करते हुए वह भोजना लय को पार कर गया। किंतु द्वार पर पहुँचते ही वह क्षण भर के लिए रुक गया, उसने अपने हाथ इस प्रकार फैला

दिये, मानो अपने को गिर पड़ने से बचाने का प्रयत्न कर रहा हो।

'तुम अब तक सोने क्यों नहीं गई ?'—उसने रुखाई से पूछा।

माँ मुड़कर उसकी ओर देखने लगी। स्वप्न से मुरझाया हुआ चेहरा अब तक मृतकों की तरह पीला हो रहा था। फिर भी वह दृढ़ और शांत थी। उसकी आँखें ज्यों ही पाल की आँखों से मिलीं, त्यों ही पाल अपनी दृष्टि छिपाने का प्रयत्न करने लगा।

'मैं तुम्हारी राह देख रही थी, पाल ! तुम कहाँ थे ?'

वह समझ गया कि मिथ्या बोलना एक व्यर्थ का आडंबर होगा। फिर भी वह झूठ बोलने को बाध्य था। उसने शीघ्रता से उत्तर दिया—

'मैं एक रोगी के यहाँ गया था।'

क्षणभर के लिए माँ का दुःस्वप्न दूर हो गया—केवल एक क्षण के लिए। उसका मुख प्रसन्नता से खिल उठा। पर कुछ ही क्षणों में उसी अंधकार-मयी छाया ने फिर उसके मुख और साथ ही हृदय को घेर लिया।

'पाल !'—उसने नम्रतापूर्वक कहा। उसकी आँखें लज्जा से नीचे झुक गई थीं पर बोलने में लेशमात्र भी हिचकिचाहट नहीं थी।—'यहाँ आओ। तुमसे कुछ कहना है।'

यद्यपि पाल उसके निकट नहीं गया, फिर भी वह बहुत धीरे से बोली, मानो उसके कान में सटकर कुछ कह रही हो—

'मैं जानती हूँ कि तुम कहाँ थे। मैंने बहुधा तुम्हारे बाहर जाने की बात सुनी है। आज तो मैंने स्वयं तुम्हारा पीछा किया

और देख लिया कि तुम कहाँ जाया करते हो। पाल, जरा सोचो तो! तुम क्या कर रहे हो?'

उसने कोई उत्तर नहीं दिया, मानो उसने सुना ही न हो। माँ ने सिर ऊपर उठाया और उठ खड़ी हुई। वह मृतक के समान पीली पड़ गई थी। दीपक के कारण उसकी जो प्रशांत छाया दीवार पर पड़ रही थी, वह ऐसी जान पड़ती, मानो उसे किसीने दीवार में कीलों से जड़ दिया हो और वह अपने पुत्र के लिए चिल्ला रही हो, उसकी निर्दोषता के लिये झगड़ रही हो।

पाल खड़ा खड़ा उस भावना का स्मरण कर रहा था, जो गिर्जा घर के सामने उसके हृदय में उठी थी। मानो अब जगदीश्वर ने उसकी पुकार सुन ली हो और उसकी माँ को ही उसके त्राण के लिए भेज दिया हो। उसके हृदय में आया कि माँ के चरणों पर लेट जाऊँ और प्रार्थना करूँ कि मुझे गाँव से बाहर जाने का मार्ग शीघ्र बता दो। पर उसका सारा शरीर क्रोध और अपमान से थर-थर काँप रहा था—अपमान अपनी दुर्बलता के प्रकट हो जाने से था और क्रोध माँ के पीछा करने और उसपर चौकसी रखने के कारण। उसे इस बात का खेद हो रहा था कि मैं ही माँ के कष्ट का मूल कारण हूँ। इसी समय सहसा उसे स्मरण आया कि मुझे केवल अपनी ही नहीं, एक दूसरे व्यक्ति की भी रक्षा करनी है।

'माँ!'—कहते हुए उसने निकट जाकर उसके सिर पर अपना हाथ रख दिया और कहा—'मैंने कहा न, कि मैं एक रोगी के यहाँ गया था।'

'उस मकान में तो कोई भी बीमार नहीं है।'

'सभी रोगी बिस्तरे पर ही नहीं पड़े रहते।'

'तब तो जिस स्त्री के यहाँ तुम गए थे उससे कहीं अधिक तुम बीमार हो। तुम्हें अपनी ही दवा करनी चाहिए। पाल, मैं ए अबोध नारी हूँ, पर हूँ तो तुम्हारी माँ! देखो, पाप सभी बीम रियों से बुरा है, क्योंकि यह आत्मा पर चोट करता है। इस अतिरिक्त . !' इतना कहते कहते उसने पाल का हाथ पकड़कर उ खींच लिया, जिससे वह भली भाँति सुन सके—'तुम्हें केव अपनी ही रक्षा नहीं करनी है। बेटा, याद रखो कि तुम्हें उ युवती की आत्मा नष्ट नहीं करनी चाहिए। उसके जीवन को कोई हानि नहीं पहुँचानी चाहिए।'

अभी तक पाल झुका खड़ा था, पर इन शब्दों के सुनने के साथ ही वह लोहे की कमानी की भाँति झटके से तनकर खड़ा हो गया। माँ की बात उसके हृदय के अन्तरतर तक पहुँच गई। वस्तुत यह बात सत्य थी। जब से उसने उस स्त्री से प्रेम किया, तब से उसने अपने ही विषय में सोचा था, उसके विषय में नहीं।

उसने चाहा कि माँ के ठंढे और कड़े हाथ से अपनी कलाई छुड़ा लूँ। पर, माँ उसे मजबूती से पकड़े थी। इतनी मजबूती से कि उसे जान पड़ा, मानो मैं गिरफ्तार हो गया हूँ और जेल में भेजा जा रहा हूँ। उसकी विचार शृंखला फिर परमात्मा की ओर मुड़ी—'जगदीश ने ही मुझे कैद किया है, इसलिए चुपचाप जेल चला जाना चाहिए।' फिर भी उसमें विद्रोह की भावना जाग उठी।

उसकी अवस्था उस समय उस कैदी की-सी थी, जो अपराध सिद्ध हो जाने पर हताश हो जाता है और छूटकर निकल भागने का कोई रास्ता नहीं पाता।

'मुझे छोड दो।'—उसने जोर से हाथ खींचते हुए रुखाई से कहा—'अब मैं बच्चा नहीं हूँ। अब मैं अपना भला बुरा भली भाँति समझता हूँ।'

माँ को ऐसा प्रतीत होने लगा, मानो वह पत्थर की हो गई हो, क्योंकि अब तो पाल ने अपना दोष करीब-करीब स्वीकार ही कर लिया था।

'नहीं पाल, तुम अपने किए अपराध पर ध्यान नहीं दे रहे हो। यदि तुम उसपर ध्यान देते तो इस प्रकार न बोलते।'

'तो मैं किस प्रकार बोलूँ ?'

'तुम्हे इस प्रकार डींकना नहीं था। तुम मुझे धीरे से समझा देते कि मेरे और उस स्त्री के सबध में कोई ऐसी बात नहीं है। किंतु जिस बात को तुम छिपाना चाहते हो वह सही है। क्योंकि तुम जानते बूझते उसे कभी नहीं कह सकते। अच्छा हो कि अब तुम कुछ मत कहो—कुछ भी नहीं। मैं भी तुमसे कुछ नहीं पूछती। पर सोचो तो पाल, तुम्हारी क्या दशा है ?'

पाल ने कुछ भी उत्तर नहीं दिया। वह धीरे से माँ के पास से हटकर रसोई घर के बीचो-बीच खड़ा हो गया और उसकी बातें सुनने की प्रतीक्षा करने लगा।

'पाल, मुझे अब तुमसे कुछ नहीं कहना है, अधिक कहने

## ४

इसके उपरात वह कुछ शात होकर पुन विचार करने लगा जिस प्रकार एक रोगी अपनी बीमारी का हाल जानकर कुछ शाति लाभ करता है, उसी प्रकार यदि पाल भी यह जान जाता कि मैं इन आपत्तियों में क्यों पड़ा, तो वह भी शाति का अनुभव करता। वह भी अपनी माँ की तरह अपने जीवन की अतीत कहानी का स्मरण करने लगा।

घर के बाहर वायु के शब्द में उसके जीवन की धुँधली और अस्पष्ट स्मृतियाँ मिली जान पड़ती थीं। उसने देखा कि मैं किसी आँगन में खड़ा हूँ—पर कहाँ, उसे यह मालूम नहीं पड़ा, शायद उसी मकान के आँगन में जहाँ उसकी माँ नौकरी करती थी और वह बालकों के साथ दीवार पर चढा करता था। दीवार के ऊपरी हिस्से में काँच और टीन के नुकीले टुकडे गडे थे, यद्यपि उनसे हाथ कट जाते, पर फिर भी उनको दीवार पर चढने और ऊपर से झाँकने से रोकने के लिए वे व्यर्थ थे। अपने हाथों के फटने की किसी को परवा नहीं थी। बात यह थी कि हाथ के फटने पर भी दुस्साहस का एक अद्भुत आनंद आया करता था। वे अपने घायल हाथों को बड़ी प्रसन्नता से एक दूसरे को

रताते, और उन्हें विश्वास था कि हमारे कटे हाथों को कोई
नहीं देख पाता। दीवार पर चढ़कर वे गली के अतिरिक्त और
कुछ नहीं देख पाते थे। यद्यपि वे उस गली में स्वतन्त्रतापूर्वक जा
सकते थे पर फिर भी उन्हें दीवार पर ही चढ़ने में आनद आता
था, क्योंकि दीवार पर चढना मना था। उसका कारण शायद यह
भी रहा हो कि वे राहगीरों पर पत्थर फेंककर छिप जाया करते
थे। उनका ध्यान सदैव दो ओर लगा रहता था। एक तो साहस
की प्रसन्नता की ओर और दूसरे पकड़े जाने के भय की ओर।
एक गूँगी, बहरी और लँगड़ी लड़की आँगन में पेड़ के नीचे बैठे-बैठे इन लोगों की बदमाशी देखा करती थी। उसकी बड़ी-बड़ी
और काली आँखों में इन लोगों के प्रति कुछ बुरा भाव रहा करता
था। लड़के उससे डरा करते थे। उसे द्रवीभूत करने की उनकी
हिम्मत नहीं पड़ती थी उसे देखते ही वे लोग धीरे-धीरे बोलना
आरंभ कर देते थे, मानो वह उनकी सब बातें सुन ही लेती हो।
कभी कभी तो वे लोग उसे खेलने के लिए भी बुलाया करते थे।
वह बेचारी आंतरिक आनद से केवल हँस भर दिया करती थी,
अपने स्थान से कभी हटती नहीं थी।

अपनी कल्पना में उसने आज फिर उन काली आँखों
को देखा—जिनके भीतर दुःख और अभिलाषा का प्रकाश
देदीप्यमान रहा करता था। उसने उसे अपनी कल्पनाओं की गहरी
तह में, उसी रहस्यमय आँगन में देखा। उसे ऐसा जान पड़ा कि
वे आँखें मानो एगनेस की ही आँखें हों।

इसके बाद उसने अपने को फिर उसी गली में देखा, जहाँ वा राहगीरों पर पत्थर फेंका करता था। अब वह गली के एक ऐ मोड पर खड़ा था, जो बहुत से पुराने मकानों के पास जाकर वा समाप्त हो गया था। उसका निवासस्थान गली और सड़क ठीक बीचोबीच था, और एक ऐसे मकान में जहाँ सपन्न लोग रहते थे। वहाँ स्त्रियाँ ही स्त्रियाँ थीं, सभी मोटी और गर्म थीं। वे सदैव अपने दरवाजे और खिड़कियाँ सायकाल से ही रखती थीं। उनके यहाँ स्त्रियों और पादरियों के अतिरिक्त और कोई मिलने नहीं जाता था। उन्हीं के साथ वे हँसी-मजाक किया करती थीं, पर बडी खूबी और साइस्तगी के साथ।

इन्हीं पादरियों में से किसी ने एक दिन पाल के कधों को पकड़ लिया और अपने घुटनों के पास खींचकर उसके गभीर मुख को हाथ से ऊपर उठाकर उससे पूछा—'क्या यह सच है कि तुम पादरी बनना चाहते हो ?'

बालक ने स्वीकृति में आँखें नीची कर लीं। इ लोगों ने उसे एक धार्मिक चित्र दिया और प्यार से ए हलकी चपत लगा दी। वह कोने में बड़ी देर तक व स्त्रियों और पादरियों की बातें सुनता रहा। वे लोग 'आ के पादरी के विषय में बातें कर रहे थे। वह किस प्रक शिकार खेलने जाता और किस प्रकार सिगरेट पिया करता उसने अपनी दाढ़ी भी बढा ली थी। इतना होने पर भी प्रधान पादरी उसे वहाँ से हटा देने में हिचकिचाता था। क्योंकि

कोई दूसरा पादरी उस पुराने गाँव में जाना स्वीकार नहीं करता था। यदि कोई वहाँ जाने की हिम्मत बाँधता भी तो, वह विलासी पादरी उसे धमकाता और बाँधकर नदी में फेंक देने का भय दिखाता। अगर किसी ने साहस किया तो वह उसे वहाँ से हटाकर ही दम लेता था।

'सबसे अधिक कठिनाई तो यह थी कि 'आर' के मूर्ख निवासी उससे प्रेम करते थे और वह भी ऐसी स्थिति में जब वे उससे और उसके जादू टोने से डरते भी थे। कुछ तो यहाँ तक कहते कि वह ईसा का अवतार है। स्त्रियाँ तो सब की सब यही कहती कि उसके बाद जो पादरी इस गाँव में आवेगा वह बाँध कर नदी में फेंक दिया जायगा।

'सुनते हो पाल ? अगर तुम्हें पादरी बनना है और अपनी माँ के गाँव में जाने की अभिलाषा है, तो किसी सुअवसर की प्रतीक्षा करो।'

यह चुटकी एक स्त्री ने ली थी। उसका नाम था मेरी एलेना। यह भी उसकी देखभाल किया करती थी। जब वह बालों को सँवारने के लिए पाल को अपने समीप बुलाती, तो उसकी तोंद और मुलायम छाती उसे यह सोचने के लिये बाध्य कर देती कि यह कोई मुलायम गद्दी है। पाल मेरी एलेना को बहुत चाहता था। मोटे शरीर के अतिरिक्त उसका मुख सुंदर था, गाल हलके गुलाबी थे और आँखें भूरी और विनम्रतापूर्ण थीं। वह उसकी ओर उसी प्रकार देखता जैसे कोई पेड़ में लटकते हुए पके फलों को

देखता है, शायद पाल पहले पहल उसी से अधिक प्रेम करता

इसके बाद उसे विद्यार्थी जीवन का स्मरण आया।
मास में एक दिन प्रात काल उसकी माँ उसका नाम लिखाने
लिये उसे मदरसे में ले गई। आकाश नीलाभ था। सभी
से नवनिर्मित मदिरा की-सी महक आ रही थी।

सडक लचकती हुई ऊपर की ओर चली गई थी। पहाड़
ऊपर का एक छायादार मार्ग स्कूल और पादरी के मकान
मिलाता था। यह मार्ग ऐसा मालूम होता था, मानो सूर्य-
से प्रकाशित छोटी-छोटी झोपड़ियों, वृक्षों, गिर्जे के शिखर
उसकी सीमेंट की सीढियों से युक्त कोई सुदर चित्र हो।
के मकान के सामने जडे हुए गोल-गोल पत्थरों के बीच
चग रही थी। बहुत से सवार उनपर से होकर जा रहे थे।
की टाँगें मब्बेदार बालों से ढकी थीं, जिनपर चमकती रकाबों
ठोकरें पड रही थी। उसने जब इन सब चीजों को देखा
उसकी आँखें लज्जा से नीचे की ओर हो गईं—एक तो उसे
लज्जा हो रही थी, दूसरे अपनी माँ के कारण इस बात के स्वी
कार लेने ही में क्या हर्ज है? वह प्राय अपनी माँ की ओर
लज्जित रहा करता था, क्योंकि वह एक मजदूरनी थी
साथ ही गँवारों के बीच रहती थी। कुछ दिनों बाद, नहीं नहीं
बहुत दिनों के बाद वह अपने गौरव और अपनी हृद्गत
लाषा से इस घृणास्पद विचार को हटा सका था। अब जितना
वह अपने जन्म के विषय में लज्जित होता, उतना ही अपने

ने और ईश्वर के प्रति गौरव का पात्र समझता था। अब वह
; दरिद्र कुटिया में रहते हुए भी अपने को माँ के हाथों में
प देने, उसकी छोटी सी भी अभिलाषा को पूर्ण करने और उसके
धारण से-साधारण कार्य में भी उसे सहायता देने का इच्छुक
ता था।

उसकी माँ नौकरानी थीं, नहीं-नहीं उससे भी गई-गुजरी
वह शिक्षालय की पाकशाला के मामूली कार्य किया करती थी।
अपमानजनक स्मृति ने युवावस्था के चित्र को मस्तिष्क पर
से ताजा कर दिया। वह एक नौकरानी का काम उसीके
: करती थी। जब वह धार्मिक सभाओं में जाता था तो उसके
भावक उसे बाध्य करते कि वह जाकर माँ के कोमल हाथों
चूमे और अपने अपराधों के लिए क्षमा-याचना करे। वह
री पोंछने के कपडे से अपने हाथ को जल्दी से सुखा लेती
। पर वह इसके बाद भी साबुन की तरह महका करते। उसका
। पुरानी दीवार की भाँति खुरखुरा होकर फट गया था। हाथ
ने के लिये दबाव डालने पर उसे क्रोध आ जाता था। जब
ी वह माँ से क्षमा माँगने में असमर्थ हो जाता, तो ईश्वर से
ा माँग लिया करता था।

ईश्वर पाल को इसी प्रकार अपना रूप दिखाता। वह माँ की
ट में गीली और धुएँ से भरी रसोई में छिपा रहता था—वही
वर जो सर्वव्यापी है, जो स्वर्ग में भी है और इस पृथ्वी पर
, यहाँ तक कि सम्पूर्ण सृष्टि में है।

जब दु:खमय घड़ियों में वह अपने कमरे में पड़ा-पडा आँखें में आँखें खोले कुछ सोचा करता तो वह इसी विचार में म रहा करता—'मैं किसी दिन पादरी होऊँगा। उस समय मैं रो और शराब को ईश्वर के रूप में परिणत कर सकूँगा। उस सम वह अपनी माँ के विषय में भी सोचना नहीं भूलता था। ज वह उसके समीप न रहता, उसे देख न सकता, तब उसे ध्य करता, और यह स्वीकार करता कि मेरे इस बड़प्पन का कार वही है। क्योंकि उसीने बकरियों के झुंड को चराने अथवा कि की भाँति मिल में अनाज ढोने के स्थान पर मुझे पादरी बनाया। ऐसा पादरी, जो रोटी को ईश्वर के रूप में परिणत कर देने की शक्ति रखता था।

इसी क्रम से उसने अपने जीवन का मार्ग निर्धारित किया था। उसे संसार का ज्ञान न था। उसके मस्तिष्क में जिन विचारों का उथल पुथल हो रहा था, वे बड़े-बड़े त्यौहारों के उत्सवों की भावनापूर्ण स्मृति भी थी। इन दु:खमय घड़ियों में ये स्मृतियें उसके हृदय में ज्ञान और हर्ष का प्रकाश कर देतीं। वे विचा उसके मस्तिष्क के सामने विशाल जीवित चित्रों की भाँति घूमने लगते। प्रधान गिर्जे के बाजों का मधुर स्वर और 'धार्मिक सप्ताह के रहस्यमय कार्यक्रम की स्मृति ही इस समय उसके सता का प्रधान विषय हो रही थीं। जीवन और मरण की भाँति स्मृतियाँ उसे बिस्तरे पर दबोच रही थीं, ठीक उसी तरह जै मनुष्यों के पाप से ईसा क्रास पर जड़ दिए गए थे।

इन्हीं रहस्यमय विचारों के युग में उसने पहिले-पहल एक के साथ घनिष्टता उत्पन्न कर ली थी। जब उसने इसका ार किया, तो यह उसे स्वप्न की भाँति जान पड़ा—यह न ा था न बुरा, केवल विचित्रतामय था।

सभी छुट्टियों में वह उन स्त्रियों के पास जाता था जिनके साथ ने अपना बचपन बिताया था। वे भी उसका स्वागत पादरी की तरह करती थीं—बड़ी मुहब्बत और घनिष्टता के साथ, साथ ही अपने गौरव का ध्यान रखते हुए। जब कभी वह ी एलेना की ओर देखता तो उसका मुख लज्जा से लाल हो ाता और अपने को इसके लिये धिक्कारता। यद्यपि पाल अब ो चाहता था, पर उसने उसके स्वरूप की कटु सत्यता देख ली थी, ़ मोटी थी, कोमल थी और भद्दी थी। इसके अतिरिक्त वह और सकी विनम्रतापूर्ण आँखें उसे कभी प्रभावित न कर सकीं।

मेरी एलेना और उसकी बहनें प्राय उसे दावतों में बुलाया रती थीं। एक दिन रविवार को वह जरा पहले पहुँच गया। त्रयाँ टेबुल सजाए दूसरों की प्रतीक्षा कर रही थीं, इसलिये पाल ाहर बगीचे में चला गया। वहाँ चहारदीवारी के पास की तरफ पर लगे हुए, सुनहरी पत्तियों से ढके वृक्षों के नीचे इधर-उधर टहलने लगा। आकाश स्वच्छ और नीला था, पहाड़ियों की ओर से सुन्दर मधुर वायु आ रही थी, दूर देश से कोयल भी मीठे बोल सुना रही थी।

जिस समय वह अपने पैरों के पंजो पर उचककर बादाम के एक

पेड़ से गोंद निकाल रहा था, उसने देखा कि बगीचे के ५० ि
से बड़ी बड़ी और नीली-नीली आँखें उसकी ओर निहार रही हैं
वे बिल्ली की आँखों की तरह उसकी ओर घूर रही थीं। ए
रमणी पथ के अंत में एक अँधेरे दरवाजे की सीढ़ी पर अन
मनस्क बैठी थी। उसने पाल को इतनी सफाई से अपनी ओ
आकर्षित कर लिया कि उसकी दृष्टि उसपर से हटती ही न थी
वह अब तक यही समझ रहा था कि मैं अपनी अँगुली औ
अँगूठे से गोंद निकाल रहा हूँ। उसे स्मरण हो आया कि द
वाजे के ऊपर एक खिड़की है जिसके चारों ओर सफेद रेख
खिची है और ऊपर क्रास का चिह्न है। वह बचपन से ही इ
दरवाजे और खिड़की से भली भाँति परिचित था। ऊपरवा
क्रास उसे लोभ से हटाकर जादू की तरह प्रसन्न कर देता था
क्योंकि उस कुटिया में रहनेवाली स्त्री—मेरिया एक पतिता स
थी। वही सामने दिखाई दे रही थी। वस्त्र के हट जाने से उस
गौरवर्ण ग्रीवा दिखाई पड़ रही थी। उसके कानों में मूँगे के दे
रक्त-बिंदु-से प्रतीत हो रहे थे। उसके हाथ की टेहुनी घुटनों
पर रखी हुई थी। उसका कोमल और पीला चेहरा हथेलियों
पर रखा हुआ था। मेरिया पाल की ओर टकटकी लगाए देख
रही थी। अंत में वह उसे देखकर मुसकुराने लगी, प
अपने स्थान से हिली नहीं। उसके सफेद और सुंदर दाँत
और आँखों की कठोर भाव-भंगी उसके मुख के चातुर्यपूर
भाव को प्रकट कर रही थी। एकाएक उसने हाथों को गोद में

झुककर अपने सिर को ऊँचा कर लिया। मुख ने विषाद की मुद्रा धारण कर ली। उसी समय एक लंबा पुरुष अपनी टोपी से अपना मुँह ढके दीवार की छाया में-से होकर सड़क पर से बड़ी सावधानी के साथ आता दिखाई पड़ा।

इसके बाद मेरिया पास का दरवाजे के अन्दर चली गई। उसके पीछे पीछे वह मनुष्य भी अंदर गया और भीतर आकर द्वार बंद कर लिया।

पाल उस दिन की उत्तेजना को कभी न भूला। जब तक वह नीचे टहलता रहा उन्हीं दोनों व्यक्तियों के विषय में सोचता रहा, जो उस गंदे कमरे में चले गए थे। उसे उस समय एक प्रकार का खेद हो रहा था, वह उस समय किसी घोर कष्ट से पीड़ित होकर तिलमिला रहा था। उसकी ऐसी इच्छा हो रही थी कि किसी रोगी की भाँति छिपकर बैठ रहूँ। दावत के समय भी वह अतिथियों की गपशप में चुप ही रहा। भोजन समाप्त हो गया, वह पुल बागीचे में लौट आया। वही स्त्री फिर ईप्सित नेत्रों से उसी स्थान पर पूर्ववत् बैठी दिखाई पड़ी। सूर्यदेव उस आर्द्र द्वार पर कभी नहीं पहुँचते थे, जहाँ वह दरवाजा बना था। रमणी बहुत गोरी और सुकुमार दिखाई पड़ती थी, शायद इसीलिये कि वह छाया में रहती थी।

वह उसे देखकर भी अपने स्थान से नहीं हटी, बल्कि उसकी ओर देखकर मुसकुराने लगी और उस मुसकुराहट के बाद ही उसका मुख उसी भाँति गंभीर हो गया जैसा उस पुरुष के आने

पर हुआ था। उसने पाल को अपने पास बुलाया और जिस प्रकार एक नवयुवक के साथ बात चीत करनी चाहिए उसी प्रकार वह कहने लगी—

'क्या आप शनिवार को मेरा घर पवित्र करने की कृपा कर सकेंगे? पिछले साल जो पादरी सबके यहाँ आया करता था, उसने अब मेरे यहाँ आने से इनकार कर दिया है। जहन्नुम में जाय वह और उसकी जादू-भरी झोली।'

पाल ने कुछ उत्तर नहीं दिया। उसे ऐसा मालूम हुआ, मानो उसकी अन्तरात्मा उस स्त्री को ढेला मारने के लिए उसे बाध्य कर रही हो, उसने उसी समय दीवार में से एक ईंटा उठाया भी, पर तुरत उसे जहाँ का तहाँ रख दिया और रुमाल से हाथ पोंछने लगा। किंतु धार्मिक सप्ताह भर क्या धर्म पुस्तक सुनते समय, क्या किसी अन्य धार्मिक उत्सव में भाग लेते समय और क्या हाथ में मोमबत्ती लेकर गिर्जे के अन्य पदाधिकारियों के साथ प्रधान पादरी का अनुगमन करते समय—बराबर उसे ऐसा प्रतीत होता मानो वह स्त्री आँखें काढे उसे घूर रही है। उसकी यह अवस्था तब तक बनी रही, जबतक यह बात एक अशुभ आक्रमण के रूप में परिणत न हो गई। उसने चाहा कि मैं उसके साथ वही उपाय करूँ जो भूत लगे प्राणियों पर किया जाता है। पर तुरत उसे जान पड़ा कि शैतान तो मेरी ही आत्मा में घुसा है। पाद-प्रक्षालन के समय जब प्रधान पादरी बारह भिक्षुओं के सामने झुका था (जो, ऐसे मालूम होते थे, जैसे

सचमुच पारह श्रेष्ठ आत्माएँ हों) तो पाल का हृदय इस विचार से द्रवीभूत हो गया कि गत वर्ष ईस्टर* के पूर्ववाले रविवार को पादरी ने उस पतिता रमणी के यहाँ जाने से इनकार कर दिया। ईसा ने तो मेरी मैगडेलन को क्षमा कर दिया था। यदि पादरी उस मकान में भी दुआ कर आता तो संभव था, वह दुश्चरित्रा नारी अपने चरित्र का सुधार लेती। यह भावना उसके पुराने विचारों को भुलाने लगी। किंतु यह सोचकर कि मैंने इस विषय पर बहुत देर से विचार किया, उसे मालूम हुआ कि मेरी आत्मा ने ही मुझे झूठा बना दिया क्योंकि इतने समय तक मैं अपने ही को भली-भाँति नहीं समझ सका। और यदि अपने हृदय को समझ भी गया होता तो शनिवार को फिर उस भ्रष्टा स्त्री के पास अवश्य जाता।

जब पाल ने मुँह फेरकर उधर देखा तो मेरिया पारका दरवाजे की सीढ़ियों पर नहीं थी। दरवाजा खुला पड़ा था, इससे यह स्पष्ट था कि मकान में कोई बाहरी नहीं है। वह उसी पुरुष की नकल करता हुआ, दीवार की छाया में छिपता हुआ, गली में जाने लगा। पर पाल चाहता था कि वह दरवाजे पर ही बैठी बाहर की ओर देखती होती और मुझे भी देखकर वह उसी भाँति गंभीर मुद्रा से उठ जाती, उसके मुख पर विषाद की एक

---

* अँगरेजों का एक विशेष त्यौहार जो अप्रैल के महीने में होता है। यह त्यौहार हमेशा सोमवार को पड़ता है, पर आरंभ एक सप्ताह पूर्व ही हो जाता है।

गहरी छाया आ जाती। जब वह गली के अंतिम सिरे पर पहुँचा तो उसने देखा कि वह पास ही के कुएँ पर पानी खींच रही है। उसका हृदय एकदम उछल पड़ा, क्योंकि वह बिलकुल मेरी मैग डेलन की ही तरह दिखाई दे रही थी। जल खींचते खींचते ही उसने घूमकर पाल की ओर दृष्टि डाली और शर्मा गई। अपने जीवन में उसने ऐसी सुंदर स्त्री कोई नहीं देखी थी। उसकी इच्छा हुई कि मैं उसके समीप दौड़ जाऊँ, पर उसे बड़ी लज्जा आ रही थी। जब वह जल का पात्र लेकर फिर द्वार के अंदर जाने लगी तो उसने पाल से कुछ कहा, वह समझ न सका। वह उसके पीछे पीछे मकान के अंदर चला गया और दरवाजा बंद कर लिया। वहाँ लकड़ी की एक छोटी-सी सीढ़ी लगी थी जो ऊपर के कमरे में खटकेदार दरवाजे तक चली गई थी। कमरे में खिड़की के ऊपर एक क्रॉस लटक रहा था, जो शायद लोभ का निवारण करने के लिये लगा था। वह उसे ऊपर के कमरे में ले गई। उसने उसके सिर की टोपी उतारकर अलग फेंक दी और हँसने लगी।

पाल उसके बाद भी कई बार उसके यहाँ गया, पर जब से वह धार्मिक कार्य में प्रवृत्त हुआ तब से उसने सभी स्त्रियों से नाता तोड़ लिया। अपनी शपथ के कवच के भीतर उसके विचार परिष्कृत से मालूम पड़ते। जब वह दूसरे पादरियों की अपमान जनक कथाएँ सुनता तो अपनी पवित्रता पर अभिमान करता। गली में रहनेवाली स्त्री के साथ वहाँ जाने के दुस्साहस को वह एक बीमारी समझता था, जिससे वह पूर्णरूपेण मुक्त हो चुका था।

गाँव में आने पर, शुरू-शुरू में वह सोचा करता था कि मैंने अपना जीवन बड़े सुचारु से रूप से व्यतीत किया। जहाँ तक हो सका मैंने सभी बातों का अनुभव प्राप्त कर लिया। दुःख का, सुख का, अपमान का, यहाँ तक कि प्रेम और आनंद का भी। ठीक उसी प्रकार जैसे परमात्मा के अखंड राज्य में जाने की प्रतीक्षा करनेवाला कोई वृद्ध साधु अनुभव करता है। उस रमणी की नशीली आँखों मे उसे पुन पुन सासारिक जीवन का दर्शन होने लगा। प्रथम बार ही वह ऐसा धोखा खा गया कि सासारिक जीवन के विषय मे ही वह भूलें कर बैठना चाहता था।

प्रेम करना और स्वय प्रेम का पात्र होना क्या इस भूतल पर ईश्वर के स्वरूप नहीं हैं? इस बात के स्मरण से उसका हृदय भर गया। हे प्रभो, क्या हम लोग इतने अंधे हैं? हम लोगों को ज्ञान का प्रकाश कैसे प्राप्त होगा? पाल ने अपने को बिलकुल अज्ञान समझा। उसकी योग्यता केवल उन पुस्तकों की थी जिनका अर्थ भी वह अधूरा ही जानता था। पर फिर भी धर्म ग्रथ की प्राचीन गाथाओं और उनके सत्यतामय चित्रों ने उसपर गहरा प्रभाव डाला था। अब उसे अपने ही ऊपर विश्वास नहीं हो रहा था। उसने समझ लिया था कि मेरी अपनी कोई योग्यता नहीं, मुझमें आत्म ज्ञान नहीं। मेरा अपने ऊपर अधिकार नहीं था। मैंने सदा अपनी आत्मा को गहरा धोखा दिया।

मेरे पैर उलटे मार्ग पर पड़ गए हैं। मैं साधारण हृदय का मनुष्य हूँ। उसे इसका बड़ा खेद था कि मैं अपने पूर्वजों की भाँति गड़ेरियों

अथवा मिल में काम करनेवाले मजदूरों की भाँति अपनी अंतरात्मा की प्रेरणा के अनुसार चलने से रोका गया। अब उसे अपने रोग का निदान भली भाँति मालूम हो गया। वह समझ गया कि मैं क्यों कष्ट में था। इसका कारण और कुछ नहीं, केवल यही था कि वह प्रेम और आनदपूर्ण स्वाभाविक मानव जीवन व्यतीत करने से वचित रखा गया। उसने सोचा कि आनद भोग लेने पर वह अत में केवल भय और दु ख ही छोड़ जाता है। इसलिए मानव-जीवन के सुयोग की पुकार मचानेवाला हाड़ माँस का बना शरीर नहीं है, बल्कि आत्मा है, जो इस हाड-माँस के कारागार में बद है और जो अपने कठोर बदी जीवन से छुटकारा पाना चाहती है। प्रेम की उन अद्भुत घड़ियों में वही आत्मा पक्षी की भाँति बहुत ऊँचे उड़ जाती है, जिससे अपने पिंजड़े में आने के लिये वह तेजी से उतर सके। स्वतत्रता के वे क्षण उस स्थान का दर्शन करा देने के लिए पर्याप्त हैं, जहाँ यह आत्मा अब में जाती है—जब इसके बदी-जीवन के दिन व्यतीत हो जाते हैं और यह शरीर रूपी दीवार फेंक दी जाती है। एक ऐसे स्थान में, जो स्वय ही आनद स्वरूप है।

अत में वह मुसकुरा उठा, फिर दु खित हो गया और थकित-सा प्रतीत होने लगा। मैंने इन सब बातों का कहाँ अध्ययन किया? निश्चय ही मैंने इन्हें कहीं पढ़ा होगा, क्योंकि मैं स्वय तो नवीन विचारों को जन्म दे ही नहीं सकता। पर ऐसी बात नहीं थी। सत्य सदैव उसी भाँति सत्य है, जैसे मनुष्य के प्रति उसका

हृदय। उसने अपने को जनसाधारण से अलग समझा था, अपनी इच्छा से अलग और सबकी अपेक्षा ईश्वर के अधिक निकट होने योग्य। शायद इसीलिए परमात्मा उसे इस रूप में दण्ड दे रहा था, उसे पुनः मनुष्यों में भेजकर और एक ऐसे वातावरण में रखकर जो वासना और कष्टों से भरा था।

उसने सोचा कि मुझे अब अवश्य उठना चाहिए, अपने निर्धारित मार्ग पर चलना चाहिए।

## ५

उसे निश्चय हो गया कि कोई दरवाजा खटखटा रहा है।

पाल इस प्रकार चौंक पड़ा, मानो किसी ने उसे गहरी नींद से जगा दिया हो। वह बिस्तरे पर से उछलकर उठ बैठा। उस समय उसके मन में ऐसे भाव उठ रहे थे, जैसे कोई देशाटन करने जा रहा हो और बहुत देर हो जाने के कारण घबड़ा रहा हो। उसने बहुत चाहा कि मैं उठकर खड़ा हो जाऊँ, पर कमजोरी के कारण उसे बैठे ही रह जाना पड़ा। उसका अंग अंग इस प्रकार दर्द कर रहा था, मानो सोते समय वह खूब पीटा गया हो। मस्तक को छाती पर रखे वह पलँग पर पड़ा था। दरवाजा खटखटाने के उत्तर में वह धीरे से केवल सिर भर हिला सकता था। उसकी माँ उसे प्रातःकाल तड़के जगाना नहीं भूली, क्योंकि वह जगाने के लिए पहले दिन उसे कह चुका था। वह अपने सीधे मार्ग से जा रही थी। उसे यह स्मरण नहीं था कि कल रात को क्या बातें हुई थीं। वह उसे उसी स्वाभाविक आदत से प्रेरित होकर जगा रही थी। उसके लिये उस दिन का सवेरा भी रोज का-सा ही था।

हाँ, रोज का-सा ही था। पाल उठा और कपड़े पहनने

लगा। थोड़ी देर बाद वह अपने कपड़े पहन चुका और बनकर खड़ा हो गया। उसने खिड़की खोल दी। नीले आकाश के प्रखर प्रकाश से उसकी आँखों में चकाचौंध हो गई। चहचहाते हुए पक्षियों से भरे वृक्ष और झाड़ियाँ प्रातःकाल के मनोहर सूर्यालोक से चमक रही थीं। वायु उस समय शांत थी। गिर्जे के घंटे का निनाद चारों ओर विशुद्ध और कोमल वायु में गूँज रहा था।

गिर्जे का घंटा उसे पुकार रहा था। वह उस समय मानो सांसारिक पदार्थों से विमुख हो गया हो, वह अपने उद्धत विचारों से भी दूर भागना चाहता था। कमरे के सुगंधित पदार्थ उसे शारीरिक ही नहीं, मानसिक कष्ट भी दे रहे थे। इनसे उसके हृदय को ठेस लग रही थी। घंटे का शब्द अब तक उसे पुकारकर सचेत कर रहा था, पर वह अभी कमरे से बाहर निकलने का निश्चय नहीं कर सका था। वह एक प्रकार के क्रोध के आवेश में कमरे में इधर उधर टहलता रहा। उसने एक बार आईना देखा और मुँह फेर लिया, पर व्यर्थ। उसके सिर में अब भी उस स्त्री का चित्र चक्कर काट रहा था, ठीक उसी प्रकार, जैसे उसका अपना प्रतिबिंब दर्पण में। यदि वह अपने मस्तिष्क के सैकड़ों टुकड़े कर देता तो भी प्रत्येक टुकड़े में उसकी मूर्ति झलकती होती।

प्रार्थना का घंटा दुबारा बजा। वह जोरों से शब्द करके मानो उसे फिर पुकारने लगा। पर वह अपने कमरे में पूर्ववत टहलता रहा। अंत में वह एक कुर्सी पर बैठ गया और किसी पद्य की कुछ पंक्तियाँ लिखने लगा। उसने उन पंक्तियों को काट दिया और

कागज को उलटकर दूसरी ओर लिखा—

'कृपया अब मेरे आने की प्रतीक्षा न करना। हम दोनों ने एक-दूसरे को धोखे भरी से भरे प्रेम-जाल में फँसाया। अब भी यदि हम लोग पूर्णतया पतित होने से बचना चाहें तो हमें बिना विलंब उस जाल को फाड़कर अलग हो जाना चाहिए। मैं अब तुम्हारे पास न आ सकूँगा, मुझे भूल जाओ। मेरे पास कोई पत्र मत लिखना। यहाँ तक कि मुझे फिर देखने का भी प्रयत्न मत करना।'

इसके बाद वह सीढ़ियों से नीचे उतर गया। उसने अपनी माँ को पुकारा। उसकी ओर बिना देखे ही वह पत्र उसके हाथ पर रख दिया।

'इस पत्र को अभी उसके पास पहुँचा दो।'—उसने सूखे गले से कहा—'जहाँ तक हो सके यह पत्र उसीके हाथों में देना। पत्र देकर शीघ्र लौट आना।'

माँ को पत्र देकर वह शीघ्रता से बाहर चला गया। उस समय उसे कुछ क्षणों के लिए ऐसा जान पड़ा मानो वह अब पूर्णतया निश्चिंत है और किसी ने उसे ऊँचे उठा दिया है।

तीसरी बार फिर घंटा बजने लगा। प्रातःकालीन उषा की ज्योति से स्वर्ण-निभ प्रशांत ग्राम और उपत्यका उसके नाद से गूँज उठी। पहाड़ी सड़क पर से वृद्धजन हाथों में गाँठदार लाठियाँ लिए आते दिखाई पड़े, जैसे किसी घाटी में से उतर रहे हों। स्त्रियों के मस्तकों पर मोटे-मोटे रूमाल बँधे थे। इससे उनके सिर

कद की अपेक्षा बड़े मालूम होते थे। ये लोग गिर्जे में चले गए। वृद्धों ने वेदी के समीप और इतर जनों ने इधर उधर स्थान ग्रहण कर लिया। सारा स्थान पृथ्वी और खेतों की सोंधी महक से भर गया। एक युवक पादरी—एटिओकस—उत्साहपूर्वक धूप जलाने लगा। धुँआ वृद्धों की ओर बढ चला, शायद इसलिए कि वे लोग अब दूसरी गध को दूर कर दें। एकाएक एक बड़ी भीड़ ने वेदी और पीले मुखवाले पादरी को घेर लिया। लाल छींट की सिल्क के वस्त्रों से आच्छादित पादरी का मुख तेज से चमक रहा था। पाल और उसका साथी युवक पादरी दोनों उस धुएँ को पसद करने के साथ ही, उसका प्रयोग विलासिता के लिए भी किया करते थे। वेदी की ओर आँखें घुमाकर पादरी ने अपने नेत्र आधे बद कर लिए, मानो धुएँ से उसकी दृष्टि रुक गई हो। भक्तों की उपस्थिति इतनी क्षीण देखकर वह कुछ खिजला सा गया। वह अन्य आगतुकों की प्रतीक्षा करने लगा। उसको प्रतीक्षा व्यर्थ नहीं गई। क्योंकि ठीक उसी समय कुछ दीर्घसूत्री आते दिखाई पडे। उन सबके पीछे 'माँ' थी। उसे देखते ही पाल के दोनों ओठ बर्फ की भाँति सफेद पड़ गए।

इसमें सदेह नहीं कि उसका पत्र यथास्थान पहुँच गया, साथ ही धार्मिक कृत्य भी पूरा हो गया। पर उस समय उसके मस्तक पर मृत्यु के समय की सी पसीने की बूँदें झलक रही थीं। ज्योंही उसने मौन वदना के लिए हाथों को ऊपर उठाया, उसके हृदय में शब्द होने लगा कि अच्छा होता यदि पाल का ही रक्त-माँस बलि-

वेदी पर चढ़ जाता। उसकी आँखों के सामने वही दृश्य नाच रह था—एगनेस पत्र पढ़ रही है, पत्र पढते- पढते वह गिर पडी औ बेहोश हो गई।

जब धर्मोपदेश समाप्त हो गया तो वह घुटने टेककर बै गया। फिर नीरस ध्वनि से लैटिन भाषा में प्रार्थना की। और मडल तो सतुष्ट हो गई, पर उसके मन में आता कि मैं वेदी के साम ही गिरकर गहरी नींद में सो जाऊँ। ठीक वैसे ही, जैसे कोई गड़ेरि साफ चट्टान देखकर सोने की इच्छा करता है। धूप के धुएँ के काले बादलों में से होकर सामने एक स्त्री की छोटी सी छाया मूर्ति दिखाई दे रही थी। वह एक कौतुकमय, कोमल और श्याम मूर्ति थी। पाल उसकी ओर इस प्रकार दृष्टि गडाए हुए था, मानो बहुत दिनों के उपरांत उसे देखा हो। इतने दिनों तक वह कहाँ था? इसका उत्तर उसके पास नहीं था। उसकी स्मृति के विचार अव्यवस्थित थे, उन्हें ठीक करने में वह असमर्थ था।

वह सहसा उठकर खड़ा हो गया। एक बार चारों ओर घूमते हुए दृष्टि फेंकी। फिर श्रोताओं को उपदेश देने लगा। यही एक ऐसा कार्य था, जिसे वह बराबर किया करता। उसकी आवाज बड़ी और ऊँची थी, वह जोर से शायद इसलिए बोल रहा था कि गिर्जे और वेदी के बीच के भाग में बैठे हुए दढियल बूढ़ों, और दूर बैठी हुई भयाकुल और जिज्ञासु रमणियों को धमकाने के लिये जोर से ही बोलने की आवश्यकता थी। बड़ा पादरी हाथ में प्रार्थना-पुस्तक लिए अपनी बड़ी-बड़ी और काली काली आँखों से

पाल की ओर देख रहा था। इसके बाद उसने श्रोताओं की ओर घूमकर इस प्रकार सिर हिलाया, मानो उन्हें उपदेशक की शिक्षा सुनने के लिए सचेत कर रहा हो। इसके बाद वह कहने लगा—

'आप लोगों की संख्या दिन प्रतिदिन घटती जाती है। जब मैं आप लोगों के सम्मुख उपस्थित होता हूँ तो मुझे ऐसा प्रतीत होता है, मानो किसी गड़ेरिए की भेड़ें खो गई हों और उसका चेहरा उतर गया हो। मेरा सिर लज्जा से झुक जाता है। केवल रविवार के दिन गिर्जाघर कुछ भरा रहता है। मुझे मालूम है कि उस दिन भी आप लोग अपने विश्वास के कारण नहीं, बल्कि अपनी झेंप मिटाने के लिये आते हैं, ठीक वैसे ही, जैसे कपड़े बदलते हैं, आराम करते हैं। अब भी समय है। आप लोग अपनी मोह-निद्रा छोड़िए! मैं यह नहीं चाहता कि बाल बच्चेवाली माताएँ और प्रात काल ही से काम में लगजानेवाले पुरुष भी नित्य प्रति गिर्जे में आया करें। मेरा तात्पर्य उन वृद्धों, नवयुवतियों और बालकों से है जो व्यर्थ अपने घरों के दरवाजों पर खड़े उगलत सूर्य की ओर देखा करते हैं। उन सब लोगों को नित्य आकर प्रार्थना में सम्मिलित होना चाहिए। अपनी जीवन यात्रा को सफलता के लिए परमात्मा के निवास-स्थान में आकर प्रार्थना करनी चाहिए। यदि आप लोग ऐसा करेंगे तो आपकी दरिद्रता विमुख होकर चली जायगी। पापमय विचार और आकांक्षाएँ आपको लुभा न सकेंगी। आप लोगों को नित्य प्रात काल ब्राह्म मुहूर्त में उठकर हाथ-पैर धोना और कपड़ा बदलना चाहिए। यह कार्य केवल रवि-

वार को नहीं, सब दिन होना चाहिए। मुझे आशा है कि आप लोग कल ही से इसे आरंभ कर देंगे। कल से ही हम लोग एक साथ मिलकर उस जगदीश्वर से प्रार्थना करेंगे कि वह हमें और हमारे इस गाँव को कभी न भूले, यहाँ तक कि एक छोटे-से घोंसले को भी नहीं। जो लोग अस्वस्थ हैं, यहाँ नहीं आ सकते, उनके लिए हम प्रार्थना करेंगे कि वे भी शीघ्र ही आरोग्य हों और हमारे साथ आगे बढ़ सकने में समर्थ हों।'

अपनी वक्तृता समाप्त करके वह हट गया। उसके साथ ही बड़े पादरी ने भी वैसा ही किया। कुछ समय तक गिर्जे में ऐसा सन्नाटा रहा कि बाहर पहाड़ों पर काम करनेवाले संगतराशों के हथौड़ों का शब्द वहाँ स्पष्ट सुनाई पड़ रहा था। इसके बाद एक स्त्री उठी और पादरी की माँ के पास गई। उसके कंधे पर हाथ रखकर उसने माँ के कान में कहा—

'तुम्हारे पुत्र को शीघ्र ही किंग निकोडेमस के यहाँ जाकर उसका 'पातक निवेदन' * सुन लेना चाहिए। क्योंकि वह सख्त बीमार है।'

माँ के तुरंत समय विचारों की शृंखला छिन्न भिन्न हो गई। वह अपनी आँखें उठाकर वक्ता की ओर देखने लगी। उसे स्मरण हो आया कि किंग निकोडेमस एक वासना-लोलुप वृद्ध शिकारी था।

* पाश्चात्य देशों में मरते समय लोग पादरियों को बुलाकर अपनी सभी गुप्त बातें प्रकट कर देते हैं। उनका विश्वास है कि ऐसा करने से पापों से मुक्ति मिल जाती है।

ऊँची पहाड़ी पर स्थित एक कुटी में वह रहा करता था। उसने जिज्ञासा की कि पाल को उसका आत्म-निवेदन सुनने के लिए उस पहाड़ी पर चढ़ना होगा या नहीं।

'नहीं।'—उस स्त्री ने धीरे से उत्तर दिया—'उसके संबंधी उसे नीचे गाँव में ले आए हैं।'

माँ उठकर यह संदेश देने के लिये पाल के पास चली गई। पाल उस समय गिर्जे के विश्रामालय में अपने वस्त्र उतार रहा था। एटिओकस उसकी सहायता कर रहा था।

'तुम पहिले मकान पर आकर अपनी चाय पी लेना, यही ठीक है न ?'—माँ ने पूछा।

उसने माँ के ऊपर से दृष्टि हटा ली। यहाँ तक कि उत्तर भी नहीं दिया। अपनी मुद्रा से वह ऐसा भाव प्रकट कर रहा था, मानो वह उस वृद्ध के पास जाने के लिए बहुत व्यग्र हो रहा हो। माँ बेटे दोनों के विचार एक ही वस्तु पर टक्कर मार रहे थे। उसी पत्र पर, जो कुछ ही समय पूर्व एगनेस के हाथों में दिया जा चुका था। पर कोई भी इस विषय पर जबान नहीं हिला रहा था। इसके उपरांत पाल तेजी से बाहर निकल गया और माँ उसी स्थान पर इस प्रकार खड़ी रह गई जैसे वह लकड़ी का कोई कुंदा हो। गिर्जे का प्रबंधक उस समय वस्त्रों को सरिया कर रखने में व्यस्त था।

'अच्छा होता कि मैं उससे निकोडेमस के विषय में कुछ न कहती। तब तक—जब तक वह मकान पर आकर चाय न पी लेता।'—उसने कहा।

'पादरी को प्रत्येक बात की आदत डाल रखनी चाहिए।'—एटिओकस ने बक्स के अंदर दृष्टि डालते हुए गंभीरतापूर्वक उत्तर दिया। उसका भाव ऐसा था, मानो वह काम करने के सिल-सिले में ही आप-ही-आप कुछ बड़बड़ा रहा हो।

'शायद वह मुझसे कुछ नाराज है। इसलिए कि मैं उसके कथनानुकूल ध्यान नहीं देती। पर, यह बात ठीक नहीं है। केवल उस समय जब मैं उन वृद्धों की ओर देख रही थी, मुझे हँसी आ गई। क्योंकि वे उपदेश का एक शब्द भी नहीं समझ पाते थे। बूढ़े मुँह बाए बैठे तो जरूर थे, पर उनकी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था। मैं शर्त मारकर कहती हूँ कि वह बूढ़ा मार्कोयनी सोचता तो है कि मैं नित्य मुँह धोऊँगा, पर ईस्टर और बड़े दिन को छोड़ कभी मुँह नहीं धोता। पर अब तुम देख लेना, वे रोज गिर्जे मे आया करेंगे। क्योंकि उसने उन लोगों से कह दिया है कि इससे उनकी दरिद्रता दूर हो जायगी।'

माँ अभी तक अपने हाथ बाँधे खड़ी थी।

'हाँ, उनकी आत्मा की दरिद्रता दूर हो जा सकती है।'' वह इस प्रकार बोली, मानो यह जताना चाहती है कि मेरी समझ में सब कुछ आ गया है। पर एटिओकस उसकी ओर केवल देखकर ही रह गया—उसी प्रकार जैसे उसने वृद्धों की ओर हँसने की अभिलाषा से प्रेरित होकर देखा था। वह भली भाँति जानता था कि मेरी बातें मेरे अतिरिक्ति और कोई नहीं समझ सकता। उसने चार उपदेश पहिले से ही कंठस्थ कर लिए थे, पादरी

की उसे बलवती अभिलाषा थी। यह अभिलाषा ऐसी थी, जिसने उसे अन्य बालकों की भाँति शरारती होने से नहीं रोका।

उसने सब चीजों को सरिया कर रख दिया। पादरी की माँ भी चल गई। एटिओकस ने एक बार भडार-घर पर दृष्टिपात किया और बाहर गिर्जे से सटे बगीचे में चला गया। चारों ओर कुछ विशेष प्रकार के पुष्प खिलकर अपनी सुरभि से दिशाओं को सुवासित कर रहे थे, पर वह स्थान कब्रिस्तान की भाँति जन-शून्य था। एटिओकस अपने घर नहीं गया। उसका मकान गाँव के किनारे था, उसकी माँ ने उसमें छोटा-सा होटल भी बना रखा था। वहाँ जाने के बजाय वह छोटे गिर्जे की ओर गया, जिससे निकोडेमस का समाचार भी ज्ञात हो जाय और साथ ही वह कुछ अन्य बातें भी मालूम कर सके।

'तुम्हारे लड़के ने मुझे इसलिये झिड़क दिया कि मैं ध्यान नहीं देता।'—उसने दूसरी बार कहा।

माँ पाल के लिये जलपान तैयार करने में व्यस्त थी-'शायद अब वह मुझे प्रबधक के पद पर नहीं रखेगा। सभव है, वह इलारियो बनीजा को नियुक्त कर दे। परतु, इलारियो पढ नहीं सकता, मैंने स्वय लैटिन तक पढना सीख लिया है। इसके सिवा वह कितना गदा है। क्या सोचती हो? क्या वह मुझे वहाँ से हटा देगा?'

'वह चाहता है कि तुम उसकी बातो पर ध्यान दिया करो, और कुछ नहीं। गिर्जे के भीतर हँसना बहुत बुरा है।'—उसने गभीरतापूर्वक उत्तर दिया।

वह आग के पास एटिश्रोकस के बगल में बैठ गयी। वह अपने अफसर के आने तक, इतजार करते रहने के विचार से बैठा था यदि पाल दिन भर न आता तो शायद वह दिन भर प्रतीक्षा करता रहता। वह एक पैर पर दूसरा पैर रखे और घुटनों के ऊपर एक हाथ से दूसरे हाथ को पकड़े चुपचाप बैठा था। उसने सीधे-सादे और सरल भाव से प्रेरित होकर कहा—

'तुम्हें चाहिए था कि उसकी चाय गिर्जे में ही ले जातीं। जब कभी स्त्रियों का पाप निवेदन सुनने में उन्हें विलंब हो जाया करता था तो तुम ऐसा ही किया भी करती थीं। अब आज वे भूख से व्यथित हो जायँगे।'

'मैं क्या जानती थी कि आज उसे इतनी शीघ्रता का बुलावा आ जाएगा। मालूम होता है, वह बूढा कब्र में ही पैर लटकाए पड़ा है।'—माँ ने उत्तर दिया।

'मुझे आशा नहीं थी कि यह बात सत्य होगी। उसके पोते-पोती चाहते हैं कि बूढ़ा शीघ्र ही समाप्त हो जाय क्योंकि मरने पर वह संपत्ति छोड़ जायगा। मैं उस बूढ़े को भली भाँति जानता हूँ। जब मैं अपने पिताजी के साथ एक बार पहाड़ पर गया था तब भी मैंने उसे देखा था। वह धूप में एक चट्टान पर बैठा था। उसके पास ही एक पालतू कुत्ता और बाज भी बैठा था, बगल में अनेक प्रकार के शिकार भी मरे पड़े थे। परम पिता इस प्रकार का जीवन व्यतीत करने की आज्ञा नहीं देता।'

'तो फिर उनकी क्या आज्ञा है?'

'ईश्वर का आदेश है कि हम लोग मनुष्यों में रहकर सेवा करें। अपने पैसों को छिपाकर न रखें, उन्हें गरीबों में बाँट दें।'

एंटिओकस सहज मानुसिक भावना से प्रेरित होकर बोल रहा था। उसकी बातें माँ के हृदय के भीतर धँस गई। वह मुसकुरा उठी। आखिर, वह इतनी ज्ञानपूर्ण बातें करने में समर्थ कैसे हुआ, मेरे पाल की ही शिक्षा की बदौलत न। पाल ही ने इन लोगों को सभ्य, बुद्धिमान् और स्वाभिमानी होने का उपदेश दिया था। वह कट्टर विचारवाले बूढ़ों और कोमल हृदय के बालकों को समझाने में सफल बनने का इच्छुक भी था। माँ ने एक गहरी साँस खींची और उसने झुककर चायदानी को सुलगते कोयलों के समीप सरकायी और बोला—'तुम तो किसी नन्हें-से साधु की भाँति बातें करते हो, एंटिओकस! पर देखना तो यह है कि मानव होकर तुम उन बातों का पालन करते हो या नहीं—तुम अपने द्रव्य को गरीबों को देते हो या नहीं।'

'हाँ, मैं अपनी सभी चीजें कँगलों को बाँट दूँगा। मुझे पर्याप्त सम्पत्ति मिलनेवाली है, क्योंकि मेरी माँ होटल चलाकर प्रचुर धन कमा लेती है। मेरे पिता स्वयं एक जंगल के मालिक हैं। उससे वे भी काफी आय कर लेते हैं। मुझे जो कुछ मिलेगा सब बाँट दूँगा। यही ईश्वर का आदेश है। और हमारा प्रबन्ध तो वह स्वयं कर देगा। बाइबिल स्पष्ट कहती है कि कौए न तो कहीं खेत बोते फिरते हैं और न बोकर कहीं काटते ही हैं। फिर भी उनका प्रबंध ईश्वर ही करता है, वही उनको भोजन देता है। घाटी के

कमलों की शोभा कितनी मनोहर होती है, उनका वस्त्राभरण क्या किसी राजा के अप्राकृतिक वस्त्रों से कम भड़कीला होता है?'

'हाँ, एंटिओक्स, यदि मनुष्य अकेला हो तो ऐसा कर सकता है। किंतु उसके बाल बच्चे हुए तब?'

'इससे कोई विशेष अंतर नहीं पड़ता। मेरे तो कोई बाल बच्चा होगा भी नहीं, क्योंकि पादरियों को इसका अधिकार नहीं है।'

माँ उसे भली भाँति देखने के लिए घूम गई। उसके चेहरे का आधा भाग तो माँ की ओर था और आधा खुले हुए दरवाजे और बाहर के मैदान की ओर। उसके चेहरे की रेखा सुदृढ़ थी साफ झलक रही थी। चमड़े का रंग साँवला था। वह चमकते हुए, पीतल का बना हुआ मस्तक प्रतीत हो रहा था। उसकी भौंहें धनुषाकार आँख के ऊपर घूम गई थीं, पलकें भी भरी हुई और साँवली थीं। उस बालक का ऐसा चेहरा देखते ही उसे रुलाई सी आने लगी। पर उसे यह नहीं ज्ञात हो रहा था कि ऐसा होने का क्या कारण है।

'क्या, तुम निश्चय पादरी होना चाहते हो?'—उसने पूछा।

'हाँ, यदि ईश्वर ने चाहा।'

'पादरियों को विवाह करने की आज्ञा नहीं, और मान लो कभी तुम्हारी इच्छा हो कि मैं एक रमणी का पति बनूँ, तो?'

'मैं पत्नी की इच्छा कभी नहीं करूँगा। क्योंकि ईश्वर ने इसकी मनाही कर दी है।'

'ईश्वर ने? नहीं, पोप ने यह मनाही कर दी है।'

उसके उत्तर पर माँ ने पीछे हटते हुए कहा।

'पोप तो पृथ्वी पर साक्षात् परमपिता का प्रतिनिधि है।'

'पर, प्राचीनकाल में पादरी बाल-बच्चे और परिवारवाले होते थे, जैसे आज कल प्रोटेस्टेंट पादरी हैं।'—उसने जोर देकर कहा।

'यह दूसरी बात है।'—लड़के ने इस तर्क पर गर्माकर कहा—'पर हमें बाल बच्चे के फेर में नहीं पड़ना चाहिए। 'पर, पादरी लोग प्राचीन काल में '—उसने पुन दोहराया।

पर भडारी पहिले ही जान गया कि वह क्या चाहती है, वह बीच ही में बोल उठा—'हाँ, पहिले पादरी लोग ऐसा करते थे। पर उन्होंने सभा करके इस बात को खराब बतलाया, और इसके विरुद्ध निश्चय किया गया। उस समय भी नवयुवकों ने ही इसका विरोध किया था, जो स्त्री-बच्चेवाले नहीं थे। इसलिए पादरी को बाल-बच्चे के फेर मे पड़ना ठीक नहीं। जैसी परंपरा चल पड़ी है, वैसा ही होना चाहिए।'

'नवयुवकों ने'—माँ ने कहा, वह इस प्रकार बोली, मानों आप ही आप सोच रही हो।—'किंतु, वे इस विषय में कुछ नहीं जानते। पीछे उन्हें कष्ट उठाना पड़ता है सभवत वे कुमार्गगामी भी हो सकते हैं।'—उसने दबी आवाज मे कहा—'चाहे वे बूढे पादरियों की भाँति बहस भले ही कर लें।'

इतना कहते कहते वह सिर से पैर तक काँप उठी। उसने तेजी से चारो ओर देखा कि कहीं उस समय वहाँ वह भूत तो नहीं है? अब उसे इस विषय में सोचने तक की इच्छा नहीं रह गई थी।

इस विषय से सम्बद्ध कोई साधारण बात भी वह दिमाग में नहीं लाना चाहती थी। पर यहीं विषय की समाप्ति नहीं हो गयी। ऐंडि ओकस का चेहरा क्रोध की एक गहरी छाया से अभिभूत हो रहा था।

'वह मनुष्य पादरी नहीं था। वह स्वयं शैतान का भाई बन कर पृथ्वी पर आया था। उससे हम लोगों को ईश्वर ही बचावे। हमारे लिए यही उत्तम है कि हम उसके विषय में विचार ही न करें'—उसने क्रास का चिह्न बनाया और शांति मुद्रा से फिर कहने लगा—

'और रही दुख की बात। क्या तुम्हारा पुत्र कभी भी दुख के स्वप्न देखता है?'

लड़के की यह बात उसके हृदय में लग गई। उसकी इच्छा हुई कि वह अपने दुःख की बात प्रगट कर दे, वह इसलिए जिससे बालक भविष्य के लिए सावधान हो जाय। पर उस समय उसे बालक की बातों में एक विशेष प्रकार का आनंद आने लगा। उसे ऐसा भास होने लगा, मानों उस अबोध बालक की अंतरात्मा उसकी अंतरात्मा से बातें कर रही है, उसे प्रोत्साहन दे रही है।

'क्या मेरा पाल कभी कहता है कि पादरियों को विवाह नहीं करना चाहिए?'—उसने धीमे स्वर से पूछा।

'यदि वे ही नहीं कहेंगे, तो दूसरा कौन कहेगा? अवश्य, वे इसे ही ठीक मानते हैं। क्या उन्होंने तुमसे कभी ऐसा नहीं कहा? यदि पादरी के बगल में उसकी बीबी हो और उसका हाथ पकड़े उसके बच्चे खड़े हों, तो कैसी छवि होगी। जब प्रार्थना का समय

होगा तब पादरी साहब अपने रोते बच्चे के फुसलाने में ही लगे रह जायँगे। क्या ही सुंदर दृश्य होगा। ज़रा तुम्हीं सोचो कि गल एक हाथ से अपने बच्चे का हाथ पकड़े हों और दूसरे हाथ से अपने चोगे को सँभाल रहे हों, तो कैसा दृश्य उपस्थित होगा? माँ के चेहरे पर एक उदास मुसकुराहट आ गई। उसकी आँखों के सामने सुंदर बालकों की क्रीड़ा और उनके इधर उधर दौड़ने का दृश्य नाचने लगा। उसका हृदय एक अदृश्य वेदना से भर गया। एटिओकस ज़ोर से खिलखिला उठा। उसकी काली और चम कीली आँखें और दाँत उसके भूरे मुख-मंडल में खिल उठे। किंतु, उसकी हँसी निर्दयता के नीरस समिश्रण से ओत प्रोत थी।

'पादरी के लिये स्त्री परिहास का कारण होगी। जब वे दोनों एक साथ घूमने जायँगे, तो पीछे से देखने पर वे दो स्त्रियों के समान प्रतीत होंगे। यदि उस स्त्री के निवासस्थान के समीप कोई पादरी न होगा तो क्या वह अपने पति के ही सामने अपना पाप-निवेदन भी कर लेगी?'

'आखिर, पादरी की माँ क्या करती है? वह क्या किसी दूसरे के पास पाप निवेदन के लिये जाया करती है?'

'माँ की बात दूसरी है। तुम्हारा पुत्र यहाँ किससे विवाह करेगा? शायद निकोडेमस की पोती से। यही न?'

वह फिर खिल-खिलाकर हँसने लगा। क्योंकि निकोडेमस की पोती गाँव में सबसे अभागी थी—साथ ही लूली और बेहूदी भी। माँ

जब अपने विचारों के विरुद्ध कुछ और ही बातें कहने लगे तो, वह शांत हो गया। माँ ने धीरे से कहा—

'इसके लिये क्या कोई दूसरी एगनेस भी मिल जायगी।'

पर ए टिश्रोकस ने इसका ईर्ष्यापूर्वक विरोध किया—'वह भद्दी है। मैं उसे नहीं पसंद करता, और पाल भी उसे नहीं पसंद करते होंगे।'

तब माँ एगनेस की प्रशंसा करने लगी, बहुत धीमे स्वर से, जिसमें ए टिश्रोकस को छोड़ कोई दूसरा उसकी बातों को न सुन सके। उस समय वह घुटने के चारो ओर हाथ बाँधे बैठा था। उसका सिर आप ही आप हिल रहा था। उसका निचला होंठ निराशा से सूखकर बेर के पके फल की भाँति लटक गया था।

'नहीं, नहीं, मैं उसे नहीं पसंद करता—क्या तुमने सुना नहीं कि वह भद्दी है, गर्वीली है, अधेड़ है और साथ ही—'

इसी समय मकान के छोटे से हाल में किसी के पैरों की ध्वनि सुनाई पड़ी। वे दोनों तुरत चुप होकर किसी की प्रतीक्षा करने लगे।

---

## ६

पाल जलपान के टेबुल पर बैठ गया और अपनी टोपी पास की कुर्सी पर रख दी। ज्यों ही माँ चायदानी में से चाय उड़ेलने लगी, उसने शात और गंभीर स्वर में पूछा—

'वह पत्र पहुँचा दिया ?'

उसने सिर हिलाते हुए, पाकशाला की ओर हाथ उठाकर यह भाव प्रदर्शित किया कि उसकी बातें कहीं वह लड़का सुन न ले।

'वहाँ कौन है ?'—पाल ने पूछा।

'ऐंटिओकस'

'ऐंटिओकस !'—उसने पुकारा। तुरत ही ऐंटिओकस हाथ में टोपी लिए आकर उपस्थित हो गया। वह उसी प्रकार सतर्क था, जैसे आज्ञाकारी सेवक को होना चाहिए।

'सुनो, ऐंटिओकस, तुम शीघ्र गिर्जाघर चले जाओ और बूढ़े के अंतिम उपदेश की पूरी तयारी कर डालो।'

एंटिओकस प्रसन्नता के कारण कुछ भी न कह सका। उसे विश्वास हो गया कि पाल अब मुझसे नाराज नहीं है। अब वह मुझे जवाब देकर दूसरे की नियुक्ति नहीं करेगा।

'अच्छा, जरा ठहरो, तुम खा चुके हो ?'

'वह कुछ नहीं खायगा, उसकी खाने की इच्छा नहीं है।'—माँ ने कहा।

'अच्छा, बैठ जाओ'—पाल ने आज्ञा दी—'तुम कुछ खा लो। माँ, इसे कुछ खाने को देदे।

पादरी के टेबुल पर बैठकर जलपान करना, एंटिओकस के लिए कोई नई बात नहीं थी। इसलिए वह निःसंकोच बैठ गया पर उसका हृदय धड़क रहा था। उसे स्पष्ट मालूम हो रहा था कि मेरा पद कुछ विशिष्ट अवश्य हो गया है। पादरी मुझसे दूसरे ढंग से बातें कर रहा है—नित्य की साधारण बोलचाल से बिलकुल भिन्न। पर उसे स्पष्ट नहीं हो रहा था कि इस ढंग में क्या विशेषता है, और क्यों ? वह पाल की ओर इस प्रकार देख रहा था, मानों उससे पहले ही पहल साबिका पड़ा है।—उसकी इस दृष्टि में प्रसन्नता और भय दोनों का संमिश्रण था। भय, आनन्द कृतज्ञता और स्वाभिमान के अस्थिर नूतन भावों ने उसके हृदय को इस प्रकार भर दिया, जैसे पक्षियों का नीड़ बच्चों से भर जाता है। अब वे उन्हीं की भाँति शीघ्र ही अपने पर फैलाकर उड़ जाने को प्रस्तुत थे।

'इसके उपरान्त दो बजे तुम पढ़ने आना। अब लैटिन

अध्ययन में जी तोड़कर लग जाओ। मैं व्याकरण की नक़ल करवा लेना चाहता हूँ। क्योंकि मेरी प्रति सैकड़ों वर्षों की पुरानी हो गई।'

एंटिओकस ने खाना बंद कर दिया। उसका मुख लाल हो गया। वह बिना कुछ जाँच पड़ताल किए अपना काम दूने जोश के साथ करने लगा। पादरी ने उसकी ओर मुसकुराहट के साथ देखा और इसके बाद अपनी दृष्टि खिड़की की ओर कर ली। खिड़की से स्वच्छ आकाश और दूर के वृक्ष दिखाई पड रहे थे। पर उसके विचार कहीं उससे भी दूर टकरा रहे थे। इस समय एंटिओकस सोच रहा था कि अब मुझे अपनी जिज्ञासा का उत्तर मिल गया। उसका जोश ठंढा पड़ गया। उसने मेजपोश पर से जूठन को झाड़ दिया, अपना तौलिया सावधानी से तहा लिया और प्यालों को लेकर रसोई घर से चला गया। वह उन्हें भली भाँति साफ करके रख चुका होता, क्योंकि प्राय वह अपनी माँ के मद्य गृह में प्याले साफ किया करता था। पर माँ उससे यह काम लेने को कदापि तैयार नहीं थी।

'जाओ, गिर्जे में जाकर अपना काम करो।'—उसने उसे ढकेलते हुए धीरे से कहा। वह शीघ्रता से बाहर चला गया। पर वहाँ से सीधे गिर्जे में न जाकर वह मार्ग ही से घर चला गया—अपनी माँ से यह कहने के लिए कि मकान की सफाई कर डाल, क्योंकि पादरी तुझसे मिलने आनेवाले हैं।

इधर पाल की माँ फिर भोजनालय में गई। पाल सामने अखबार

रखे टेबुल पर ऊँघ रहा था। प्राय इस समय पाल अपने ही कमरे में रहा करता था। पर आज वह ऊपर जाने मे भय खा रहा था। वह बैठे बैठे अखबार पढ तो अवश्य रहा था, पर उसके विचार और कहीं चक्कर काट रहे थे। वह उस मरणासन्न बूढे शिकारी के विषय में कुछ सोच रहा था। उसने स्वीकार किया था कि मैं मनुष्यों की सगत से घृणा करता हूँ, क्योंकि मनुष्य स्वय ही बुराई का नग्न स्वरूप है। लोग उसे मजाक में 'राजा' कहा करते थे, उसी प्रकार जैसे ईसा को यहूदियों का राजा कहते हैं। पाल को उसके पाप निवेदन मे कोई राग नहीं उत्पन्न हुआ। उसके विचार एटिओकस और उसके माता पिता की ओर घूम गए। पाल उनसे पूछना चाहता था कि क्या सचमुच वे लोग उसको पादरी बनने की अभिलाषा का प्रतिपादन करते हैं ? पर यह भी उसके लिए कोई महत्वपूर्ण विषय नहीं सिद्ध हुआ, वस्तुत पाल अपने दुःखद विचारों से छुटकारा पाना चाहता था। जब माँ कमरे में आई तो उसने अपना सिर समाचार-पत्र के ऊपर और भी ध्यान पूर्वक झुका लिया। वह भली भाँति जानता था कि केवल वही एक ऐसी है जो उन विचारों को भली भाँति ताड़ सकती है।

वह सिर झुकाए अन्यमनस्क सा बैठा हुआ था, पर ओंठ गतिशील होकर प्रश्न के लिए शब्दावली जुटा रहे थे। उसका पत्र यथास्थान पहुँच ही चुका था। अब और दूसरी कौन-सी बात है, जो उसे जाननी है ? उसके हृदय पर क़ब्र का भीषण पत्थर जीते-जी रख दिया गया। उसका हृदय कैसा क्लेशकर प्रतीत

हो रहा था। उस विशाल पाषाण के नीचे जीने-जी सो जाने में उसे बड़ी अस्थिरता होने लगी।

माँ चुपचाप टेबुल साफ करने लगी। बर्तनों को यथास्थान रख आई। कमरे में एकदम शांति थी, ऐसी शांति कि दूरस्थ पक्षियों के कोमल शब्द तक स्पष्ट सुनाई देते थे। संगतराश की छेनी भी पास ही खट्ट-खट्ट कर रही थी। उस समय कमरे को देखने से ऐसा अनुभव होता, मानो वह स्थान संसार से एकदम परे है। कमरे के पुराने सामान, उसका मैला फर्श जेल का दृश्य उपस्थित कर रहे थे। दीवार में ऊपर की ओर लगी खिड़की से सुनहली ज्योति आकर उसी प्रकार छिटक रही थी जैसी जेल में छिटकती है।

नित्य की भाँति पाल ने चाय पी ली थी, बिसकुट खा लिए थे। अब वह दूर-दूर के ताजे समाचार देख रहा था। उसके ऊपरी व्यवहार से दूसरे दिन से कोई अंतर नहीं दिखता था। पर माँ की दृष्टि ने कुछ अंतर अवश्य लक्षित कर लिया। आज जलपान के उपरांत वह नित्य की भाँति ऊपर, अपने कमरे में नहीं गया, किवाड़ नहीं बंद किए। उसने कमरे में बैठे-बैठे कोई समाचार नहीं पूछा, केवल उस पत्र के ठीक ठीक पहुँचाए जाने की बात भर पूछी, ऐसा क्यों? वह एक प्याला लिए हुए पाकशाला में चली गई। वहाँ से लौटकर प्याला टेबुल पर रख दिया और खड़ी हो गई।

'पाल'—उसने कहा।—'मैंने ठीक उसीके हाथों में पत्र दे दिया

था। वह उस समय बड़े ठाट से बगीचे में घूम रही थी।'

'बहुत अच्छा।'—उसने समाचार पत्र पर से बिना दृष्टि उठाए ही उत्तर दे दिया।

माँ वहाँ से हटना नहीं चाहती थी। उसकी अंतरात्मा उसे बातें करने के लिए बाध्य कर रही थी। उसकी इच्छा अपने पुत्र की इच्छा से भी अधिक प्रबल थी। उसकी दृष्टि प्याले के ऊपर चित्रित जापान के जंगली दृश्य पर गई, उसका रंग फीका पड़ गया था। इसके बाद उसने फिर वही नीरस कथा छेड़ दी।

'वह बगीचे में थी। वह बहुत तड़के उठती है। मैं सीधे उसके पास चली गई। मैंने उसे पत्र दे दिया। किसीने मुझे देखा तक नहीं। उसने पत्र को भली भाँति देखा और फिर मेरे ऊपर दृष्टिपात किया। परंतु, इतने पर भी उसने पत्र खोला नहीं। मैंने उससे पूछा—'इसका उत्तर, शायद नहीं जायगा।' इतना कहकर मैं चलने के लिए घूम गई। इसी समय उसने कहा—'ठहर जाओ।' उसने पत्र को खोला, इस प्रकार मानों उसमें कोई गुप्त बात न रही हो। पर तुरंत ही उसका मुख पत्र के कागज की भाँति सफेद हो गया, फक्क हो गया। उसने कहा—'जाओ, चली जाओ। बस, सलाम।'

'बस, अब रहने दो!'—पाल ने जोर से कहा,—उसी प्रकार सिर झुकाए हुए। पर माँ स्पष्ट देख रही थी कि उसके नेत्र चंचल हो रहे हैं, और उसका मुख बर्फ की भाँति सफेद हो गया है, ठीक एगनेस की भाँति। माँने समझा कि पाल बेहोश हो रहा है, पर दूसरे ही क्षण उसका मुख रक्त के संचार से लाल हो गया,

और माँ ने निश्चिंतता की साँस ली। इस भयानक क्षण का उसने शांति के साथ सामना किया। उस समय उसका हृदय कुछ और ही कहने के लिये घुट रहा था, कम-से कम इतना कह देने के लिये कि—'देखो पाल, तुमने क्या किया। तुमने व्यर्थ ही अपने और साथ ही मेरे हृदय पर भी कैसा आघात किया!' किंतु उसी क्षण उसने सिर उठाकर ऊपर देखा, उसका सिर किसी आवेश से हिल रहा था, शायद इसलिए कि मुख पर छाया हुआ वासना का रक्त उतर जाय। वह माँ को घूर रहा था। उसने रूखे स्वर में कहा—

'बस, इतना ही बहुत है। सुन रही हो? इतना ही पर्याप्त है। मैं अब इस विषय में एक शब्द भी नहीं सुनना चाहता। मुझसे अब कुछ मत कहो—नहीं तो मैं वही करूँगा, जिसके लिए पिछली रात तुमने मुझे डराया था। मैं चला जाऊँगा।'

वह झटके से उठकर खड़ा हो गया और अपने कमरे में जाने के बदले फिर मकान से बाहर चला गया। माँ पाकशाला में चली गई, उसके काँपते हुए हाथों म अभी तक चाय का प्याला वर्तमान था। उसने प्याला टेबुल पर रख दिया और अँगीठी के पास झुककर बैठ गई। उसका हृदय टुकड़े टुकड़े हो चुका था। वह समझ गई कि आज पाल सदा के लिए विमुख होकर चला गया है। अब वह कभी नहीं लौटेगा और यदि लौटा भी तो वह उसका पाल न होगा, वरन् वह अपनी वासनाओं से वैसा ही विचित्र जान पड़ेगा जैसे कोई चोर सतृष्ण नेत्रों से तारों को देखता हुआ पाप-कर्म में प्रवृत्त होते समय दिखाई पड़ता है।

पाल की अवस्था उस समय ऐसी प्रतीत हो रही थी जैसे कोई भय से ग्रस्त होकर घर से भागता है। उसने अपने कमरे में जाने का कार्य बचाने के लिए ही बाहर जाने का कष्ट उठाया था, उसे अपने कमरे में जाने में भय सा मालूम हो रहा था—शायद इस बात से कि कहीं एगनेस, निराश एगनेस, उसका पत्र हाथ में लिए उसके शयनागर में छिपकर बैठी न हो। वह अपने मकान से भागा तो था अपनी अंतरात्मा से छिपने के लिए, पर आज वह अपने मनोविकारों के वशीभूत था, बड़ी शीघ्रता से चला जा रहा था। पिछली रात की प्रचंड वायु के झकोरों ने भी उसे इतनी तेजी से नहीं दौड़ाया था। वह बिना किसी निश्चित ध्येय के ही मैदान पार कर गया। उसे ऐसा मालूम हो रहा था, मानों वह चेतनाशून्य शरीर से एगनेस के मकान की चहारदीवारी की ओर जा रहा हो। पर न जाने किसने उसे पुनः ढकेल कर गिर्जे के चबूतरे तक पहुँचा दिया। गिर्जे के चबूतरे पर निर्धन भिक्षुक और अशक्त बूढ़े बैठे थे, किसी को यह नहीं मालूम हुआ कि पाल वहाँ आया है, मालूम भी हो तो कैसे। वह वहाँ कुछ समय तक इन लोगों से अभिप्राय शून्य बातें करता रहा। पर थोड़ी ही देर बाद वह घाटी से होकर जानेवाली ढालुआ सड़क पर चला गया। न उसे पगडंडी दिखाई पड़ती, न हरी-भरी सुंदर भूमि। सारा संसार उसे चट्टानों और घाटियों से पूर्ण एक प्राचीन भग्नावशेष-सा प्रतीत हो रहा था।

वह घूम पड़ा, फिर गिर्जे के समीप आ पहुँचा। सारा गाँव

उसे उजड़ा सा दिखाई पड़ रहा था। कहीं कहीं पेड़ों पर पके फल लटक रहे थे। पावस के बरसाती बादल श्वेत भेड़ों के झुंड की भाँति चड़े जा रहे थे। किसी मकान में कोई बालक रो रहा था, दूसरे माकान से जुलाहे के करघे की खट खट ध्वनि आ रही थी। गाँव का चौकीदार—वहाँ का एक मात्र प्रबधक, शासक, सब कुछ—इधर से अपने कुत्ते के साथ आ निकला। वह पँचरँगे कपड़ों में सुशोभित था। मैली मखमल का कोट, लाल धारी का पतलून यही उसकी शानदार पोशाक थी। साथ में उसका भयानक, कुत्ता था। लाल-लाल आँखें, भयानक स्वरूप, गाँव के पशु, बालक, किसान सभी उससे डरते थे। चौकीदार अपने कुत्ते को सदैव अपने साथ रखता था। पादरी को देखते ही कुत्ता एक बार गुर्राया, पर मालिक का सकेत पाते ही उसने शात होकर सिर लटका लिया।

चौकीदार पाल के सामने आकर रुक गया और फौजी सलाम के पश्चात् शातिपूर्वक बोला—

'मैं प्रात काल ही उस रोगी के पास गया था। उसके ताप का मान ४ डिग्री था, और नाड़ी की धड़कन एक सै दो। मेरी समझ में उसकी कमर जकड़ गई है। उसकी पोती ने मुझसे कुनैन देने को कहा।'

गाँव का मुखिया ही सरकारी दवाखाने का प्रबधक था। उसका यह कर्तव्य होता था कि वह गाँव के मरीजों की देख भाल करे और उनकी औषधि की व्यवस्था कर दिया करे। यद्यपि इस कार्य

से उसका भार बहुत बढ जाता, पर वह इसे गौरव की दृष्टि से देखता। क्योंकि इससे अनायास ही उसे गाँव के हेल्थ-अफसर का पद भी प्राप्त हो जाता। गाँव में डाक्टर हफ्ते में दो बार आता था।

मैंने कहा—'मेरी राय में उसे किसी दूसरी ही औषधि की आवश्यकता है।' इसपर लड़की रोने लगी, पर! उसकी आँख से आँसू की एक बूँद भी न गिरी। 'मैं क्या उस बूढ़े के लिए जान दे दूँ?' उसने कहा—'तुम शीघ्र जाकर डाक्टर को बुला दो।' मैंने उससे कहा—'कल स्वयं ही डाक्टर आएगा, कल रविवार है। अगर तुम्हें अधिक शीघ्रता हो तो किसी को भेज दो, डाक्टर बुला लाए। बुड्ढा डाक्टर की फीस मजे में दे सकता है। जिन्दगी भर की कमाई क्या होगी?' क्या मेरा कथन ठीक नहीं था?'

गाँव का मुखिया गभीरतापूर्वक पाल के उत्तर की प्रतीक्षा कर रहा था, पर पाल चुपचाप अन्य-मनस्क सा होकर कुत्ते के पट्टे की ओर देख रहा था। उसके विचार उसी के ऊपर मँड़रा रहे थे।

'इसी प्रकार यदि हम अपनी आकांक्षाओं को भी बाँध सकते!'—इसके बाद उसने जोर से, किंतु उदासीनता से कहा—'हाँ, ठीक है। वह डाक्टर के लिए कल तक ठहर सकता है। पर शायद उसकी बीमारी ज्यों-की त्यों है?'

'यदि मान भी लें कि, वह बहुत अधिक बीमार था'—मुखिया ने पादरी की उदासीनता पर ध्यान न देते हुए जोर देकर कहा, 'तो एक आदमी जाकर डाक्टर को बुला लाता। इसके लिए कुछ खर्च

कर देने से वह मर तो जाता नहीं। पर उसकी पोती ने मेरी आज्ञा की अवहेलना की और मेरी बताई दवा भी नहीं दी।'

'उसे शीघ्र ही धार्मिक उपदेश सुन लेना चाहिए।'—पाल ने कहा।

'पर आपने मुझसे कहा था कि बीमार मनुष्य बिना उपवास किए भी उपदेश ले सकता है ?'

'ठीक है'—अंत में पादरी ने अधीर होकर कहा—'बूढ़े को दवा की आवश्यकता नहीं, इसीलिए उसने अपने दाँत जकड़ लिए हैं। वह दाँतों को इस प्रकार चलाता है, मानों उसे कुछ हुआ ही न हो।'

'और फिर'—मुखिया ने गौरवपूर्ण शब्दों में कहा—'उस छोकरी को मेरे ऊपर यह हुक्म चलाने का क्या हक है कि जाओ दौड़कर डाक्टर को बुला लाओ, मानों मैं उसका नौकर हूँ। कोई ऐसी भारी दुर्घटना तो थी नहीं कि डाक्टर दौड़ा आता, और फिर मुझे और भी तो काम करने हैं। मुझे शीघ्र ही नीचे, नदी को देखने जाना है, किसी ने जल की धारा में ऐसी जहरीली दवा डाल दी है कि मछलियाँ मरी जा रही हैं। अच्छा, बन्दगी।'

उसने पुन वही फौजी सलाम किया। वह कुत्ते को घसीटता हुआ चला गया। अबकी बार कुत्ता पादरी को देखकर गुर्राया नहीं, बल्कि अपने मालिक को सलाम करते देखकर उसने भी चलते समय एक बार उसकी ओर स्निग्ध दृष्टि से देख लिया।

इधर एटिओकस बूढ़े के पाप निवेदन का कुछ प्रबंध करने

के पश्चात् गिर्जे की खिड़की में बैठा हुआ पाल की प्रतीक्षा कर रहा था। पादरी को आते देख वह पुन भीतर चला गया और हाथ में चोगा लेकर उसकी राह देखने लगा। कुछ मिनटों में दोनों तैयार हो गए। पाल चोगा पहने हाथ में चाँदी की सुराही में तेल लिए खड़ा था। एटिओकस सिर से पैर तक लाल वस्त्रों से आच्छादित था। वह हाथ से कामदार छाता लेकर पाल के ऊपर लगाए हुए था। वह इस प्रकार छाता लगाए था कि पाल का चोगा और चाँदी की सुराही उसकी छाया के भीतर पड़ती थी। इस समय एटिओकस एक प्रकार के विशेष गौरव का अनुभव कर रहा था। वह समझता था कि मैं ही इन पवित्र पदार्थों का एक मात्र रक्षक हूँ। पर इस समय भी वह बूढ़ों के नम्रतामय मार्ग दान को देखकर अपनी मुसकुराहट नहीं रोक सका। इस छोटे से जुलूस को देखकर बच्चे पादरी की ओर झुकने के स्थान पर दीवार की ओर झुककर नमस्कार कर रहे थे। नवयुवक एंटिओकस के पीछे थे। एटिओकस घंटा बजा रहा था। घंटे की आवाज के साथ कुत्ते भूँकने लगे, जुलाहों के करघे रुक गए, स्त्रियाँ खिड़की से सिर बाहर निकालकर झाँकने लगीं; सारांश यह कि सारा गाँव उत्सुकता से पूर्ण हो गया।

दूसरी ओर से एक स्त्री सोते में से जल लिए आ रही थी। उसने जल-पात्र एक चट्टान पर रख दिया और झुककर खड़ी हो गई। पादरी का मुख-मंडल पीला पड़ गया। वह उसी क्षण पहचान गया कि यह एगनेस की नौकरानी है। किसी अज्ञात वेदना

से वह सिहर उठा। उसने चाँदी की सुराही को दोनों हाथों में कसकर इस प्रकार पकड़ा मानों उसे उठाने के लिए किसी की सहायता चाह रहा हो।

बूढ़े शिकारी के निवास स्थान पर पहुँचते-पहुँचते उन लोगों की भीड़ बड़ी हो गई। उसकी झोपड़ी सड़क से कुछ हटकर घाटी की ओर दो खंड ऊँची बनी हुई थी। झोंपड़ी का दरवाजा खुला पड़ा था। पाल ने पहुँचते ही समझा कि बूढ़ा कपड़े पहनकर नीचे-वाले कमरे में चटाई पर पड़ा होगा। वह उसके स्वास्थ्य-लाभ की प्रार्थना करता हुआ मकान में घुस गया। एंटिओकस ने छाता बंद कर लिया और जोर से घंटा बजाया, जिसमें लड़के भाग जायँ, मानों मक्खियाँ थीं कि उड़ जातीं। अंदर जाते ही पाल ने देखा कि कमरे में कोई नहीं है और चटाई खाली पड़ी है, शायद बूढ़े ने ऊपर जाने की इच्छा प्रगट की हो अथवा लोगों ने उसे मरणासन्न अवस्था में ले जाकर बिस्तरे पर सुला दिया हो। पादरी ने भीतरवाले कमरे का दरवाजा खोला तो वह भी खाली पड़ा था। वह निराश होकर फिर दरवाजे पर चला आया। उसकी पोती हाथ में एक बोतल लिए चली आ रही थी। वह दवा लाने गई थी।

'तुम्हारे बाबा कहाँ हैं ?'—पाल ने पूछा। ज्यों ही वह मकान के अंदर गई, उसे खाली देखकर चीख उठी। वह इधर से उधर झपटकर कमरों को देखने लगी। उधर लड़के मकान में बलपूर्वक घुसने का प्रयत्न कर रहे थे और एंटिओकस उन्हें रोक रहा था। अंत में पाल ने डाँटकर उन्हें चले जाने का आदेश दिया।

स्वयं उठकर ऊपर चला गया है क्योंकि उसकी इच्छा पहाड़ी पर मरने की है। ज्वर की तीव्रता और वायु के प्रकोप के कारण उसे इतना बल आ गया था कि वह उठकर वहाँ तक बेधड़क चला गया। उसके संबंधी उसके साथ गए हैं और उसे उस स्थान पर सही-सलामत देख आए हैं।

'अच्छा बैठो, कुछ खा लो।'—पादरी ने लड़के से कहा।

एटिओकस उसके आज्ञानुसार टेबुल पर बैठ तो गया—पर इसके पूर्व ही उसने एक संदिग्ध दृष्टि से माँ की ओर देखा। माँ ने उसे उस आज्ञा का पालन करने का संकेत किया—इससे उसे ऐसा अनुभव हुआ, मानों वह भी उस परिवार का एक अंग हो गया हो। उस अबोध बालक को यह ज्ञान नहीं था कि बूढे निकोडेमस की बात समाप्त हो जाने पर उन दोनों के अकेले रह जाने का भय था। माँ उस समय अपने बच्चे की चंचल आँखों में धुँधले विचारों की छाया देखने का प्रयत्न कर रही थी और पाल यह विचार रहा था कि माँ अपनी सतर्कता से मेरी अंतर्वेदना बढा रही है। माँ ने कुछ न किया, उसने चुपचाप टेबुल पर भोजन सजा दिया। फिर वह बाहर चली गई—दुबारा लौटकर नहीं आई।

सूर्य सिर के ऊपर आ गए, साथ ही हवा भी चलने लगी। पर वायु इस समय कोमल, मनोहर और शांत थी। कमरे की खिड़कियाँ और द्वार सूर्य की रश्मि से आलोकित थे। वृक्षों पर थिरकती हुई पत्तियाँ प्रकाश में झिलमिला रही थीं। हलके बादल तितर-बितर होकर वीणा की तंत्रियों की भाँति खिंच रहे थे—वायु

उन तारों को छेड़कर सुंदर गान निकाल रही थी।

किसी ने द्वार खटखटाकर इस सुंदर भावना को छिन्न भिन्न कर दिया—एटिओकस दरवाजा खोलने दौड़ गया। देखा कि एक भयभीत विधवा द्वार पर खड़ी है, पादरी के दर्शनों की याचना कर रही है। वह एक सुंदर बालिका का हाथ कसकर पकड़े हुए है। एक लाल रुमाल बच्चे के गले में बँधा है। ज्यों-ज्यों वह उसके हाथों से छूटने का प्रयत्न करती, त्यों त्यों वह विधवा उसे क्रूरता से डाँटती। 'यह लड़की बीमार है।'—विधवा ने कहा—'मैं चाहती हूँ कि पादरी साहब इसको झाड़ दें, तो बड़ा अच्छा हो। इसे नजर लग गई है, वह हट जाय।'

एटिओकस चक्कर में पड़ गया। वह अधखुले किवाड़ पकड़े खड़ा था। इन कार्यों के लिए पादरी को कष्ट देने का यह समय नहीं था। अपनी स्वतंत्रता में मलग्न पर विफल—वह मनोहर बालिका इस समय दया और भय दोनों का पात्र हो रही थी।

'इसे भूत लग गया है, समझते हो'—कहते कहते विधवा का मुख लज्जा से कुछ कुछ लाल हो गया। एटिओकस ने तुरत मार्ग छोड़ दिया—साथ ही उस बालिका को भीतर खींच लाने में उसे सहायता भी दी।

पीछे यह ज्ञात होने पर कि वह बालिका इधर तीन दिनों से यहाँ-वहाँ जाया करती थी, पर उसका व्यवहार नित्य उसी प्रकार का होता था, उसने उसका कंधा पकड़ लिया और उसके नेत्रों तथा मुख की परीक्षा की।

'यह देर से धूप में तो नहीं थी ?'—उसने पूछा।

'ऐसी बात तो नहीं है'—लड़की की माँ ने धीरे से कहा—'मैं समझती हूँ इसे भूत लग गया है।' उसने आगे खिसकते हुए कहा—'मेरी बच्ची अब अकेली नहीं है !'

पाल आवश्यक सामग्रियाँ जुटाने के लिये उठा। पर उसने इस कार्य के लिए एटिओकस को भेजा। धर्म-ग्रंथ खोलकर टेबुल पर रख दिया गया। अपनी माँ की बाहों से आवृत्त बालिका के ऊष्ण मस्तक पर हाथ रखकर वह जोर-जोर से पाठ करने लगा।

एटिओकस ने धर्म-ग्रथ के पाँच पन्ने उलट दिए। पर उसकी दृष्टि पाल के दूसरे हाथ पर थी—उसका हाथ उस समय ग्रथ के उस स्थान पर था जहाँ लिखा था—'हे भगवन मैं तेरी सेवा किस प्रकार कर सकता हूँ ? मैं किस योग्य हूँ ?' उसने शीघ्रता से आँख उठाकर ऊपर देखा—पाल की आँखों में आँसू की बूँदें छलछला रही थीं। वह किसी भाव के आवेश में आकर उस स्त्री के बगल में झुक गया—उसके हाथ अभी तक पुस्तक पर ही थे। वह अपने मन में सोच रहा था—

'सचमुच ही 'वह' एक महान आत्मा है। परब्रह्म का नाम लेते समय वह रो पड़ता है।' वह फिर पाल की ओर आँखें नहीं कर सका। उसने अपने खाली हाथ से उस चचल बालिका की कमीज खींचकर उसे शात किया। पर यह कार्य वह पूर्ण निर्भय होकर न कर सका—उसे भय था कि उसके ऊपर से उतरकर भूत कहीं मेरे शरीर में न प्रविष्ट हो जाय।

'मुवही' लड़की ने हिलना-डोलना बंद कर दिया। वह सीधी होकर तनकर खड़ी हो गई। सिर झुक गया, कोमल ठोड़ी रूमाल की गाँठ पर आकर रुक गई। पादरी के शब्द, वायु की हरहराहट, पेड़ों की मरमराहट उसे स्वस्थ कर रही थी। एकाएक उसने अपनी कमीज एंटिओकस के हाथ से छुड़ा ली और उसके पास ही घुटनों के बल गिर पड़ी। उसके सिर पर रखा हुआ पाल का हाथ तना रह गया। वह पढ़ता ही चला गया—'परब्रह्म परमेश्वर . . . '

उसने पढ़ना बंद कर दिया और हाथ समेट लिया। बालिका अब एकदम शांत हो गई थी। उसने चंचलतापूर्वक एंटिओकस की ओर देखा—पाठ समाप्त हो जाने पर वहाँ बिलकुल शांति छा गयी थी। बाहर के सगतराशों की खट्ट खट्ट और पेड़ों की सरसराहट उस स्निग्ध शांति को भंग कर रही थी।

पाल को इस समय महान् वेदना हो रही थी। उस अबोध बालिका के दुःख के लिए नहीं, वरन् इसलिए कि वह प्रार्थना तो कर रहा था, पर उसका उसमें विश्वास न था। उसके सामने एंटिओकस और वह विधवा रमणी थी। रसोई घर के द्वार पर उसकी माँ थी। सभी घुटने टेके बैठे थे। वह जानता था कि उनका नमस्कार उसके पतन का संकेत कर रहा है। जब वह विधवा उसके चरण चूमने को आगे बढ़ी तो उसने अपने पैर तेजी से खींच लिए। उसे भय था कि माँ सब कुछ जानती है—कहीं वह मेरे विषय में कोई बुरी कल्पना न करने लगे। विधवा

ने जिस समय सिर ऊँचा किया उस समय उसकी करुणापूर्ण मुद्रा देखकर लड़के हँसने लगे। पाल का दुख भी उस समय तक कुछ कम हो चुका था।

'अच्छा उठो'—उसने कहा—'अब यह ठीक हो गई।'

सब लोग उठकर खड़े हो गए। एंटिओकस द्वार खोलने दौ गया, क्योंकि कोई दूसरा मनुष्य द्वार खटखटा रहा था। यह गाँ का मुखिया था, उसके साथ कुत्ता भी था एंटिओकस प्रसन्नता खिल उठा—

'अभी एक बड़ी विचित्र बात हुई है। उन्होंने 'तिना माशा' के सिर से भूत उतार दिया।'

पर गाँव का मुखिया इन बातों में विश्वास नहीं रखता था। वह दरवाजे से हट कर खड़ा हो गया और बोला—'तो हम लोग भूतों के जाने के लिए मार्ग छोड़ दें।'

'भूत अब तुम्हारे कुत्ते के ऊपर चढ़ बैठेगा'—एंटिओकस ने झुँझलाकर कहा।

'दूसरा भूत उसके ऊपर कैसे सवारी कर सकता है, उसके शरीर में तो पहले से ही भूत चढ़ा बैठा है'—मुखिया ने उत्तर दिया। यद्यपि उसने यह हँसी में ही कहा था पर सो से उसकी गंभीर आकृति में कोई अंतर नहीं आने पाया। कमरे में जाकर उसने पादरी को नमस्कार किया, और उस स्त्री को बिना देखे ही बोला—

'क्या मैं आप से एकांत में कुछ कह सकता हूँ?'—स्त्री उठ कर रसोई घर में चली गई और एंटिओकस पूजा का सामान

छेकर ऊपर उन्हें यथास्थान रखने चला गया। जब वह ऊपर से लौटा तो आवेग में होते हुए भी मुखिया की बात सुनने के लिये छिप रहा। वह कह रहा था—

'मैं इस कुत्ते को यहाँ ले आने के लिए आपसे क्षमा चाहता हूँ, पर वह बहुत ही सीधा है और आप लोगों को कष्ट नहीं देगा। क्योंकि वह जानता है कि मैं इस समय कहाँ हूँ।' (और कुत्ता भी वस्तुत आँखें नीची किए चुपचाप खड़ा पूँछ हिला रहा था।) 'मैं बूढ़े निकोडेमस के विषय में आपसे कुछ कहने आया हूँ। वह फिर अपनी झोपड़ी में आ गया है। वह चाहता है कि आप कृपा कर उसे उपदेश देने के लिए एक बार फिर कष्ट करें। मेरी समझ में '

'धन्य भगवन्'—पादरी बीच ही में बोल उठा, वह बालकों की तरह प्रसन्न वदन हो गया। क्योंकि पहाड़ी पर जाने में कुछ समय बिताकर वह अपने दु:खमय विचारों को कुछ समय के लिए भुला सकता था।

'हाँ, हाँ,'—वह शीघ्रता से बोला—'पर मुझे एक घोड़े की आवश्यकता पड़ेगी। क्यों जी, उधर का रास्ता कैसा है ?'

'मैं घोड़े और रास्ते का प्रबन्ध देख लूँगा।' मुखिया ने कहा—वह मेरा काम है।'

पादरी ने उसे गिलास में शराब दी। अपने सिद्धांत के कारण मुखिया किसी के यहाँ कभी कुछ खाता पीता नहीं था। यहाँ तक कि पानी भी नहीं पीता था। पर इस अवसर पर वह पादरी के

आग्रह को टाल न सका, क्योंकि वह इसमें एक प्रकार के गौरव का अनुभव कर रहा था। उसने शराब को गटागट गले के नीचे उतार दिया। इसके बाद फौजी सलाम करके पादरी को धन्यवाद दिया। कुत्ता भी दुम हिलाते हुए उठ खड़ा हुआ और पाल की ओर देखने लगा—उसके नेत्रों में भी मित्रता के भाव झलक रहे थे।

एंटिओकस दरवाजे पर ही खड़ा था। वह किवाड़ खोलकर भीतर आया। वह अन्य आदेशों की प्रतीक्षा में खड़ा हो गया। उसे इस बात से दुख हो रहा था कि माँ व्यर्थ ही पीछे वाले कमरे में पाल की प्रतीक्षा कर रही है। पाल के लिये कमरा साफ किया गया था, टेबुल पर गिलास रकाबियाँ सजा कर रखी गई थीं। पर कर्तव्य भी तो कोई चीज है। पाल के लिए आज भोजन पर बैठना तक असभव हो गया था।

'मुझे क्या तयारी करनी होगी?'—उसने भी मुखिया की ही तरह पूछा—'छाता ले चलना होगा?'

'तुम क्या सोच रहे हो? मैं तो घोड़े पर जाऊँगा। तुम्हारे आने की बिलकुल आवश्यकता नहीं।'

'नहीं, मैं भी साथ ही चला चलूँगा, मैं थकूँगा नहीं'—लड़के ने कहा, और तुरत चलने के लिए तैयार भी हो गया। हाथ में एक छोटा-सा बक्स था और उसी पर चोगा भी लटक रहा था। उसकी इच्छा तो छाता भी ले जाने की थी, पर पादरी की आज्ञा नहीं थी।

एंटिओकस गिर्जे के सामने आकर पादरी की प्रतीक्षा करने लगा। गिर्जे के चौतरे पर खेलनेवाले गंदे और झगड़ालू लड़के

इसके चारों ओर एकत्र हो गए और उसे उत्सुक नेत्रों से देखने लगे। पर सभी उससे कुछ दूर हटकर खड़े थे। इसका कारण इस बक्स की प्रतिष्ठा भी थी और कुछ-कुछ भय भी था।

'और नजदीक बढ चलो'—एक ने कहा।

'खबरदार, दूर ही रहना, नहीं तो मुखिया के कुत्ते को तुम्हारे ऊपर उसका दूँगा।'—एंटिओकस ने डाँटकर कहा।

'मुखिया का कुत्ता ? हाँ, हाँ उसके डर के मारे तुम मीलों दूर से ही आगे बढने की हिम्मत नहीं करते।'—लड़कों ने कहा।

'मेरी हिम्मत नहीं पड़ती ?'—एंटिओकस ने आँखें तरेर-कर कहा।

'हाँ, तुम्हारी हिम्मत नहीं पड़ती। तुम समझते हो कि मैं ईश्वर से भी बड़ा हूँ। इसीलिए न कि इस समय आपके हाथ में पूजा की सामग्री है।'

'अगर तुम्हारे स्थान पर मैं होता'—एक शरारती लड़के ने कहा—'तो बकस को फेंक देता और तेल को उड़ेल देता।'

'भाग जाओ दुष्टो। नहीं तो निना माशा के सिर से उतरा हुआ भूत तुम्हारे ही सिर चढवा दूँगा।'

'क्या कहा ? भूत ?'—सब लड़के एक साथ ही चिल्ला उठे।

'हाँ'—एंटिओकस ने शांत भाव से कहा—'आज ही दोपहर को पादरी साहब ने निना माशा के सिर से भूत उतारा है। देखो, वह यहीं आ रही है।'

यही विधवा लड़की को हाथ से मार्ग बतलाती हुई चली आ

रही थी। सभी लड़के उसकी ओर दौड़ पड़े। थोड़ी देर में उसके सिर से भूत उतरने की बात गाँव भर में फैल गई। पादरी के आते ही फिर पहले का सा दृश्य उपस्थित हो गया। वहाँ के निवासी गिर्जे के चौतरे के चारो ओर एकत्र हो गए। निना माशा को माँ ने चौतरे पर बैठा दिया। भूरे रग की वह सुदर बालिका, हरा रूमाल सिर पर बाँधे चुपचाप आराध्य मूर्ति की भाँति बैठी थी।

स्त्री रोने लगी। सभी उस बालिका का स्पर्श करने को लालायित थे। इसी बीच गाँव का मुखिया अपने कुत्ते के साथ वहाँ आ पहुँचा। पादरी घोड़े पर चढ बैठा और आँगन को पार कर गया। भीड उसके चारों ओर एकत्र हो गई, जनता पीछे पीछे चलने को तयार खड़ी थी। वह हाथ हिलाकर और चारों ओर घूमकर सबकी अभ्यर्थना स्वीकार करने लगा। पर इस समय भी वर्तमान तरद्दुद की अपेक्षा उसे पूर्व घटना अधिक दुख दे रही थी। जब वह पहाड़ी की चोटी पर पहुँच गया, तो घोड़े की लगाम खींची। वह कुछ गुनगुना-सा रहा था। उसने एकाएक घोड़े को एड़ जमाई और नीचे की ओर उतरने लगा। उसे इच्छा हो रही थी कि मैं जल्दी से कहीं दूर जाकर, घाटी के किसी शून्य स्थान में अपने को छिपा दूँ—ऐसी जगह जो सबकी दृष्टि से परे हो।

मध्याह्न के सूर्य का प्रखर प्रकाश झाड़ियों पर फैला हुआ था। वायु मन को प्रफुल्लित कर रहा था। गाँव का मुखिया अपने कुत्ते को लिए हुए और एटिओकस बकस लादे पादरी का अनुगमन कर रहे थे। एकाएक पाल ने अपना घोड़ा रोक दिया और चुप·

चाप उन लोगों के साथ साथ चलने लगा। उस समय तक लोग नदी के पार पहुँच गए थे। ऊपर की चढाई थी, पर मार्ग समतल था। सिर्फ कुछ कटीले झाड़ और रोड़े ही ठोकर हो रहे थे। वायु सुन्दर पुष्पों से सुरभि चुराकर बह रही थी, वह पृथ्वी पर मानों पुष्पों को सचित करके बिखेर रही हो।

ऊपर चढकर जब वे लोग पहाड़ी की ओर मुड़े तो गाँव उन लोगों की दृष्टि से ओझल हो गया। मार्ग में रोड़ों, चट्टानों और सामने शून्य क्षितिज के अतिरिक्त और कुछ नहीं दिखाई देता था। हाँ, बीच बीच में कुत्ते के भूँक उठने से, उसकी प्रतिध्वनि अन्य कुत्तों की ध्वनि का भान करा देती थी।

जब वे लोग आधी दूर पहुँच गए तो पाल ने चाहा कि एटिओकस भी घोड़े पर उसके पीछे बैठ जाय। पर उसने इसे स्वीकार नहीं किया। किन्तु बहुत कहने सुनने पर बक्स पाल को दे दिया। अब उसे मुखिया से बात करने का पूर्ण अवसर प्राप्त हो गया। उसने कई बार बात करने के लिए प्रयत्न भी किया, पर वह क्षणभर के लिए भी अपने काल्पनिक गौरव को भूल न सका। रह रहकर वह अपनी टोपी कभी नीची कभी ऊँची करके बडे ध्यान से चारो ओर देखता मानो सारा ससार उसके अधीन हो, और उसके ऊपर कोई आपत्ति घहराना चाहती हो। बीच बीच में उसे देखकर मुखिया का कुत्ता रुककर सिर से पैर तक काँप जाता। पर भाग्य से दोपहर का समय था, वहाँ दूर पर चरते हुए ढोरों और नील गगन के अतिरिक्त धरा ही क्या था!

रही थी। सभी लड़के उसकी ओर दौड़ पड़े। थोड़ी देर में उसके सिर से भूत उतरने की बात गाँव भर में फैल गई। पादरी के आते ही फिर पहले का-सा दृश्य उपस्थित हो गया। वहाँ के निवासी गिर्जे के चौतरे के चारो ओर एकत्र हो गए। निना माशा को माँ ने चौतरे पर बैठा दिया। भूरे रग की वह सुंदर बालिका, हरा रूमाल सिर पर बाँधे चुपचाप आराध्य मूर्ति की भाँति बैठी थी।

स्त्री रोने लगी। सभी उस बालिका का स्पर्श करने को लालायित थे। इसी बीच गाँव का मुखिया अपने कुत्ते के साथ वहाँ आ पहुँचा। पादरी घोड़े पर चढ बैठा और आँगन को पार कर गया। भीड उसके चारों ओर एकत्र हो गई, जनता पीछे पीछे चलने को तयार खड़ी थी। वह हाथ हिलाकर और चारों ओर घूमकर सबकी अभ्यर्थना स्वीकार करने लगा। पर इस समय भी वर्तमान तरद्दुद की अपेक्षा उसे पूर्व घटना अधिक दुख दे रही थी। जब वह पहाड़ी की चोटी पर पहुँच गया, तो घोड़े की लगाम खींची। वह कुछ गुनगुना सा रहा था। उसने एकाएक घोड़े को एड़ जमाई और नीचे की ओर उतरने लगा। उसे इच्छा हो रही थी कि मैं जल्दी से कहीं दूर जाकर, घाटी के किसी शून्य स्थान में अपने को छिपा दूँ—ऐसी जगह जो सबकी दृष्टि से परे हो।

मध्याह्न के सूर्य का प्रखर प्रकाश झाडियों पर फैला हुआ था। वायु मन को प्रफुल्लित कर रहा था। गाँव का मुखिया अपने कुत्ते को लिए हुए और एंटिओकस बकस रादे पादरी का अनुगमन कर रहे थे। एकाएक पाल ने अपना घोड़ा रोक दिया और चुप-

साथ उन लोगों के साथ साथ चलने लगा। उस समय वह लोग नदी के पार पहुँच गए थे। ऊपर को चढ़ाई थी, पर मार्ग समतल था। सिर्फ कुछ कटीले झाड़ और रोड़े ही ठोकर दे रहे थे। वायु सुन्दर पुष्पों से सुरभि चुराकर बह रही थी, वह पृथ्वी पर मानों पुष्पों को सचित करके निखेर रही हो।

ऊपर चढ़कर जब ये लोग पहाड़ी की ओर मुड़े तो गाँव उन लोगों की दृष्टि से ओझल हो गया। मार्ग में रोड़ों, चट्टानों और सामने शून्य क्षितिज के अतिरिक्त और कुछ नहीं दिखाई देता था। हाँ, बीच-बीच में कुत्ते के भूँक उठने से, उसकी प्रतिध्वनि अन्य कुत्तों की ध्वनि का भान करा देती थी।

जब वे लोग आधी दूर पहुँच गए तो पाल ने चाहा कि एटिओक्स भी घोड़े पर उसके पीछे बैठ जाय। पर उसने इसे स्वीकार नहीं किया। किन्तु बहुत कहने सुनने पर उन्स पान को दे दिया। अब उसे मुखिया से बात करने का पूर्ण अवसर प्राप्त हो गया। उसने कई बार बात करने के लिए प्रयत्न भी किया, पर वह क्षणभर के लिए भी अपने काल्पनिक गौरव को भूल न सका। रह रहकर वह अपनी टोपी कभी नीची कभी ऊँची करके बड़े ध्यान से चारों ओर देखता मानो सारा संसार उसके अधीन हो, और उसके ऊपर कोई आपत्ति घहराना चाहती हो। बीच बीच में उसे देखकर मुखिया का कुत्ता रुककर सिर से पैर तक काँप जाता। पर भाग्य से दोपहर का समय था, वहाँ दूर पर चरते हुए ढोरों और नील गगन के अतिरिक्त धरा ही क्या था।

अब वे लोग चौरस जमीन पर पहुँच गए। झरना हर हर करते हुए गिर रहा था। एटिओकस उस स्थान को पहिचान गया क्योंकि वह एक बार अपने पिता के साथ वहाँ जा चुका था। पाल कुछ घुमाव के मार्ग से जा रहा था। एटिओकस उस मार्ग को पसद नहीं करता था। पर कर्तव्य से लाचार होकर उसे उसी मार्ग से जाना पड़ा। थोड़ी देर में वे लोग बूढे की झोपड़ी के समीप पहुँच गए।

यह झोपड़ी बड़ी विचित्रता से बनी थी। तीन ओर ऊँची ऊँची पत्थर की चट्टानें थीं। मजबती की दृष्टि से उनपर और भी ढोके लाद दिए गए थे। बीच में लट्ठों से मकान बना था। दीवारों के कारण मकान में से तीन ओर तो कुछ भी दिखाई नहीं पड़ता था, पर चौथी ओर खुला होने के कारण नील गगन और हरे-भरे मैदान सागर का सा सुदर दृश्य उपस्थित करते थे।

इन लोगों के पैरों का शब्द सुनते ही बूढे के पौत्र ने दरवाजे में से घुघराले बालों से आभूषित मुखड़ा बाहर निकाला।

'वे लोग आ रहे हैं'—एटिओकस ने सूचना दी।

'कौन लोग ?'

'पादरी और मुखिया।'

लड़का झपटकर बाहर निकल आया। वह इस बात पर बिगड़ रहा था कि मुखिया सब मामलों में क्यों दखल दिया करता है।

'मैं आज उसकी हड्डी तोड़ दूँगा।'—वह बिगड़कर बोला।

पर जब उसने सामने से कुत्ते को आते देखा तो पीछे हट गया। इधर से बूढ़े का कुत्ता भी अतिथियों का स्वागत करने के लिये निकल आया।

एटिओकस ने फिर बक्स ले लिया, और पास की एक चट्टान पर बैठ गया। चारों ओर बकरी की खालें सूख रही थीं। कुछ काली, कुछ भूरी, कुछ सुनहरी और कुछ रुपहली थीं। झोपड़ी के भीतर उसी प्रकार की बहुत सी खालों के ढेर पर बुड्ढा सो रहा था। सफेद बालों और दाढ़ी से घिरे मुख पर पड़ी हुई मृत्यु के आगमन की सूचना देनेवाली छाया स्पष्ट दिखाई पड़ रही थी। पादरी झुककर उससे कुछ पूछ रहा था। पर मृत्यु के पंजे में फँसे हुए उस बूढ़े ने कोई उत्तर नहीं दिया। आँखें बंद किये वह बिस्तरे पर पड़ा रहा। उसके काँपते हुए ओठों पर रक्त की गति झलक रही थी। थोड़ी ही दूर पर दूसरी चट्टान पर गाँव का मुखिया भी बैठा था—एक पैर पर दूसरा पैर रक्खे हुए। उसकी आँखें भी झोपड़ी की ओर लगी थीं। वह क्रुद्ध हो रहा था—क्योंकि मरते समय भी वह पादरी को अपनी अंतिम अभिलाषा नहीं बतला रहा था, नियम-भंग कर रहा था। एटिओकस ने जब दृष्टि घुमाई तो उसके मन में यह विचार आया कि अगर मुखिया इस गुस्ताख बूढ़े पर उसी तरह अपना कुत्ता छोड़ देता—जैसे वह चोर के ऊपर छोड़ा करता है, तो कैसी अच्छी बात होती।

अब वे लोग चौरस जमीन पर पहुँच गए। झरना हरहर करते हुए गिर रहा था। एंटिओकस उस स्थान को पहिचान गया क्योंकि वह एक बार अपने पिता के साथ वहाँ जा चुका था। पाल कुछ घुमाव के मार्ग से जा रहा था। एंटिओकस इस मार्ग को पसंद नहीं करता था। पर कर्तव्य से लाचार होकर उसे इसी मार्ग से जाना पड़ा। थोड़ी देर में वे लोग बूढ़े की झोपड़ी के समीप पहुँच गए।

यह झोपड़ी बड़ी विचित्रता से बनी थी। तीन ओर ऊँची-ऊँची पत्थर की चट्टानें थीं। मजबूती की दृष्टि से उनपर और भी ढोंके लाद दिए गए थे। बीच में लट्ठों से मकान बना था। दीवारों के कारण मकान में से तीन ओर तो कुछ भी दिखाई नहीं पड़ता था, पर चौथी ओर खुला होने के कारण नील गगन और हरे-भरे मैदान सागर का सा सुंदर दृश्य उपस्थित करते थे।

इन लोगों के पैरों का शब्द सुनते ही बूढ़े के पौत्र ने दरवाजे में से घुघराले बालों से आभूषित मुखड़ा बाहर निकाला।

'वे लोग आ रहे हैं'—एंटिओकस ने सूचना दी।

'कौन लोग ?'

'पादरी और मुखिया।'

लड़का झपटकर बाहर निकल आया। वह इस बात पर बिगड़ रहा था कि मुखिया सब मामलों में क्यों दखल दिया करता है।

'मैं आज उसकी हड्डी तोड़ दूँगा।'—वह बिगड़कर बोला।

पर जब उसने सामने से कुत्ते को आते देखा तो पीछे हट गया। उधर से बूढ़े का कुत्ता भी अतिथियों का स्वागत करने के लिये निकल आया।

एंटिओकस ने फिर बक्स ले लिया, और पास की एक चट्टान पर बैठ गया। चारों ओर बकरी की खालें सूख रही थीं। कुछ काली, कुछ भूरी, कुछ सुनहरी और कुछ रुपहली थीं। झोंपड़ी के भीतर उसी प्रकार की बहुत सी खालों के ढेर पर बुड्ढा सो रहा था। सफेद बालों और दाढ़ी से घिरे मुख पर पड़ी हुई मृत्यु के आगमन की सूचना देनेवाली छाया स्पष्ट दिखाई पड़ रही थी। पादरी झुककर उससे कुछ पूछ रहा था। पर मृत्यु के पंजे में फँसे हुए उस बूढ़े ने कोई उत्तर नहीं दिया। आँखें बंद किये वह बिस्तरे पर पड़ा रहा। उसके काँपते हुए ओठों पर रक्त की गति झलक रही थी। थोड़ी ही दूर पर दूसरी चट्टान पर गाँव का मुखिया भी बैठा था—एक पैर पर दूसरा पैर रक्खे हुए। उसकी आँखें भी झोंपड़ी की ओर लगी थीं। वह क्रुद्ध हो रहा था—क्योंकि मरते समय भी वह पादरी को अपनी अंतिम अभिलाषा नहीं बतला रहा था, नियम भंग कर रहा था। एंटिओकस ने जब दृष्टि घुमाई तो उसके मन में यह विचार आया कि अगर मुखिया इस गुस्ताख बूढ़े पर उसी तरह अपना कुत्ता छोड़ देता—जैसे वह चोर के ऊपर छोड़ा करता है, तो कैसी अच्छी बात होती!

अब वे लोग चौरस जमीन पर पहुँच गए। झरना हर हर करते हुए गिर रहा था। एंटिओकस उस स्थान को पहिचान गया क्योंकि वह एक बार अपने पिता के साथ वहाँ जा चुका था। पाल कुछ घुमाव के मार्ग से जा रहा था। एंटिओकस उस मार्ग को पसंद नहीं करता था। पर कर्तव्य से लाचार होकर उसे उसी मार्ग से जाना पड़ा। थोड़ी देर में वे लोग बूढ़े की झोपड़ी के समीप पहुँच गए।

यह झोपड़ी बड़ी विचित्रता से बनी थी। तीन ओर ऊँची ऊँची पत्थर की चट्टानें थीं। मजबती की दृष्टि से उनपर और भी ढोके लाद दिए गए थे। बीच में लट्ठों से मकान बना था। दीवारों के कारण मकान में से तीन ओर तो कुछ भी दिखाई नहीं पड़ता था, पर चौथी ओर खुला होने के कारण नील गगन और हरे-भरे मैदान सागर का सा सुंदर दृश्य उपस्थित करते थे।

इन लोगों के पैरों का शब्द सुनते ही बूढ़े के पौत्र ने दरवाजे में से घुघराले बालों से आभूषित मुखड़ा बाहर निकाला।

'वे लोग आ रहे हैं'—एंटिओकस ने सूचना दी।

'कौन लोग ?'

'पादरी और मुखिया।'

लड़का झपटकर बाहर निकल आया। वह इस बात पर बिगड़ रहा था कि मुखिया सब मामलों में क्यों दखल दिया करता है।

'मैं आज उसकी हड्डी तोड़ दूँगा।'—वह बिगड़कर बोला।

पर जब उसने सामने से कुत्ते को आते देखा तो पीछे हट गया। उधर से बूढ़े का कुत्ता भी अतिथियों का स्वागत करने के लिये निकल आया।

एंटिओकस ने फिर बक्स ले लिया, और पास की एक चट्टान पर बैठ गया। चारों ओर बकरी की खालें सूख रही थीं। कुछ काली, कुछ भूरी, कुछ सुनहरी और कुछ रुपहली थीं। झोपड़ी के भीतर उसी प्रकार की बहुत सी खालों के ढेर पर बुड्ढा सो रहा था। सफ़ेद बालों और दाढ़ी से घिरे मुख पर पड़ी हुई मृत्यु के आगमन की सूचना देनेवाली छाया स्पष्ट दिखाई पड़ रही थी। पादरी झुककर उससे कुछ पूछ रहा था। पर मृत्यु के पंजे में फँसे हुए उस बूढ़े ने कोई उत्तर नहीं दिया। आँखें बंद किये वह बिस्तरे पर पड़ा रहा। उसके काँपते हुए ओठों पर रक्त की गति रुक रही थी। थोड़ी ही दूर पर दूसरी चट्टान पर गाँव का मुखिया भी बैठा था—एक पैर पर दूसरा पैर रक्खे हुए। उसकी आँखें भी झोपड़ी की ओर लगी थीं। वह क्रुद्ध हो रहा था—क्योंकि मरते समय भी वह पादरी को अपनी अंतिम अभिलाषा नहीं बतला रहा था, नियम भंग कर रहा था। एंटिओकस ने जब दृष्टि घुमाई तो उसके मन में यह विचार आया कि अगर मुखिया इस गुस्ताख़ बूढ़े पर उसी तरह अपना कुत्ता छोड़ देता—जैसे वह चोर के ऊपर छोड़ता है, तो कैसी अच्छी बात होती।

# ८

झोपड़ी के अंदर पादरी झुका हुआ बैठा था, दोनों हाथ घुटनों के बीच में पड़े थे। उसके मुख पर विषाद और चिंता की छाया स्पष्ट दिखाई पड़ रही थी। वह भी हार मानकर चुप हो गया था। शायद, वह यह भी भूल गया था कि आखिर उसके यहाँ आकर इतनी देर तक बैठे रहने का प्रयोजन ही क्या था। वह आराम के साथ हवा की सनसनाहट सुन रहा था मानों दूरस्थित सागर की हरहराहट हो—उसे कोई चिंता नहीं थी। एकाएक एटिओकस ने देखा कि मुखिया का कुत्ता भूँक उठा। सिर के ऊपर से कुछ और ही ध्वनि सुनाई पड़ी। बूढ़े का पालतू बाज ऊपर की ओर चढ़ा जा रहा है। उसके काले-काले डैने पत्ता की भाँति चल रहे हैं।

अदर पाल चुपचाप बैठा अपने मन में सोच रहा था—मृत्यु निकट है। यह अपने संबंधियों के पास से यहाँ भा। है। इसे भय था कि कोई मुझे मार न डाले—अथवा इससे कुछ अधिक कर गुजरे। पर यहाँ भी इन पत्थरों के बीच एक पत्थर के टुकड़े की भाँति पड़ा है। किसी दिन में भी

# ८

झोपड़ी के अंदर मादरी झुका हुआ बैठा था, दोनों हाथ घुटनों के बीच में पड़े थे। उसके मुख पर विषाद और चिंता की छाया स्पष्ट दिखाई पड़ रही थी। वह भी हार मानकर चुप हो गया था। शायद, वह यह भी भूल गया था कि आखिर उसके यहाँ आकर इतनी देर तक बैठे रहने का प्रयोजन ही क्या था। वह आराम के साथ हवा की सनसनाहट सुन रहा था मानों दूरस्थित सागर की हरहराहट हो—उसे कोई चिंता नहीं थी। एकाएक एंटिओकस ने देखा कि मुखिया का कुत्ता भूँक उठा। सिर के ऊपर से कुछ और ही ध्वनि सुनाई पड़ी। बूढ़े का पालतू बाज ऊपर की ओर चढ़ा जा रहा है। उसके काले-काले डैने पत्तों की भाँति चल रहे हैं।

अदर पाल चुपचाप बैठा अपने मन में सोच रहा था—

'मृत्यु निकट है। यह अपने संबंधियों के पास से यहाँ भाग आया है। इसे भय था कि कोई मुझे मार न डाले—अथवा इससे भी कुछ अधिक कर गुजरे। पर यहाँ भी इन पत्थरों के बीच यह एक पत्थर के टुकड़े की भाँति पड़ा है। किसी दिन में भी अपने

जीवन से निर्वासित होकर इसी भाँति पड़ा होऊँगा। माँ आज भी रात भर घर में मेरी प्रतीक्षा करती रहेगी ।'

एकाएक वह चौंक पड़ा। बूढ़ा अभी मरा नहीं था। इधर तो प्राण-वायु उसके शरीर में फड़फड़ा रही थी और उधर बाहर पत्थर पर उसका बाज।

'मैं रात भर यहीं रहूँगा'—उसने मन में कहा—'यदि आज रात माँ को बिना देखे रह जाऊँ तो मेरे प्राण बच जायँ।

वह कुटी के बाहर निकल आया और एंटिओकस के पास जा बैठा। गुलाबी आकाश में भगवान भास्कर अस्त हो रहे थे। पहाड़ की ऊँची-ऊँची चट्टानों की छाया दूर की झाड़ियों तक पहुँच रही थी। उसका मन अव्यवस्थित-सा हो रहा था। जिस प्रकार धुँधले प्रकाश में कोई भी चीज स्पष्ट नहीं जान पड़ती, उसी भाँति वह अपनी आंतरिक अभिलाषा समझ सकने में असमर्थ था। वह आप ही आप गुनगुनाने लगा—

'बूढ़े का बोल बंद हो गया है, वह मरणासन्न है। यह अंतिम उपदेश का समय है। और यदि वह मर जाय तो उसके अंतिम संस्कार का प्रबंध करना होगा। यही आवश्यक होगा'—बोलते-बोलते वह आप ही आप रुक गया। उसको हिम्मत न पड़ी कि वह वाक्य को पूर्ण करके कह दे—'यही आवश्यक होगा कि मैं रात में यहीं रह जाऊँ।'

एंटिओकस उठकर उपदेश का प्रबंध करने लगा। उसने बक्स खोलकर तैल-पात्र और एक श्वेत वस्त्र निकाल लिया। उसने एक

लाल गाउन निकालकर पहन लिया, मानों वह स्वयं पादरी हो। जब सब ठीक हो गया तो लोग पुनः कुटी के भीतर गए। बूढ़े का पौत्र उसके मस्तक को अपनी जाँघों पर रखे बैठा था। एंटिओकस दूसरी ओर घुटने टेककर बैठ गया। गाउन जमीन पर पसर गया। उसने सफेद वस्त्र भूमि पर बिछा दिया, जो टेबुल का काम दे रहा था। तैल पात्र में उसके गाउन की लाल छाया पड़ रही थी। बाहर गाँव का मुखिया भी अपने कुत्ते के साथ झुका बैठा था।

पादरी ने वृद्ध के सिर पर तेल लगाया। उन हथेलियों पर भी तेल चुपरा जिनके चिन्ह कह रहे थे कि उसने कभी किसीके साथ बर्बरताका व्यवहार नहीं किया और उसके उन पैरों पर भी उसका लेप किया गया, जो उसे मनुष्यों के पास से इतनी दूर भगा जाए थे—इस प्रकार जैसे कोई पापों से दूर भागता हो।

अस्तोन्मुख सूर्य की अंतिम किरण झोपड़ी में झिलमिलाने लगी। एंटिओकस का आरक्त आभरण चमक उठा। पादरी और उस वृद्ध के बीच बैठा हुआ वह दहकते हुए अंगारे की भाँति जान पड़ता था।

'मुझे घर जाना होगा'—पाल ने सोचा—'यहाँ रहने का मेरे पास कोई उचित कारण नहीं है।' वह कुटिया के बाहर चला गया और बोला—'कोई आशा नहीं है। वह बिलकुल चेतना हीन है।'

'स्वप्ननिद्रा'—मुखिया ने जोर देकर कहा।

'दो-चार घंटों से अधिक अब वह नहीं चल सकता। उसके

रात को नीचे गाँव में ले जाने का प्रबंध हो जाना चाहिए'—पाल कहता ही गया। उसकी इच्छा थी कि वह आगे इतना और जोड़ दे—'और मुझे आज रात भर यहीं रहना होगा'—पर उसे अपने मुँह पर लज्जा आ रही थी।

साथ ही अब वह गाँव में लौट जाने की आवश्यकता का भी अनुभव कर रहा था। रात होते ही पापों के गहन विचार उसे घेर-कर आकृष्ट करने का प्रयत्न करने लगे। वह अंधकार के घनघोर, किंतु अदृश्य जाल में फँस गया। इन बातों से उसकी अंतरात्मा कॉप रही थी, पर वह भली भाँति अपनी चौकसी कर रहा था, उसे अनुभव हो रहा था कि मेरी आत्मा जागरित होकर उस अंधकार के ऊपर अधिकार कर लेना चाहती है।

'केवल आज की रात उसे बिना देखे रह जाता तो बच जाता!'—यही उसकी आत्मा की मूक पुकार थी। यदि कोई उसे बलपूर्वक रोक लेता। वह बूढ़ा ही एक बार चैतन्य होकर उसका गाउन पकड़कर उसे रोक लेता तो उसके बचाव का उपाय हो जाता!

वह फिर बैठ गया और अपने प्रस्थान में देर करने का बहाना ढूँढ़ने लगा। भगवान भुवन-भास्कर अस्ताचल की ओर प्रयाण कर चुके थे। सन्ध्याकालीन स्निग्ध प्रकाश में बड़े बड़े वृक्ष विशालकाय मण्डपों के रूप में सुशोभित हो रहे थे। मृत्यु तक उस गंभीर शांति को भंग करने में असमर्थ थी। पर पाल थका और अलसाया हुआ था, ठीक वैसा ही जैसा वह प्रात काल वेदी के

समीप रहा करता था। उसकी इच्छा थी कि मैं किसी चट्टान पर पड़ रहूँ और गहरी नींद में सो जाऊँ।

इसी बीच मुखिया ने अपना कार्य निर्धारित कर लिया। वह कुटी के अंदर चला गया और मरणासन्न पुरुष के समीप बैठकर उसके कान में कुछ कहने लगा। बूढ़े के पौत्र ने घृणा और संदेह की दृष्टि से उसकी ओर देखा, और बाहर पाल के पास आकर कहने लगा—

'आप अपना कार्य तो कर ही चुके हैं। अब आप शांतिपूर्वक जा सकते हैं।'

उसी क्षण मुखिया भी पुन. कुटिया के बाहर आ गया।

'उसका बोल बद हो गया'—उसने कहा—'पर उसने मुझे सकेत से समझा दिया कि मैंने अपनी सब बातों का प्रबंध कर लिया है। निकोडेमस पनिया!'—उसने बूढ़े के पौत्र की ओर घूमते हुए कहा—'क्या तुम अपनी आत्मा को साक्षी देकर हम लोगों को विश्वास दिला सकते हो कि हम लोग शांतिपूर्वक चले जायँ?'

'धर्मोपदेश के अतिरिक्त और किसी कार्य के लिए आपका आना व्यर्थ था। मेरे कार्य में हस्तक्षेप करने का आपको क्या अधिकार है?'—लड़के ने कुछ अप्रसन्नता से कहा।

'हम नियम का पालन अवश्य करेंगे! इस प्रकार तुम विरोध की आवाज मत उठाओ, निकोडेमस पनिया!'—मुखिया ने डाँटकर कहा।

'बस, बस, बहुत हुआ, झगड़ा मत करो'—पादरी ने कुटिया की ओर हाथ उठाते हुए कहा।

'आप ही तो रात दिन उपदेश दिया करते हैं कि जीवन में मनुष्य का एक ही कर्तव्य है—और वह है अपने कर्तव्य का पालन।'—मुखिया ने कुछ व्यंग्यात्मक भाव से कहा।

पाल झटके से उठ खड़ा हुआ। इन शब्दों ने उसे शिर से पैर तक झनझना दिया। उसे मालूम हो रहा था कि उन लोगों के मुख से निकले हुए शब्द ईश्वर की वाणी के रूप में आ रहे हैं। वह उसी क्षण अपने घोड़े पर सवार हो गया, और बुड्ढे के पौत्र से बोला—

'बाबा की मृत्यु तक उसके पास ही रहना। जगदीश्वर की माया बड़ी विचित्र है। हम तुम नहीं समझ सकते कि कब क्या होगा।'

लड़का मार्ग में कुछ दूर तक पीछे-पीछे गया। जब मुखिया दूर पड गया तो पनिया ने कहा—'देखिए, बाबा के पास जो कुछ रुपए थे, वे उन्होंने मुझे दे दिए। वे मेरे कोट की जेब मे पडे हैं। अधिक रुपए तो नहीं हैं, पर जो हैं, मेरे हैं। हैं या नहीं?'

'यदि बाबा ने ये रुपए केवल तुम्हारे ही लिए दिए हैं, तो अवश्य तुम्हारे हैं।'—पाल ने पीछे की ओर यह देखते हुए कहा कि कोई आ तो नहीं रहा है।

पीछे एटिओकस पेड़ की डाल की एक छड़ी फेरता हुआ आ रहा था। और मुखिया कुटिया की ओर घूमकर अपना अंतिम फौजी सलाम दे रहा था। उसके टोप की चमकीली चोटी और कोट के बटनों पर साध्य प्रकाश की अंतिम रश्मियाँ चमक रही थीं। उसकी वह सलाम शायद, मृत्यु की सलाम थी। उसको

सलाम के उत्तर में चट्टान पर बैठा बाज अपने पंख फड़फड़ा उठा। उसकी यह फड़फड़ाहट भी सोने के पूर्व की अंतिम फड़फड़ाहट थी।

रात्रि का अंधकार धीरे धीरे घाटी के चारों ओर फैलने लगा। थोड़ी देर में वे तीनों यात्री उससे आवृत्त हो गए। जब किसी प्रकार वे लोग नदी पार कर चुके और घर की ओर मुड़े, तो उन्होंने देखा कि सामने से बड़ा प्रखर प्रकाश बढ़ता चला आ रहा है। प्रकाश उन्हीं के गाँव से आ रहा था—मालूम होता था सारा गाँव अग्नि समुद्र मे समाधिस्थ हो रहा है। अग्नि की ऊँची ऊँची लपटें उठकर पहाड़ी की चोटियों से होड़ कर रही थीं। मुखिया ने स्पष्ट देखा कि बहुत से लोग गिर्जे के सामने, इधर-उधर दौड़ रहे हैं। शनिवार का दिन था, सभी लोग रविवार की छुट्टी मनाने गाँव में आए होंगे। पर इससे यह नहीं स्पष्ट हो सकता था कि इस अग्नि-कांड का इससे क्या संबंध है।

'मैं समझ गया !'—एंटिओकस जोर से बोल उठा—'वे लोग हमारे लौटने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। शायद निना माशा की भाँति ही कोई विचित्र बात फिर होगी।'

'अरे राम ! क्या तुम बिलकुल पागल हो गए हो एंटिओकस ?' —पादरी ने डरते हुए कहा। उसने पहाड़ी के नीचे गाँव की ओर देखा। बड़ी-बड़ी लपटें नीचे से उठ रही थीं।

मुखिया ने कुछ नहीं कहा, वह शांत था। उसने केवल एक बार अपने कुत्ते की जंजीर खड़खड़ाई, जानवर एकाएक भूँक उठा। उसके भूँकने की ध्वनि घाटी में गूँज उठी। पाल को ऐसा

प्रतीत हुआ मानों कोई अदृश्य शक्ति उस मार्ग का पता लेकर उसका विरोध कर रही है, जो गाँव के सीधे सादे निवासियों की सादगी द्वारा बनाया गया था।

मैंने उनके साथ क्या किया ? उसने अपने ही अंतःकरण से पूछा—'मैंने उन्हें उल्लू बनाया है, अपने अंतःकरण को उल्लू बनाया। दयामय, हम सबकी रक्षा करना।'

आत्म समर्पण की पवित्र भावनाएँ उसके हृदय में जग उठीं। मैं गाँव में पहुँच कर सब निवासियों के बीच में खड़ा हो जाऊँगा, अपना पाप स्वयं स्वीकार कर लूँगा।

नहीं, अपना कलुषित हृदय ही चीरकर उनके सामने रख दूँगा। दुख से उसका हृदय भर गया। सामने धधकती हुई भयानक लपटों से भी अधिक भयानक अपनी हृदयाग्नि में वह भस्म हुआ जा रहा था। पर इस समय उसकी अंतरात्मा ने ही उससे कहा—

'वह सब कुछ अपनी श्रद्धा से करते हैं। तुझमें उन्हें ईश्वर का प्रकाश दिखाई देता है। तुझे यह अधिकार नहीं कि तू उस परब्रह्म और उसके श्रद्धालु भक्तों के बीच अपने कालिमामय हृदय को रखे।'

पर दूसरी ओर उससे भी गंभीर ध्वनि ने उसका विरोध किया। उसे स्पष्ट सुनाई पड़ा—

'नहीं, यह नहीं हो सकता। यह तो इसलिए ऐसा है कि तू उसका आधार है और दुखों से डरता है। उसी सत्य के अभाव में तू दग्ध हो रहा है।'

ज्यों-ज्यों वे लोग गाँव के समीप आते जाते त्यों-त्यों पाल का हृदय इसी प्रकार के विचारों में अंतर्निहित होता जाता। एक ओर धधकती हुई लपटें काली-काली पहाड़ियों से टकरा रही थीं। शायद, अंधकार और प्रकाश का युद्ध हो रहा था। दूसरी ओर पाल के हृदय में सत्य और असत्य का द्वंद्व छिड़ा हुआ था। वह किंकर्तव्यविमूढ़ सा हो गया था। गाँव में पहले पहल वह जिस दिन आया था उस दिन का दृश्य उसकी आँखों के सामने नाचने लगा। उसकी माँ भी आशाभरी आँखों से उसे निरखती हुई उसके साथ आई थी—उसी प्रकार निरखते हुए जैसे वह बचपन में उसकी देख-रेख किया करती थी।

'अब मैं उसकी दृष्टि से गिर गया हूँ।'—वह बड़-बड़ा उठा—'वह सोचती है कि मैंने उसे पुन ऊँचे उठा दिया है, पर मेरा हृदय तो चूर-चूर हो गया है।'

एकाएक वह हृदय में एक प्रकार की अपूर्व शांति का अनुभव करने लगा। अनायास ही उपस्थित हो जानेवाला यह उत्साह उस भयानक खतरे को दूर कर देगा।

'मैं कुछ लोगों को सायंकाल घर पर बुलाऊँगा। वे लोग अवश्य मकान पर रह जायँगे। अगर आज की रात कट जाय, तो बच जाऊँगा।'

गिर्जे के आँगन और चबूतरे पर इधर-उधर जाती हुई काली-काली मूर्तियाँ स्पष्ट दिखाई पड़ रही थीं। पीछे अग्निशिखाएँ लाल-

लाल झंडों के रूप में फहरा रही थीं। गिर्जे के घंटे नहीं बज रहे थे, उन्हें उत्सव पर बजना चाहिए था। पर जनरव के रूप में गिर्जे के मनोहर वाद्यों के शब्द स्पष्ट सुनाई पड़ रहे थे।

एकाएक गिर्जे के शिखर पर एक चिनगारी दिखाई दी और साथ ही समस्त घाटी धड़ाके की आवाज से गूंज उठी। इसके बाद ही उसी प्रकार की दूसरी आवाज के साथ समस्त जनता में हर्ष ध्वनि होने लगी। वे लोग खुशी में अपनी बदूकें दाग रहे थे। प्राय सभी बड़े त्योहारों पर वे लोग ऐसा ही किया करते थे।

'वे सबके सब पागल हो गए हैं'—गाँव के मुखिया ने कहा और वह पहले ही उस ओर दौड़ गया—साथ में उसका कुत्ता भय से भूकता हुआ चला जा रहा था, मानों कोई भयानक क्रांति उपस्थित होना चाहती हो।

उधर एंटिओकस, मानों रो देना चाहता हो। उसने देखा कि पादरी तनकर घोड़े पर बैठा है। उसे ऐसा मालूम हो रहा था, जैसे मैं कोई साधु हूँ और किसी जुलूस का नेतृत्व ग्रहण कर रहा हूँ। इतना ही नहीं, थोड़ी देर में उसकी भावना वस्तुत कार्य रूप में परिणत हो गई।

'आज मेरी माँ इस भीड़ में बड़ी प्रसन्न होगी'—वह प्रसन्नता से इतना भर गया कि उसने चोगे को उतारकर कंधे पर रख लिया। इसके बाद उसने बक्स को पुन ले लेने की इच्छा प्रकट की, उसने अपनी नई छड़ी भी नहीं छोड़ी। इसके बाद वह राजकुमार के से गौरव के साथ गाँव में प्रविष्ट हुआ।

शिकारी निकोटेमस की पोती ने अपने द्वार पर से ही पादरी को पुकारकर अपने दादा का समाचार पूछा।

'सब ठीक है'—पाल ने कहा।

'बाबा मजे में हैं, यही न ?'

'तुम्हारे बाबा की शाम को मृत्यु हो गई।'

लड़की जोर से रो उठी। प्रसन्नता के उस अवसर पर केवल यही एक दु खमय घटना थी।

गाँव के लड़के भी पादरी से मिलने पहाड़ी के नीचे तक गए। सबों ने घोड़े को चारो ओर से घेर लिया और साथ साथ गिर्जे के चबूतरे तक चले गए। वहाँ पर मनुष्यों की उपस्थिति इतनी अधिक नहीं थी, जितनी दूर से मालूम पड रही थी। वहाँ पहुँचते ही मुखिया के कुत्ते ने कार्यवाही में कुछ बाधा उपस्थित कर दी। सब लोग गिर्जे के सामने आँगन में कायदे से बैठे थे, कुछ लोग सामने एंटिओकस की माँ की दूकान पर मदिरा पान कर रहे थे। स्त्रियाँ सोते हुए बालकों को गोद में लिए गिर्जा घर की सीढ़ियों पर बैठी थीं। उनके बीच में निना माशा थी, बिलकुल शांत बँदरिया की भाँति दुबकी हुई। चबूतरे के बीच में मुखिया अपने कुत्ते के साथ तनकर पत्थर की मूर्ति की भाँति निश्चल खड़ा था।

पादरी के आते ही सब लोगों ने उठकर उसे चारों ओर से घेर लिया, पर घोड़ा अपने सवार की एक हल्की सी एँड़ पाकर गिर्जे के सामनेवाली गली की ओर बढ़ता चला गया। उसी ओर उसके मालिक का मकान था। आगे बढ़ते ही उसका मालिक

शराब की दूकान से प्याला हाथ में लिए बाहर निकल आया और ज़ीन पकड़कर घोड़े को खींच लिया।

'बच्चू, क्या सोच रहे हो ? मैं यहीं खड़ा हूँ।'

घोड़ा तुरत रुक गया और मालिक की ओर सिर उठाकर देखने लगा, मानों उसके प्याले की शराब पीना चाहता हो। पादरी ने उतरने की-सी मुद्रा बनाई, पर वह मनुष्य उसका एक पैर पकड़े हुए था, इससे वह उतर न सका। इसी बीच वह घोड़े को शराब की दूकान की ओर बढ़ा ले गया। सामने एक आदमी बोतल लिए खड़ा था, उसने खाली प्याला उसी ओर बढ़ा दिया।

जन समुदाय—क्या स्त्री क्या पुरुष ने—पादरी को घेर लिया। दुकान के प्रकाशमान् द्वार पर एंटिओकस की माँ खड़ी इस दृश्य पर मुसकरा रही थी। चारों ओर जलती हुई अग्नि शिखाओं के प्रकाश से उसका मुख पीला पड़ गया था। गोदी में के बच्चे अपनी माताओं के भुज-पाश में चौंककर मचलने लगे। सभी स्त्रियों के गलों मे लटकते हुए सोने के तावीज चमक रहे थे। उन लोगों के बीच पादरी घोड़े की पीठ पर बैठा ऐसा मालूम हो रहा था, जैसे अपनी भेड़ों से घिरा हुआ गड़ेरिया किसी ऊँची चट्टान पर बैठा हो।

सफेद दाढ़ीवाले एक बूढे ने अपना हाथ पाल के घुटने पर रख दिया, और उपस्थित जन समुदाय की ओर मुँह करके बोला।

'सज्जनो !'—उसने रुँधे हुए गले से कहा—'निश्चय, ये पृथ्वी पर देवदूत बनकर आए हैं।'

'तो इनके सम्मान में आज रान पान अवश्य होना चाहिए'!—घोड़े के मालिक ने चिल्लाकर कहा और प्याला पाल की ओर बढ़ा दिया। पाल ने उसे तुरत स्वीकार कर लिया और लेकर ओठों में लगाया। पर उसके दाँत प्याले के कोरों पर लगते ही हिल गए मानों अग्नि के देदीप्यमान प्रकाश में चमकती हुई आरक्त मदिरा मदिरा न होकर गाढा गाढा लाल रुधिर हो।

---

९

भोजनालय में तेल का छोटा सा दीपक जल रहा था। पाल अपने छोटे से टेबुल के सामने बैठा था। पीछे पहाड़ी के ऊपर सुनहरे आकाश में भुवन मोहन चन्द्रदेव अपनी सोलहों कलाओं से मुस्करा रहे थे।

उसने बहुत से ग्रामीणों को जी बहलाने के लिये बुलाया था। बीच में वही दढ़ियल बूढ़ा और घोड़े का मालिक बैठा था। शराब की धारा बह रही थी। परिहास और शिकार की कहानियों का बाजार गर्म था। बूढ़ा स्वयं शिकारी होते हुए भी निकोडेमस की समालोचना कर रहा था। उसके विचार से उसके आचरण ईश्वरीय नियमों के विरुद्ध थे।

'मैं उसके मर जाने पर उसकी निंदा नहीं करता'—वह कह रहा था—'पर, सच तो यह है कि वह केवल आमोद के लिए भी शिकार खेलने जाया करता था। उसने पिछले जाड़े में ही हजारों खालें एकत्र कर ली होंगी। ईश्वर हमें शिकार की आज्ञा देता है, पर आवश्यकता से अधिक नहीं। वह तो जाल लगाकर जानवरों को फँसाया करता था, इसकी आज्ञा नहीं है। जानवर भी हमारी

ही भाँति कष्ट का अनुभव करते हैं। मैंने स्वय अपनी इन्हीं आँखों से देखा था कि जाल में फँसाते समय खरगोश की टाँग टूट थी। आप मेरा मतलब समझे ? खरगोश जाल में फँस गया था। उसके पैर के चारों ओर का माँस छिल गया। वह छूटने के लिए तड़फड़ा रहा था। उसने स्वय झटका देकर अपना पैर तोड़ दिया आखिर, निकोडेमस ने इतना रुपया कमाकर किया तो क्या किया उसने कमा-कमाकर रखा है और उसका पोता उसे कुछ ही दि में शराब कबाब में उड़ा देगा।'

'रुपया तो खर्च होने के लिए है ही।'—घोडे के मालिक कहा, वह जरा डींग मारनेवाला आदमी था।—'मेरा ही उदाहर लीजिए। मैं सदैव बिना हिचकिचाहट के रुपये खर्च करके जी का आनद लिया करता हूँ। पर हाँ, किसी को सताकर नह एक बार किसी त्यौहार का दिन था; मेरे पास कोई काम नहीं मैंने सामने से जाते हुए एक रेशमी फीतेवाले को बुला लिया उसके तमाम फीते खरीदकर गिर्जे के चारों ओर लपेटवा और इधर उधर से ठीकरें मारकर उन्हें तोड़ डाला। कुछ क्षण के बाद सब लोग मेरे साथ हो गए। बच्चे, युवक यहाँ तक कुछ बूढ़े भी हँस रहे थे—शोर मचा रहे थे। कुछ लोग तो नकल तक कर रहे थे। यह एक ऐसा खिलवाड़ था जो कभी भूल सकता। आज भी उसकी स्मृति ताजी है। जब कभी पादरी मुझे देखता, हँसते हुए पुकारकर कहता—'कहो भाई चेल मारा! आज लपेटने के लिये कोई फीता नहीं है क्या

सभी आगंतुक इस कहानी को सुनकर हँस पड़े। पान का हुक्म पीना और आराम मालूम हो रहा था—बिलकुल थका हुआ। दाढ़ीवाला बूढ़ा पादरी को बहुत मानता था। उसने प्रस्ताव किया कि अब सब लोगों को शीघ्र ही चलना चाहिए और, पादरी साहब को अपने पवित्र विचारों और साथ ही कुछ आराम के लिए एकांत में छोड़ देना चाहिए।

सब लोग एक-साथ ही अपनी कुर्सियों पर से उठ खड़े हुए और नम्रतापूर्वक विदा माँगकर चल दिए। पान ने देखा कि दीपक के धुँधले प्रकाश में वह अकेला बैठा था। ऊपर के गवाक्ष से चन्द्रमा की शीतल किरणें आ रही थीं। बाहर की गली से उसके मेहमानों के भारी-भारी जूतों का शब्द कानों में गूँज रहा था।

अभी सोने में देर थी। उसके कंधे दर्द कर रहे थे, मानों वह दिन भर भारी बोझ लादे रहा हो। फिर भी शयनागार में आने का विचार उसके मन में नहीं था। उसकी माँ अभी तक रसोई में ही थी। वह उसे अपने स्थान से देख नहीं सकता था, पर इतना भली भाँति जानता था कि वह पिछली रात की भाँति आज भी उसकी प्रतीक्षा में होगी।

पिछली रात। उसे ऐसा मालूम हुआ, जैसे वह घोर निद्रा से चौंक पड़ा हो, पिछली बातें—एगनेस के यहाँ से लौट आना, माँ की बात पर व्यथित होना, एगनेस को पत्र लिखना, बूढ़े निकोडेमस के यहाँ जाना आदि—मानों केवल स्वप्न के चित्रपट हों, और अब से उसके नवीन जीवन का आरंभ हो रहा हो। अब

वह केवल एक काम करना चाहता था—दस-बारह कदम चलना द्वार खोलना और फिर उसके पास पहुँच जाना क्योंकि इस समय उसके जीवन का फिर से आरंभ था।

'पर अब शायद वह मेरी राह न देखती न हो। संभव है वह भविष्य में कभी न देखे।'

उसके पैर लड़खड़ाने-से लगे, भय ने उसे पुन घेर लिया इसलिए नहीं कि वह पुन उसके पास जाना चाहता था, बल्कि इसलिए कि शायद उसने अपना माथा ठोक कर पाल को भुलाने का प्रयत्न करना आरंभ कर दिया हो।

इस समय अपने हृदय की तह में वह इस बात का अनुभव कर रहा था कि जब से मैं पहाड़ी पर से आया हूँ, तभी से एक कठोर वेदना का अनुभव कर रहा हूँ—उसके विषय में अपनी अनभिज्ञता का, अपने प्रति उसके मौन और सबसे बढ़कर अपने जीवन से वियोग का।

यही उसके लिए वास्तविक मृत्यु थी कि उसने अब पाल से प्रेम करना छोड़ दिया होगा।

उसने अपना विशाल मुख मडल हाथों के बीच ढँक लिया और उसकी मूर्ति को नेत्रों के सामने लाने का प्रयत्न करने लगा। फिर वह उसे उन बातों के लिए झिड़कने लगा जिनके लिये यदि वही झिड़कती तो अधिक युक्ति सगत होता।

'एगनेस, तुम अपने वादों को नहीं भूल सकतीं। उन्हे तुम कैसे भूल सकती हो ? तुमने ही मेरी कलाई अपने हाथों से पक

ने कहा था—"हम लोग जीवन भर के लिए एक-दूसरे से बँध गए—जीना और मरना सब कुछ साथ ही होगा।" क्या यह सम्भव है कि तुम उसे भूल जाओ ? तुमने कहा था, जानती हो !'

उसकी अँगुलियाँ कमीज के फलफदार कालरों पर जा पहुँचीं क्योंकि इससे उसका गला रुँध रहा था।

'शैतान ने मुझे अपने जाल में फँसा लिया है'—उसने सोचा। उसी समय जाल में फँसा लँगड़ा खरगोश भी उसके सामने नाचने लगा। उसने एक ठंडी साँस ली। वह कुर्सी पर से उठकर खड़ा हो गया और हाथ में दीपक ले लिया। उसने अपनी कामनाओं से युद्ध करने की प्रतिज्ञा कर ली। आवश्यकता पड़ने पर स्वतन्त्रता प्राप्त करने के हेतु वह खरगोश की भाँति अपने अंग तक दे सकता था। अब उसने ऊपर अपने कमरे में न जाने का निश्चय कर लिया। ज्यों ही वह सामने बड़े कमरे की ओर बढ़ा वहाँ माँ बैठी हुई दिखाई दी—वह चुपचाप पाकशाला में अपने निश्चित स्थान पर बैठी थी। पास ही एंटिओकस गहरी नींद में सो रहा था। वह द्वार तक चला गया।

'यह अभी तक यहाँ क्यों हैं ?' उसने पूछा। माँ ने हिचकिचाते हुए उसकी ओर देखा। उसकी इच्छा तो यही हो रही थी कि उत्तर दूँ। वह चाहती थी कि एंटिओकस को अपने लबादे की ओट में छिपा लूँ और उसे कोई बहाना करके उत्तर दे दूँ। जिससे पाल शीघ्र अपने कमरे में ऊपर जाकर सो रहे। उसका विश्वास पाल पर पूर्ववत् हो गया था, पर वह भी शैतान के मायाजाल की बात

सोच रही थी। इसी बीच एटिओकस किसी प्रकार जाग उठा। उसे स्मरण हो आया कि मैं इतनी देर तक यहाँ क्यों रह गया, और ऐसी अवस्था में जब कि कई बार माँ ने उससे जाने को कहा था।

'मैं यहाँ पर इसलिए बैठा रहा कि मेरी माँ आपके शुभागमन की प्रतीक्षा कर रही होंगी।'—उसने अपनी बात स्पष्ट की।

'पर क्या यह रात का समय इधर-उधर आने-जाने का समय है ?'—माँ ने उसकी बात काटकर कहा—'चलो, इस समय जाओ। अपनी माँ से कह देना कि पाल इस समय थका-माँदा है। कल तुमसे मिलेगा।'

वह बातें तो लड़के से कर रही थी, पर उसकी दृष्टि पाल की ओर ही लगी थीं। उसने देखा कि उसकी दृष्टि दीपक की ओर है, किंतु उसकी पलकें मोमबत्ती की लौ की भाँति चपल हो रही हैं।

एटिओकस हताश भाव से उठकर खड़ा हो गया।

'पर मेरी माँ प्रतीक्षा कर रही होगी, क्योंकि किसी आवश्यक काम से वह इसी समय भेंट करना महत्त्वपूर्ण समझती है।'

'अच्छा, यदि ऐसी ही बात है, तो वह इसी समय जाकर उससे मिल लेगा। हटो, जाओ।'

वह तेजी के साथ बोल रही थी। उसकी ओर देखते ही पाल की आँखें तीव्र उत्साह से चमक उठीं। उसने देखा कि मेरी माँ मेरे जाने के पूर्व ही कुछ डर-सी रही है। यह देखते ही वह न जाने क्यों क्रोध से भर गया। उसने दीपक को टेबुल पर रख दिया। फिर वह एटिओकस से बोला—'मैं तुम्हारी माँ के पास चलता हूँ।'

हाल से होकर जाते हुए वह रुक गया और घूमकर बोला—'मैं बहुत शीघ्र ही लौट आऊँगा, माँ द्वार मत बंद करना।'

वह अपने स्थान से हटी नहीं। जब दोनों बाहर निकल गए तो उसने देखा कि वे लोग चन्द्रमा की शीतल किरणों से आलोकित मैदान को पार कर शराब की दूकान में घुस गए, दूकान में अभी तक प्रकाश जगमगा रहा था। इसके उपरांत माँ उठकर पुन पाकशाला में चली गई और विगत निशा की भाँति आज भी चौकीदारी में लग गई।

उसे अपने ऊपर आश्चर्य हो रहा था क्योंकि आज उसे बूढ़े पादरी के प्रगट होने का भय नहीं था, यह सब स्वप्न था। उसके हृदय में यह विचार बिलकुल ही नहीं था कि आज उस बूढ़े पादरी की प्रेतात्मा मरम्मत के लिये दिए हुए मोजे लेने आवेगी।

'मैंने उन्हें बिलकुल ठीक बना दिया है।'—अपने पुत्र के मोजों की मरम्मत का ध्यान करके वह जोर से कह उठी। और उसने सोचा कि यदि भूत आवे भी तो मैं उसे अपने मोजे देकर सुहृदता स्थापित कर लूँगी।

चारों ओर शांति का साम्राज्य था। खिड़की के बाहर चाँदनी में वृक्ष रजत की चादर ओढ़े हुए थे, आकाश क्षीरसागर की भाँति देदीप्यमान हो रहा था, सुमनों से आच्छादित झाड़ियों की कोमल स्निग्ध सुगंधि मकान के भीतर लहरा रही थी। माँ बिलकुल शांत थी, यद्यपि अभी तक वह डर रही थी कि उसका पुत्र कहीं पुन पाप-पंक में न फँस जाय, पर यह भय स्थायी न था। उसने पुन

शेष था। न जाने, किस समय कोई अतर्क घटना उपस्थित हो जाय। वह थकी माँदी ऊपर अपने सोने के कमरे में जाकर एक कुर्सी पर बैठ गई, वह मन में सोच रही थी कि सामनेवाला द्वार बंद कर दूँ या खुला ही रहने दूँ।

वह उठकर खड़ी हो गई और अपने कोट का कमरबंद खोलने लगी। पर गाँठ बहुत पक्की लग गई थी। वह अधीर होकर सिलाई की डाली में से कैंची निकालने लगी। उसने देखा कि एक छोटी सी बिल्ली सिकुड़कर उसमें सो रही है। उसके संपर्क से रील, कैंची आदि सभी वस्तुएँ गरम हो गई हैं। इस जीवित जंतु के स्पर्श से उसे अपनी अधीरता पर दु ख हुआ। वह पुन दीपक के निकट चली गई और गाँठ को प्रकाश के सामने करके खोलने लगी। अंत में, थोड़ी-सी चेष्टा के उपरात वह खुल गई। उसने सावधानी से अपने वस्त्र उतारकर, एक के बाद एक करके तह लगा दी और उन्हे कुर्सी पर रखने लगी। पहिले उसने कोट की जेब से वालियाँ निकालकर पंक्तिबद्ध टेबुल पर रख दीं, मानो किसी प्रतिष्ठित परिवार के लोग एक कतार में शयन कर रहे हों। उसे अभिभावकों ने बचपन में इसी प्रकार के कायदों की शिक्षा दी थी। बड़ों के आदेश का वह अब तक सम्मान कर रही थी।

वह फिर बैठ गई। आधे वस्त्र उतर चुके थे—आधे अभी शरीर ही पर थे। उसकी फतुही अब तक घुटनों तक लटक रही थी। उसने थकावट और लापरवाही के साथ जँभाई ली। नहीं अब वह पुन नीचे नहीं जायगी, उसका पुत्र पाल दरवाजे को ब

देखकर समझ लेगा कि माँ उसपर पूरा विश्वास रखती है। उसे समझा देने के लिये यही दिखा देना ठीक था कि माँ पूर्ण रूप से उसका विश्वास करती है। इतने पर भी वह चौकन्नी थी, साधारण शब्दों को भी वह सुन रही थी। यद्यपि पिछली रात की भाँति ध्यान-पूर्वक नहीं, फिर भी वह सुन रही थी। उसने जूतियाँ उतारकर एक ओर एक दूसरे की बगल में रख दीं, मानों कभी न बिछुड़नेवाली दो बहनें हों—जो दिन भर तो चर्र-मर्र करके एक दूसरे की अभ्यर्थना किया करती हैं और रात्रि में एक साथ विश्राम करती हैं।

पाल को एटिओफस की माँ से क्या कहना होगा? कुछ भी हो उस स्त्री की ख्याति सब जगह है, वह सूद पर रुपए उधार दिया करती है, वह रुपयों का प्रबंध करनेवाली भी कही जाती थी। पर पाल की माँ इसे नहीं समझ सकी। उसने मोमबत्ती बुझा दी, धुआँ फेंकती हुई बत्ती को उँगलियों से मसल दिया। वह बिछौने पर चली गई, किंतु लेट नहीं सकी।

उसने सोचा कि मेरे कमरे में किसीकी पद ध्वनि स्पष्ट सुनाई पड़ रही है। क्या भूत फिर आ गया? वह भय से काँप उठी। उसका रक्त कुछ क्षण के लिये उसकी नसों में ठंढा पड़ गया। पर फिर उसके हृदय में दौड़ने लगा—जैसे किसी चौराहे पर रुके हुए मनुष्य स्थान पाने पर तेजी से दौड़ पड़ते हैं। वह फिर स्वस्थ हो गई। उसे अपने भय पर लज्जा मालूम हुई। उसे निश्चय हो गया कि उसके भय का हेतु पाल के संबंध में काल्पनिक शंकाओं के अतिरिक्त और कुछ नहीं था।

नहीं, अब उन शङ्काओं का अवसान हो चुका, उसके साधा रण-से-साधारण कार्य की भी अब मैं विवेचना नहीं करूँगी। सब बातों में मैं मूक होकर पीछे ही खड़ी रहूँगी, ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार इस समय मैं अपने इस साधारण कमरे में हूँ। यह लेट गई और लिहाफ से मुँह और कान ढक लिए। जिसमें पाल के आने की आहट भी न सुन सके। पर उसके हृदय में रह-रह कर वे ही बातें उठ रही थीं। वह सोच रही थी कि पाल घर नहीं आया। कोई उसकी इच्छा के विरुद्ध उसे खींचे लिये जा रहा है। जैसे लोग किसी को नाचने के लिए खींच ले जाया करते हैं।

फिर भी उसने यह विश्वास कर लिया कि कुछ समय में वह अवश्य ही उससे छुटकारा पाकर घर आ जायगा। किसी प्रकार शान्तिपूर्वक वह लिहाफ के अन्दर विश्राम कर रही थी। पर वह सोई नहीं थी। उसके हृदय में अभी तक वह भावना चक्कर काट रही थी, जो कमरबंद की गाँठ खोलने का प्रयत्न करते समय प्रकट हुई थी। एकाएक लिहाफ के अन्दर से उसे एक अस्पष्ट आला[illegible] सुनाई पड़ा। यह आवाज धीरे-धीरे और भी स्पष्ट होने लगी उसकी खिड़की के नीचे ही मैदान में बहुत से लोगों का गुल गपाड़ा सुनाई पड़ रहा था—वे लोग रो रहे थे, फिर भी बीच बीच में जाग उठते थे, कभी कभी नाचने भी लगते। उन्हीं लोगों के बीच उसका पाल भी था। वह उन से कुछ ऊँचे स्थान पर खड़ा था पर एक बाँसुरी बड़े मधुर स्वर में बज रही थी। मालूम [illegible] स्वयं सच्चिदानन्द मनुष्यों के इस नृत्य में [illegible] हैं।

## १०

पटिओकस की माँ दिन भर इसी विचार में व्यग्र रही कि लड़की के आने का क्या कारण है। उसके आगमन की सूचना से अपने पुत्र से मिल चुकी थी। इससे संभवतः वह बड़ी सतर्क थी। वह यह प्रगट नहीं होने देना चाहती थी कि वह इस की प्रतीक्षा में थी। सम्भव है, वह उसकी महाजनी आदि बन्द के द्वारा चलते हुए अन्य व्यवसायों की देखभाल करे। अथवा गैरों के उपयुक्त कुछ पुरानी चीज़ें किराए पर लगाने के बारे में कुछ पूछे, या ऐसी चीज़ों के विषय में जो उसने महाजन से मोल लिये थीं और जिनका वह इस प्रकार उपयोग किया करती थी। शायद वह कुछ रुपए ही उधार माँगे। अपने लिए न सही, किसी दूसरे के लिए सही। जो कुछ भी हो, दुकान पर एक ग्राहक खड़ा था। उसके चले जाने के उपरान्त, वह दोनों हाथ जेब में डाले हुए बाहर आकर खड़ी हो गई। दोनों जेब ताम्रमुद्राओं से भरे थे। बाहर वह देख रही थी कि अभी पटिओकस आया या नहीं।

फिर एकाएक वह द्वार बंद करने में व्यस्त हो गई। उसने द्वार की निचली किवाड़ियों को बंद कर दिया और मुड़कर नीचे की

सिटकिनी गिरा दी। मोटी ताजी होने पर भी वह फुर्तीली थी। अपने आस पास की स्त्रियों मे उसका शिर अपेक्षाकृत कुछ छोटा था, किंतु, उसके काले घुँघराले बाल उसके इस दोष को दबा रखते थे।

ज्यों ही पादरी उसके द्वार पर पहुँचा, वह कुछ पीछे हट गई और नजाकत के साथ सलाम किया। पर उसकी काली आँखें पादरी की आँखों पर ही लगी थीं। उनमें वेदना थी, विषाद था। उसने शराब की दूकान के पिछवाड़ेवाले कमरे में चलने की प्रार्थना की—एटिओकस की आँखें भी उससे प्रार्थना कर रही थीं वे अपने निमत्रण पर जोर दे रही थीं। पर, पाल ने हँसते हुए बात उड़ा कर कहा—'नहीं हमलोग यहीं बैठ जाँयगे'—शराब की दूकान के एक लबे धब्बेदार टेबुल पर बैठ गया। एटिओकस पास ही चुपचाप खड़ा था। वह बड़ी सतर्कता से चारो ओर देख रहा था कि दूकान की सजावट मे किसी प्रकार की गड़बड़ी तो नहीं है? साथ ही उसे यह भय भी था कि कोई दीर्घसूत्री ग्राहक आकर वार्तालाप में विघ्न न डाल दे।

कोई नहीं आया। सब चीजें भी यथोचित रीति से सजी थीं। दीपक जल रहा था। उसके चमचमाते प्रकाश में, उसकी माँ की परछाई पीछे के टाँड़ो पर रखी हुई हरी, पीली, गुलाबी शराब की बोतलों पर पड़ रही थी। दूकान में उस टेबुल के अतिरिक्त और कोई सामान नहीं था। उसी पर पाल बैठा था। द्वार पर एक सुरैल लटक रहा था। उससे दो काम निकलते थे एक तो राह-

चलतों को यह मालूम हो जाता कि यह शराब की दूकान है, दूसरे खाली बर्तनों पर भनभनानेवाली मक्खियाँ उसी पर जा बैठती थीं।

एटिओकस दिनभर से, उत्सुकता के साथ इस समय की प्रतीक्षा कर रहा था, वह भी इस विचार से कि इस समय कुछ नई रहस्यपूर्ण बातों का उद्घाटन होगा। वह किसी के अकस्मात् आ जाने से डर जाता, कहीं ऐसा न हो कि उसकी माँ आगंतुक के साथ उचित व्यवहार न करे। वह चाहता था कि मैं पादरी से भी अधिक नम्र और सभ्यतापूर्ण व्यवहार करके दिखाऊँ। उसकी माँ दूकान के पीछे अपने स्थान पर फिर जा बैठी, इस शान से, मानों कोई महारानी अपने सिंहासन पर बैठी हो। उसने इसपर ध्यान नहीं दिया कि यहाँ टेबुल पर बैठा हुआ व्यक्ति कोई साधारण ग्राहक नहीं, वरन् एक साधु है, जिसने कितने ही आश्चर्यजनक कार्य किए हैं। वह उस दिन की असाधारण बिक्री के लिये उसकी कृतज्ञ भी नहीं थी, जिस बिक्री का परोक्ष कारण यही व्यक्ति था।

अब में पाल ही ने वार्तालाप आरंभ किया।

'मैं तुम्हारे पति को भी देखना चाहता था'—अपनी टेहुनी टेबुल पर टेककर उसने कहा—'पर एटिओकस कहता है कि वे रविवार के पूर्व नहीं लौट सकेंगे।'

स्त्री ने स्वीकृति में केवल सिर हिला दिया।

'हाँ, इस सप्ताह के रविवार को, यदि आप कहें तो मैं जाकर उन्हें बुला लाऊँ'—एटिओकस उत्सुकतापूर्वक बोल उठा।

पर दोनों में से किसी ने भी उसकी ओर ध्यान नहीं दिया।

'अब इस लड़के के विषय में मैं कुछ कहूँगा'—पाल बोला। 'इस अवस्था को पहुँच जाने पर आपको इसके विषय में यह सोचना चाहिए कि इसे किस काम में लगावें। यह बड़ा हो चला है, अब इसे कोई व्यवसाय सिखलाइए, और यदि आप इच्छा इसे पादरी बनाने की है तो उस पद की जिम्मेदारी खूब अच्छी तरह सोच लीजिए।'

एंटिओकस ने मुँह खोला, पर बीच ही में उसकी माँ बोलने लगी। वह चुपचाप उसकी बातें सुनने लगा। पर उसकी माँ के मुख पर अस्वीकृति के भाव स्पष्ट थे।

उस स्त्री ने अपने पति की प्रशंसा और साथ ही उस खूसट के साथ निबाह कर लेने के लिए बहाने की बात निकाल ही तो ली—ऐसा वह प्राय किया करती थी।

'आप जानते ही हैं कि मेरा मार्टिन एक दृढ मनुष्य है, वह योग्य पति है, योग्य पिता है और परिश्रमी कारीगर है। उसके बराबर परिश्रमी इस गाँव में और कोई है? आप ही बतलाइए। आप तो जानते हैं कि यहाँ के निवासियों के आलस्य के कारण यहाँ के लोगों का चरित्र कैसा हो गया है? मैं कहती हूँ कि यदि एंटिओकस व्यवसाय करना चाहता है तो इसे अपने पिता का ही काम सीखना चाहिए। इसके बाद, यह अपना काम पसंद करने के लिए स्वतंत्र है। यदि यह कुछ भी न करना चाहे, तो भी यह बिना चोरी-चमारी किए जीवन-यापन कर सकता है। मेरी यह बात

दिखौआ नहीं है, यह भगवान् की दया है! परंतु यदि यह अपने पिता से भिन्न व्यवसाय चाहता है, तो उसका चुनाव यह स्वयं कर ले। इसकी इच्छा हो लोहारी करे, अथवा लकड़ी का ही काम करे, नहीं तो मजदूरी ही करे।'

'मैं तो पादरी बनना चाहता हूँ!'—लड़के ने काँपते हुए ओठों और उत्सुक नेत्रों से कहा।

'अच्छी बात है, पादरी बन जाओ।'—माँ ने उत्तर दिया। इस प्रकार उसके भाग्य का भावी कार्यक्रम निर्धारित हो गया।

पाल ने धीरे से अपना हाथ टेबुल पर रखा और एक बार दूकान में चारों ओर सतर्क दृष्टि से देखा। दूसरे की बात में अपना हाथ डालना उसे एकदम परिहास लगने लगा। जब मैं अपना ही प्रश्न नहीं हल कर सका तो एटिओकस का भविष्य कैसे निर्धारित कर सकता हूँ? लड़का सतृष्ण नेत्रों से उसकी ओर देख रहा था, मानो गर्म किया हुआ लाल-लाल लोहा, किसी भी स्वरूप में परिवर्तित होने के लिए हथौड़ों की चोटों की प्रतीक्षा कर रहा हो। पाल टकटकी लगाकर उसकी ओर देख रहा था। अपने पुत्र को उसकी आंतरिक प्रेरणा पर छोड़ देने के लिए वह एटिओकस की माँ की प्रशंसा कर रहा था।

'आंतरिक प्रेरणा हमें कभी भ्रष्ट मार्ग की ओर नहीं ले जाती'—उसने अपनी विचार-शृंखला की ओर ध्यान देते हुए ज़ोर से कहा।—'तो एटिओकस, तुम्हीं अपनी माता के सामने अपने हृदय की बात स्पष्ट कर दो। तुम पादरी होना क्यों

पसंद करते हो ? पादरी होना कोई व्यवसाय नहीं है, यह बढ़ई या लुहार होना नहीं है। अभी तुम सोचते हो कि यह बहुत सरल काम है, इस जीवन में बड़ा आनंद है पर पीछे तुम्हीं कहोगे कि यह बड़ा कठिन जीवन है। दूसरों के लिए आमोद-प्रमोद के जो द्वार खुले हैं, वे सब हमारे लिए आकाश के रंग बिरंगे चित्र हैं। यदि हम भगवान की सेवा करना चाहते हैं तो हमारा जीवन बलिदानों से भरा है।'

'मैं समझता हूँ'—उसने सिधाई से उत्तर दिया। 'मैं भगवान् की ही सेवा करना चाहता हूँ।'

वह अपनी माँ की ओर खदेने लगा। क्योंकि उसके सामने अपने हृद्गत आवेश को प्रगट कर देने के लिए वह कुछ झेंप रहा था। पर माँ चुपचाप बैठी थी, ठीक वैसे ही जैसे वह ग्राहकों को सौदा देने के समय बैठी रहती। इसलिए वह कहता गया—

'मेरे माता-पिता दोनों चाहते हैं कि मैं पादरी हो जाऊँ। उनका विरोध करने की आवश्यकता ही क्या है ? कभी-कभी मैं बड़ा बेपरवा हो जाया करता हूँ। अभी मुझमें लड़कपन है, परंतु भविष्य में बिलकुल गंभीर होने की आशा करता हूँ।'

'यह बात नहीं है एंटिओकस, तुम पर्याप्त गंभीर और एकाग्र चित्त हो।'—पाल ने कहा—इस अवस्था में स्वभावतः तुम्हें चंचल और विनोद-प्रिय होना ही चाहिए। तुम अपने जीवन को सफल बनाने की तैयारी अवश्य करो, परंतु अपने लड़कपन को रखते हुए।'

'क्या मैं लड़कपन नहीं करता ?'—पट्रिओक्स ने उसका विरोध किया—'मैं बराबर खेलता हूँ। पर आपने मुझे कभी खेलते देखा नहीं। यदि मुझे खेलने में आनंद नहीं आता तो फिर खेलने की आवश्यकता ? मेरे लिए तो और भी आमोद प्रमोद के बहुत-से साधन हैं। गिर्जाघर का घंटा बजाने में बड़ा सुख मिलता है। आप ही, मुझे क्या आनन्द मनाने का कम अवसर मिला था ? मैं आनंदपूर्वक सन्दूक को लेकर पहाड़ पर इतने ऊँचे चढ़ गया था। आप घोड़े पर सवार थे, फिर भी मैं आपसे पहले ही पहुँच गया। मुझे लौटकर फिर घर आने में वैसा ही आनन्द आया। आज मुझे उस समय बड़ा ही आनन्द आया बड़ी प्रसन्नता हुई'—लड़के की आँखें उस समय नीचे झुक गईं, जब उसने कहा—'जब आपने निना माशा के ऊपर से भूत उतार दिया।'

'तुम उसमें विश्वास करते हो ?'—पाल ने मंदस्वर में पूछा। उसने देखा कि लड़के की दृष्टि ऊपर की ओर है। उसके चेहरे पर आश्चर्य और विश्वास स्पष्ट झलक रहा है। उसने उसी समय अपनी आँखें नीची कर लीं—मानो अपने हृदय पर पड़ी हुई अंधकार की छाया को छिपाने के लिए।

'जब हम बालक रहते हैं तो हमारे विचार एकदम से होते हैं। इसीसे हमें सभी वस्तुएँ सुंदर और महान् प्रतीत होती हैं'—पाल बहुत क्षुब्ध होकर बोल रहा था—'परन्तु जब हम बड़े हो जाते हैं तो वे ही वस्तुएँ भिन्न रूप में दिखाई देती हैं। किसी कार्य को करने के पूर्व विचार लेना आवश्यक है, जिससे पछताना न पड़े।'

'मुझे विश्वास है कि मैं नहीं पछताऊँगा।'—लड़के ने स्थिरता के साथ कहा—'क्या आपको पछताना पड़ रहा है? नहीं, तो फिर मैं क्यों पछताऊँगा?'

पाल ने अपनी आँखें ऊपर कीं। उसने फिर सोचा कि एक कोमल बालक की निश्छल आत्मा मेरे हाथ में है। पौधे की भाँति सँवारने के लिए यदि उसमें बेपरवाही से हाथ लगेंगे तो वह सदैव के लिये नष्ट-भ्रष्ट हो जाएगा। भय ने उसे फिर धर दबाया। वह चुप हो गया।

पीछे बैठी हुई वह स्त्री शांतिपूर्वक पादरी की बातें सुन रही थी, परंतु अब पादरी की बातों ने उसके हृदय में कुछ घबराहट उत्पन्न कर दी। उसने अपने सामने की दराज खींची। इसी में वह अपने रुपए पैसे रखा करती थी। कुछ जड़ाऊ अँगूठियाँ और गहने भी उसी में रखे थे। गाँव की कोई स्त्री उन्हें थोड़े से रुपयों के लिए बंधक रख गई थी। उसके मस्तिष्क के तामसिक भाग में कुछ बुरे विचार उसी प्रकार चमक उठे, जैसे दराज के अँधेरे खाने में वे गहने चमक रहे थे।

'पादरी इसीलिए डर रहा है कि एंटिओकस किसी न किसी दिन उसे यहाँ से निकाल भगावेगा'—वह सोचने लगी।—'अथवा उसे रुपयों की आवश्यकता होगी। अभी वह अपना संकोच दूर करने में लगा है। वह शीघ्र ही कुछ कर्ज माँगेगा।'

उसने धीरे से दराज बंद कर दिया और शांत हो गई। वह यहाँ सदैव चुपचाप बैठी रहा करती। उसके ग्राहक सामने वार्तालाप

किया करते, पर वह कभी हस्तक्षेप न करती—कभी कभी ताश के खेल में उसकी सम्मति माँगी जाती तो भी वह मौन ही रह जाती। उसने चुप रहकर अपने बच्चे एटिओकस को उसके विरोधी से स्वत भिड़ने के लिए छोड़ दिया।

'विश्वास न करना कैसे सम्भव हो सकता है ?'—लड़के ने भय और आश्चर्य-मिश्रित स्वर में कहा।—'निना माशा को भूत लगा था या नहीं ? क्यों, मैंने स्वय देखा था कि उसके ऊपर चढ़ा हुआ भूत उसे पिंजडे में बंद भेड़िए की भाँति कँपा रहा है। आपकी प्रार्थना के शब्दों के अतिरिक्त और किसमें इतनी सामर्थ्य थी कि उसे छुड़ाता।'

'हाँ, ठीक है, भगवान की प्रार्थना सब कुछ कर सकती है।'—पाल ने स्वीकार किया। वह अकस्मात् अपनी कुर्सी पर से उठकर खड़ा हो गया।

क्या वह जा रहा है ? एटिआकस ने तृषित नेत्रों से उसकी ओर देखा।

'क्या आप जा रहे हैं ?'—वह बोल उठा।

क्या यही पादरी का शुभागमन था ? वह दौड़कर कठघरे में माँ के पास चला गया और निराशा-जनक दृष्टि से उसे निहारने लगा। वह घूम गई। उसने टाँड पर से शराब की एक बोतल उतारी। वह भी निराश हो गई थी। उसे आशा थी कि आज मुझे पादरी को भी कर्ज देने का अवसर प्राप्त होगा। चाहे सूद थोड़ा ही मिलता, पर भगवान् की समक्ष से सूदखोरी के व्यवसाय पर

पर्दा तो पड़ जाता। पर नहीं, वह तो केवल एटिओकस को यह बतलाने आया था कि पादरी होना बढ़ई बनना नहीं है। अस्तु, उसका आतिथ्य करना आवश्यक था।

'परंतु आप इस प्रकार नहीं जा सकेंगे। कुछ आतिथ्य-सत्कार तो ग्रहण करना ही होगा। यह शराब बहुत पुरानी है।'

एटिओकस पहले ही से हाथ में तश्तरी लिए और उसके ऊपर एक छोटा सा काँच का प्याला रखे खड़ा था।

'तो फिर थोड़ी-सी ही लूँगा।'—पाल ने कहा।

कठघरे के ऊपर से झुककर उस स्त्री ने बड़ी सावधानी से प्याले में शराब भर दी। पाल ने उसे उठा लिया। प्याले में भरी शराब से गुलाब की-सी सुगंधि उड़ रही थी। उसने गिलास पहले एटिओकस के ओठों से लगाया, फिर अपने अधरों पर रखा।

'तो फिर भावी पादरी की मंगल कामना करते हुए हम इसे पीते हैं।'—उसने कहा।

एटिओकस कृतज्ञता से कठघरे की ओर झुक गया। उसके जीवन का वही सबसे सुखमय क्षण था। वह रमणी बहुमूल्य बोतल को रखने के लिए टाँड की ओर मुड़ी। लड़का प्रसन्नता से उन्मत्त हो गया—दोनों में से किसी ने भी नहीं देख पाया कि पाल का चेहरा पीला पड़ गया है, फक हो गया है। वह द्वार की ओर विस्फारित नेत्रों से देख रहा था, मानों कोई भूत चला आ रहा हो।

श्याम वस्त्राच्छादित कोई मूर्ति चुपचाप मैदान की ओर से भागती हुई शराब की दूकान की ओर चली आ रही थी। वहाँ

पहुँचकर उसने एक बार अपनी बड़ी-बड़ी आँखों को फाड़ फाड़कर चारों ओर देखा। इसके उपरात वह दूकान में घुस गई।

यह एगनेस की नौकरानी थी। पाल दूकान के कोने में बढ़ गया, मानों वह छिपना चाहता हो। पर तुरत किसी आतरिक प्रेरणा से प्रेरित होकर आगे बढ़ आया। उसके माथे में चक्कर आ रहा था। उसने बड़ी कठिनता से अपने को सँभाला। उसी समय उसे स्मरण हो आया कि मैं यहाँ अकेला नहीं हूँ। मुझे अपनी अवस्था को दूसरों की दृष्टि से बचाना चाहिए। इसलिए वह शातिपूर्वक खड़ा हो गया। परतु उसकी यह इच्छा नहीं थी कि वह मैं उस दासी की बातें सुने। वह तो भागकर जान बचाना चाहता था। उसके हृदय की गति रुक गई। उसके सारे शरीर का रक्त मस्तक में एकत्र होकर कानों में गूँजने लगा। फिर भी उस दासी के शब्द उसके अंतस्तल तक घुस गए।

'वह गिर पड़ी'—उसने निश्वास छोड़ते हुए कहा।—'और उसकी नाक से रक्त की धारा बह निकली, ऐसा विकट रक्त प्रवाह कि हम लोगों को नाक फूट जाने का भ्रम हो गया। अभी तक खून जारी है। जरा मुझे मिस्र देश की कुजियाँ तो दे दें। उसीसे रक्त जाना बद होगा।'

एटिओकस हाथ में प्याला लिए उन लोगों की बातें सुन रहा था। वह ताली लाने दौड़ गया। तालियाँ एक पुराने गिर्जे की थीं, जो अब टूट फूट गया था। वहाँ की चाभी कधे पर झुलाते ही नाक से रक्त जाना कम हो जाया करता था।

'यह सब बहाना है'--पाल सोच रहा था।—'इस कथन में कुछ भी सत्यता नहीं है। उसने मुझे अपने पास खींच लाने के लिए इसे गुप्तचर बनाकर भेजा है। शायद, उससे इसकी भी दोस्ती है।'

उसके हृदय की भीतरी तह में शंका बड़ी तेजी से बढ़ रही थी। उसके हृदय में द्वंद्व छिड़ा हुआ था। नहीं, वह मिथ्या नहीं बोल सकती। एगनेस कभी अपनी नौकरानियों से यह बात नहीं कह सकती। वह अवश्य अस्वस्थ है। पाल ने अपने हृदय में भोली-भाली एगनेस का चित्र खींचा—सारा शरीर रक्तरंजित उसीने उसे गिरने को बाध्य किया था—'हमने तो समझा था कि माथे के भीतर कोई बात हो गई है ?'

उसने देखा कि कठघरे के भीतर खड़ी दासी उसकी अन्य-मनस्कता के कारण उसे आश्चर्यान्वित दृष्टि से देख रही है।

'पर ऐसा हुआ क्योंकर ?'—उसने दासी से शांत स्वर में पूछा। मानो अपनी जिज्ञासा को अपने ही अंतःकरण में छिपा रहा हो।

'मैं उस समय मकान पर नहीं थी, जिस समय वह गिरी। प्रातःकाल ही यह दुर्घटना हुई। मैं उस समय झरने पर गई थी। जब मैं लौटकर आई तो देखा कि वह अस्वस्थ पड़ी है। वह द्वार पर गिर पड़ी थी। उसकी नाक से रक्त जा रहा था। पर मैं समझती हूँ कि चोट की अपेक्षा उसके ऊपर भय का ही अधिक प्रभाव पड़ा है। रक्त बंद हो गया था। मुख पीला पड़ गया था। उसने कुछ भोजन भी नहीं किया है। इस समय फिर रक्त जाने लगा है। वह कुछ बक झक भी रही है। मैं घबड़ा गई हूँ।'—एंटिओकस के

हाथ में चाभी लेकर उसने कहा—'और यहाँ इस मकान में हम लोग केवल स्त्रियाँ ही हैं।'

वह स्त्री द्वार की ओर बढ़ने लगी, पर उसकी दृष्टि पाल के ऊपर गड़ी थी, मानों वह अपनी दृष्टि के साथ पाल को भी खींच लेना चाहती हो। पास ही कठघरे में बैठी एटिओकस की माँ दबे स्वर में बोल उठी—'आप ही जाकर उसे क्यों नहीं देख आते?'

उसने दोनों हाथों को कसकर मला। फिर बोला—'मैं नहीं समझता मुझे बहुत देर हो गई है ।'

'हाँ, हाँ, चलिए न!'—दासी ने भी जोर दिया।—'मेरी मालकिन बहुत प्रसन्न होंगी और इससे उन्हें कुछ सांत्वना भी मिलेगी।'

'इसके मुख से साक्षात् शैतान बोल रहा है।'—पाल ने सोचा। पर वह चुपचाप उसके पीछे चलने लगा। एटिओकस के कंधे का सहारा लिए वह चला जा रहा था। बालक भी समुद्र के वक्ष पर बहते हुए तख्ते की भाँति बे रोक टोक चल रहा था।

छोटे गिर्जे के द्वार पर पहुँचकर लड़के ने द्वार खोलना चाहा। ने देखा कि माँ ने द्वार बंद कर लिए हैं। वह खड़ा हो गया। माँ ने द्वार बंद कर लिए, क्योंकि वह पहले ही समझ

'यह सब बहाना है'—पाल सोच रहा था।—'इस कथन कुछ भी सत्यता नहीं है। उसने मुझे अपने पास खींच लाने के लि इसे गुप्तचर बनाकर भेजा है। शायद, उससे इसकी भी दोस्ती है

उसके हृदय की भीतरी तह में शंका बड़ी तेजी से बढ़ र थी। उसके हृदय में द्वंद्व छिड़ा हुआ था। नहीं, यह मिथ्या नहीं बोल सकती। एगनेस कभी अपनी नौकरानियों से यह ब नहीं कह सकती। वह अवश्य अस्वस्थ है। पाल ने अपने हृदय भोली-भाली एगनेस का चित्र खींचा—सारा शरीर रक्तरंजि उसीने उसे गिरने को बाध्य किया था—'हमने तो समझा था माथे के भीतर कोई बात हो गई है ?'

उसने देखा कि कठघरे के भीतर खड़ी दासी उसकी अन्य-मनस्कता के कारण उसे आश्चर्यान्वित दृष्टि से देख रही है।

'पर ऐसा हुआ क्योंकर ?'—उसने दासी से शांत स्वर में पूछा, मानो अपनी जिज्ञासा को अपने ही अंत:करण में छिपा रहा हो।

'मैं उस समय मकान पर नहीं थी, जिस समय वह गिरी। प्रातःकाल ही यह दुर्घटना हुई। मैं उस समय झरने पर गई थी। जब मैं लौटकर आई तो देखा कि वह अस्वस्थ पड़ी है। वह द्वार पर गिर पड़ी थी। उसकी नाक से रक्त जा रहा था। पर मैं समझती हूँ कि चोट की अपेक्षा उसके ऊपर भय का ही अधिक प्रभाव पड़ा है। रक्त बंद हो गया था। मुख पीला पड़ गया था। उसने कुछ भोजन भी नहीं किया है। इस समय फिर रक्त जाने लगा है। वह कुछ बक झक भी रही है। मैं घबड़ा गई हूँ।'—एंटिओकस के

हाथ से चाभी लेकर उसने कहा—'और वहाँ उस मकान में हम लोग केवल स्त्रियाँ ही हैं।'

वह स्त्री द्वार की ओर बढ़ने लगी, पर उसकी दृष्टि पाल के ऊपर गड़ी थी, मानों वह अपनी दृष्टि के साथ पाल को भी खींच लेना चाहती हो। पास ही कठघरे में बैठी एटिओकस की माँ दबे स्वर में बोल उठी—'आप ही जाकर उसे क्यों नहीं देख आते?'

उसने दोनों हाथों को कसकर मला। फिर बोला—'मैं नहीं समझता मुझे बहुत देर हो गई है ।'

'हाँ, हाँ, चलिए न!'—दासी ने भी जोर दिया।—'मेरी मालकिन बहुत प्रसन्न होंगी और इससे उन्हें कुछ सान्त्वना भी मिलेगी।'

'इसके मुख से साक्षात् शैतान बोल रहा है।'—पाल ने सोचा। पर वह चुपचाप उसके पीछे चलने लगा। एटिओकस के कंधे का सहारा लिए वह चला जा रहा था। बालक भी समुद्र के वक्ष पर बहते हुए तख्ते की भाँति बे-रोक-टोक चल रहा था।

छोटे गिर्जे के द्वार पर पहुँचकर लड़के ने द्वार खोलना चाहा। पर पाल ने देखा कि माँ ने द्वार बंद कर लिए हैं। वह खड़ा हो गया।

'मेरी माँ ने द्वार बंद कर लिए, क्योंकि वह पहले ही समझ गई थी कि मैं अपने वचनों का पालन नहीं करूँगा'—उसने अपने मन में सोचा। फिर वह उस लड़के से बोला—'एटिओकस, तुम अभी मकान चले जाओ।'

दासी भी वहीं रुक गई थी। वह दो चार कदम आगे बढ़ी, फिर रुक गई और देखा कि लड़का घर की ओर लौट रहा है और पादरी

दरवाजे में ताली लगाकर घुमा रहा है। वह उसके पास लौट आई।

'मैं नहीं आऊँगा'—उसने उसकी ओर मुड़कर कहा। वह उसकी ओर टकटकी लगाकर देख रहा था, मानों उसके बाह्य वेश से उसके स्वभाव का अंदाज लगा रहा हो।—'यदि तुम्हें मेरी अत्यंत आवश्यकता मालूम हो, तो मुझे आकर बुला ले जाना।'

वह बिना कुछ कहे ही चली गई। पाल अपने मकान के द्वार के सामने खड़ा रह गया। उसका एक हाथ ताली पर था। ताली मानों ताले में घूमने से इनकार कर रही हो। वह भीतर नहीं जा सका, यह उसकी शक्ति के बाहर था। वह उस मार्ग पर भी आगे नहीं बढ़ा, जिसपर वह टहल रहा था। उसने समझा कि मुझे यहीं खड़ा रहना होगा, ठीक उसी द्वार के सामने जिसकी ताली हाथ में थी।

इसी बीच एंटिओकस मकान पहुँच गया। माँ ने द्वार बंद कर दिए। वह गिलासों को साफ करके एक ओर रखने लगी। सबसे प्रथम उसने उसी गिलास को माँजा जिसे पादरी ने पवित्र किया था। इसके उपरांत एंटिओकस ने उसे साफ कपड़े से पोछकर सुखा डाला। पर वह उसे अपने अँगूठे से बराबर रगड़ता जा रहा था। उसने उसे दीपक के प्रकाश में रख दिया और उसके चमकने की परीक्षा करने लगा। वह अपने परिश्रम की सराहना कर रहा था। क्योंकि वह गिलास हीरे की भाँति चमचमाने लगा। इसके बाद उसने उसे बड़ी सावधानी से एक खाने में अलग रख दिया, मानो वह भी प्रार्थना के समय की आवश्यक सामग्री हो।

---

## ११

पाल भी अपने मकान में चला गया। मकान की अँधेरी सीढ़ियों पर चलते हुए उसे स्मरण हो आया कि इसी प्रकार मैं एक बार और भी कहीं अँधेरे में गया था। उस समय मेरा बचपन था। उसे यह स्मरण नहीं आ रहा था कि वह कौन सा स्थान था। आज भी उसी दिन की भाँति उसे अपने चारों ओर भय ही भय दिखाई दे रहा था। इससे बचने का एकमात्र उपाय था, अपने कार्यों पर सतर्क दृष्टि रखना। वह ऊपर अपने कमरे के दरवाजे पर पहुँचा। अब वह सुरक्षित था। परन्तु द्वार खोलने के पूर्व वह क्षणभर के लिए ठिठक गया। इसके उपरान्त वह अपने पैर के पंजों के बल दबे पाँव माँ के द्वार पर पहुँचा और उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना ही उसके कमरे में घुस गया।

'मैं हूँ'—उसने रुखाई से कहा।—'रोशनी जलाने की आवश्यकता नहीं, मुझे कुछ बातें कहनी हैं।'

माँ ने बिछौने पर करवट बदली। इसकी आवाज पाल के कान में पड़ी। बिछौने के नीचे की चटाइयाँ खड़खड़ा रही थीं।

उन दोनों की आत्माएँ अंधकार में बातें करना चाहती थीं, मानों वे इस संसार को त्याग चुकी हों।

'क्या तुम हो पाल? मैं स्वप्न देख रही थी'—उसने निद्रित किंतु भयभीत स्वर में कहा।—'मुझे जान पड़ा कि कोई नाच रहा है, और बाँसुरी बज रही है।'

'माँ, सुनो'—उसने माँ की बातों को अनसुनी करके कहा।—'वह स्त्री, एगनेस, अस्वस्थ है। वह आज सवेरे से ही अस्वस्थ है, वह गिर पड़ी है। मालूम होता है उसके सिर के किसी भीतरी अंग में चोट आ गई है उसकी नाक से बराबर खून जा रहा है।'

'उसका जीवन संकट में है? तुम्हारा यही तात्पर्य है न, पाल?'

अंधकार में उसके शब्द गूँज उठे, पर उनमें भय था। पाल ने एक श्वास में दासी के शब्दों को दोहरा दिया—

'आज प्रातःकाल ही यह दुर्घटना हुई है—उस पत्र को पाने के उपरांत ही। दिन भर वह सुस्त पड़ी रही, भोजन तक नहीं किया। इस समय वह अधिक सुस्त हो गई है। कुछ बेहोशी भी आ गई है।'

उसे जान पड़ा कि मैं बातें बढ़ाकर कह रहा हूँ। वह चुप हो गया। उसकी माँ कुछ नहीं बोली। रात्रि के अंधकार में कुछ देर के लिए सन्नाटा छा गया। मालूम हो रहा था कि दो शत्रु अंधकार में एक दूसरे को खोज रहे हैं और व्यर्थ खोज रहे हैं। चटाई पुनः चरमरा उठी, शायद माँ अपनी ऊँची शय्या पर उठ बैठी। क्योंकि अब उसका स्वर स्पष्टतया तेज था और ऊँचाई पर से आता हुआ मालूम होता था।

'पाल तुमसे यह सब किसने कहा? शायद यह सत्य नहीं है।'

पाल ने फिर सोचा कि मेरी ही आत्मा माँ के द्वारा मेरे विचार व्यक्त कर रही है, पर उसने उत्तर दिया—

'यह सत्य भी हो सकता है। पर प्रश्न तो यह नहीं है माँ! मैं डर रहा हूँ कि कहीं वह मूर्खता न कर बैठे। वह अकेली है, बिलकुल नौकरों के हाथ में। मैं उसे अवश्य देखने जाऊँगा।'

'पाल!'

'मैं अवश्य जाऊँगा।'—वह खूब ज़ोर से चिल्ला उठा।

माँ को समझाने के लिए नहीं, अपने आपको समझाने के लिये।

'पाल तुमने प्रतिज्ञा की थी।'

'हाँ, मैंने प्रतिज्ञा की थी, इसीलिए—हाँ, इसीलिए मैं जाने के पूर्व तुमसे कहने आया हूँ। मैं तुमसे यह आवश्यक बात कह रहा हूँ कि मुझे उसके पास अवश्य जाना चाहिए, मेरा हृदय मुझे जाने के लिए बाध्य कर रहा है।'

'एक बात तो बतलाओ, पाल, क्या तुमने उस दासी को देखा है? हम लोगों के ऊपर प्रलोभन का कुचक्र चल रहा है, शैतान सैकड़ों रूप धर कर आ रहा है।'

'तुम समझती हो, मैं झूठ बोल रहा हूँ। मैंने दासी को देखा था।'

'सुनो—कल रात में मैंने पिछले पादरी को देखा था, मैंने सोचा कि इस समय उसीके पैरों की आहट सुनाई पड़ रही है।

कल रात्रि में'—वह मंद स्वर से बोली।—'वह मेरे बगल ही में आग के पास बैठा था। मैं तुमसे ठीक कहती हूँ, मैंने सचमुच उसे देखा था। उसकी दाढी घुटी नहीं थी। उसके जो दो एक दाँत बचे हुए हैं, धूम्रपान करते-करते काले पड़ गए हैं। उसने कहा था—'मैं अभी जीवित हूँ और यहीं हूँ। मैं तुम्हें और तुम्हारे पुत्र को शीघ्र ही यहाँ से निकाल बाहर करूँगा।' यदि तुम पाल को पाप से बचाना चाहती थीं तो तुम्हें उसे पैतृक व्यवसाय सिखाना चाहिए था।' उसने मेरे मस्तिष्क को ऐसा क्षुब्ध कर दिया है कि मैं यह नहीं समझ पाती कि मैंने उचित किया है वा अनुचित। पर मुझे दृढ़ विश्वास है कि मेरे पास बैठी हुई वह मूर्ति किसी मृत की अपवित्र आत्मा ही थी। जिस दासी को तुमने देखा है वह भी शायद लालच का दूसरा परिवर्तित स्वरूप रहा होगा।'

वह अंधकार में ही मुसकुराने लगा। पर उसी समय उस दासी को खेत में दौड़ती हुई व्यग्र मूर्ति उसे स्मरण हो आई। उसे चारों ओर से एक अज्ञात भय ने घेर लिया, वह आत्म विस्मृत हो गया।

'यदि तुम वहाँ जाओगे'—उसकी माँ कहती गई।—'तो क्या तुम्हें विश्वास है कि तुम्हारा पुन पतन नहीं होगा? माना कि तुमने दासी को देखा है और वह बीमार भी है, पर क्या तुम्हें विश्वास है कि तुम पतित नहीं हो सकते?'

वह सहसा खड़बड़ा उठी। मानों अंधकार में वह पाल का पीला मुख देख रही हो। वह उसके प्रति सदय हो गई। वह पाल को उस रमणी के पास जाने से कैसे रोके? माना एगनेस

दुखित होकर मर जायगी। मान लो पाल ही दुखित होकर मर जाए ? माँ उसी भाँति द्विविधा में पड़ गई जिस प्रकार पाल पटिओक्स के विषय में पड़ गया था।

'हे ईश्वर!'—वह सिसक उठी। उसे स्मरण हो आया कि मैंने अपने को जगदीश्वर के भरोसे छोड़ दिया है। वही कठिनाइयों को दूर कर सकता है। अब उसे एक प्रकार की शांति का अनुभव होने लगा, मानो उसने कोई बड़ी भारी उलझन सुलझा ली हो।

वह पुन अपनी तकिया पर सिर रखकर लेट गई। लेटने का शब्द पुन पाल के कान के पास आ पहुँचा।

'यदि तुम्हारा हृदय जाने को बाध्य कर रहा था, तो तुम चले क्यों नहीं गए, यहाँ आने की आवश्यकता क्या थी ?'

'क्योंकि मैं वचन दे चुका था और तुमने मुझे यह धमकी दी थी कि यदि तुम वहाँ गए तो मैं तुम्हें त्याग दूँगी। मैंने कसम खाली थी ।'—पाल ने अत्यत दु ख के साथ कहा। उसकी इच्छा हुई कि मैं चिल्ला उठूँ—'माँ! मुझे प्रतिज्ञा पालन के लिए बाध्य करो।" परतु उसके शब्द मुख से बाहर न आ सके। माँ फिर बोली—'तो जाओ, वही करो, जिसके लिए तुम्हारी आत्मा तुम्हे प्रेरितकरे।'

'माँ चिंतित मत होओ'—उसने शय्या के एकदम निकट जाकर कहा। कुछ देर तक वह उसी प्रकार स्थिर खड़ा रहा। दोनों चुप थे। वह इन धुँधले विचारों में पड़ा था कि मैं एक वेदी के समुख खड़ा हूँ, माँ किसी रहस्यमयी प्रतिमा के रूप में मेरे ऊपर लेटी हुई है। वह सोचने लगा कि मैं किस प्रकार अपने बचपन में

एगनेस के हाथ चूमने के लिये भेजा जाता था। उस पूर्वस्मृति ने उसे इस समय कुछ विचलित-सा कर दिया। उसने सोचा कि यदि मैं इस समय अकेला और माँ से वियुक्त होता तो अब तक कभी का एगनेस के पास चला गया होता। माँ ने ही मुझे रोक रखा है। वह यह नहीं समझ पा रहा था कि अब भी मेरा हृदय माँ के प्रति कृतज्ञ है या नहीं।

'चिंतित होने की आवश्यकता नहीं।'—फिर भी पाल इतनी देर तक भयभीत हो रहा था। वह समझता था कि माँ अभी कुछ और कहेगी। अथवा दीपक जलाकर मेरे नेत्रों से मेरे विचारों का स्पष्टीकरण करेगी। शायद वह जाने से फिर मना करे। इसी समय उसके पैर फैलाने से चटाई फिर चरमरा उठी।

पाल बाहर निकल गया।

उसने सोचा कि आखिर मैं कोई आवारा तो हूँ नहीं। मैं किसी बुरे अभिप्राय अथवा वासना के वशीभूत होकर तो जा नहीं रहा हूँ। मुझे दृढ विश्वास है कि वह संकट में पड़ी है, मैं इसे दूर कर सकता हूँ। इसका उत्तरदायित्व भी मेरे ही ऊपर है। शरत्प्रभा में आलोकित हरे हरे मैदान पर दौड़ती हुई उस दासी की मूर्ति उसे पुन स्मरण हो आई। वह मुड़कर उसकी ओर देख रही थी। उस समय उसकी आँखें चमक उठी थीं जिस समय उसने कहा था—

'मेरी मालकिन को—आपके आने से—धैर्य बँध जायगा।'

उसके पास से भाग जाने का प्रयत्न उसे भद्दा जँचने लगा।

मेरा कर्तव्य है कि इसी समय जाकर उसे धीरज बँधाऊँ। रुपहली चाँदनी से ढके मैदान को पार करते समय वह शांति का अनुभव कर रहा था। वह प्रसन्न था। वह फतींगों की भाँति चाँदनी की ओर आकृष्ट होकर चला जा रहा था। उसे अपने कर्तव्य पालन की अपेक्षा इस बात पर अधिक प्रसन्नता हो रही थी कि मैं कुछ क्षणों बाद एगनेस के पास पहुँच जाऊँगा। हरे भरे मैदान की मधुर सुगंधि और चन्द्रमा के स्निग्ध प्रकाश ने उसकी आत्मा को पवित्र कर दिया। ऊपर से गिरती हुई ओस ने उसके काले वस्त्रों में प्रविष्ट होकर उसे नहला दिया।

एगनेस बालिका थी, उसमें बालकों की सी सहज कोमलता थी। उस पाषाण-निर्मित भवन में अकेली निवास करती थी। उसने इस बात से लाभ उठाया। जाल में फँसे हुए पक्षी की भाँति उसने उसे अपने हाथ में कर लिया।

वह आगे बढ़ता गया। नहीं, वह बुरा मनुष्य नहीं था, किंतु ज्यों ही वह मकान की सीढ़ियों पर पहुँचा, ठिठक गया। सीढ़ियों के पत्थर तक मानो उसका तिरस्कार कर रहे थे। वह धीरे-धीरे ऊपर चढ़ गया। हिचकिचाते हुए किवाड़ का कुंडा खटखटाया। उसे वहाँ खड़े खड़े तिरस्कार का अनुभव होने लगा। चाहे जो हो, पर वह फिर से द्वार नहीं खटखटाना चाहता था। अंत में, द्वार खुल गया और एक विषण्णवदना दासी ने उसे भीतर बुलाकर पूर्व परिचित कमरे की ओर संकेत कर दिया।

सभी चीजें उसी प्रकार थीं—पिछली रात्रि की ही भाँति, जब

एगनेस ने उसे बगलवाले द्वार से चुपके से बुलाया था। छोटा सा द्वार अधखुला पड़ा था, रात्रि की स्निग्ध वायु झाड़ियों से सुरभि लेकर वहाँ प्रविष्ट हो रही थी। दीवार पर टँगे चीतों के मस्तकों में काँच की नकली आँखें गैस के आलोक में चमककर-मानो कमरे की दृश्यावली को सतर्कता से घूर रही हों। भीतरवाले कमरे का द्वार खुला पड़ा था। दासी अन्दर चली गई। लकड़ी के फर्श पर उसकी पद-ध्वनि स्पष्ट सुनाई दे रही थी। कुछ ही देर के बाद एक दरवाजा धड़ाके के साथ खुला, मानो वायु के प्रखर थपेड़े से खड़खड़ा उठा हो। सारा मकान मानो हिल गया। सामने धुँधले प्रकाश में एगनेस का मुरझाया हुआ मुखमंडल देखकर, वह आप से आप आगे बढ़ा। चेहरा पीला पड़ गया था। सघन श्याम केशों की लटें मुख पर लहरा रही थीं। वह छोटी सी मूर्ति भी दीपक के प्रकाश में आगे बढ़ आई। पाल ने शांतिपूर्ण साँस ली।

उसने अपने पीछेवाले द्वार को बंद कर दिया, और किवाड़ों के ऊपर सिर झुकाकर खड़ी हो गई। वह सिर से पैर तक हिल उठी, मानो गिरने ही वाली हो। पाल उसकी ओर बढ़ गया। वह उसे सँभालने के लिए हाथ बढ़ा रहा था, पर उसे छूने का साहस नहीं हो रहा था।

'तुम्हारी तबियत कैसी है ?'—पाल ने दबी जबान से पूछा, पिछले मिलाप में भी वह इसी प्रकार बोला था। उसने कुछ भी उत्तर नहीं दिया। उसका सारा शरीर काँप रहा था। उसके दोनों हाथ सहारे के लिए किवाड़ों पर रखे थे। वह चुपचाप खड़ी थी।

'एगनेस'—क्षणभर के बाद वह बोला।—'हमें साहस से काम लेना चाहिए।

गत दिवस की भाँति—जब वह सुनहरी लड़की को मंत्र से भाड़ रहा था—उसे आज भी जान पड़ा कि मेरी बातों में मिथ्या की गंध आ रही है। एगनेस की आँखों के ऊपर उठते ही उसकी आँखें आप से आप नीचे की ओर झेंप गईं। उसने कहा—'हाँ'। परन्तु प्रसन्नता और क्रोध-मिश्रित स्वर में।

'तो, तुम यहाँ किसलिए आए ?'

'मैंने सुना कि तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक नहीं है।'

वह तनकर खड़ी हो गई, और मुख पर आते हुए बाला को झटकारकर पीछे कर दिया।

'मैं बिलकुल ठीक हूँ, मैंने तो तुम्हें बुलाया नहीं।'

'यह मैं जानता हूँ। मैं यों ही चला आया—मैं कोई कारण नहीं देखता कि यहाँ न आऊँ ? मुझे हर्ष है कि दासों की गप्पें झूठी निकलीं और तुम बिलकुल स्वस्थ हो।'

'नहीं'—उसकी बात काटकर उसने फिर कहा।—'मैंने तुम्हें नहीं बुलाया। तुम्हें भी नहीं आना चाहिए था। जब तुम आ ही गए, तो मैं तुमसे पूछना चाहती हूँ—तुमने ऐसा क्यों किया : बोलो ऐसा क्यों किया ?'

लगातार सिसकने के कारण उसका स्वर अस्फुट हो गया। उसके हाथ अनायास ही सहायता पाने की अभिलाषा से आगे बढ़ गए। पाल डर गया। उसे अपने आने का दुःख होने लगा

उसने पाल के हाथ पकड़ लिए और ले जाकर पलँग पर बैठा दिया। इसपर वे दोनों प्राय' एक साथ बैठा करते थे। पर आज पाल ने उससे हाथ छुड़ा लिया।

वह उसे छूने तक में डर रहा था। वह एक मूर्ति की भाँति थी—ऐसी मूर्ति जिसे तोड़-फोड़कर उसने ही फिर से जोड़ रखा था। वह वहाँ बैठी अवश्य थी, पर उसके निखर पड़ने में अधिक विलंब नहीं था। जरा-सा धक्का लगने से वह छिन्न भिन्न हो सकती थी। इसीलिए वह उसे छूने से भी डर रहा था। वह मन में सोच रहा था—

'यह अच्छा ही है, मैं स्वतंत्र हो जाऊँगा'—परंतु हृदय से वह जानता था कि मैं फिर कभी उसी माया जाल में फँस सकता हूँ। इसीलिए वह उसे छूने मे हिचक रहा था। दीपक के प्रकाश में उसने पास से देखा कि उसके मुख में बड़ा परिवर्तन हो गया है। उसका मुँह आधा खुला हुआ था, उसके अधरों का रंग गुलाब की मुरझाई हुई पँखुड़ियों की भाँति फीका पड़ गया था। चेहरा अपेक्षाकृत कुछ अधिक लंबा सा प्रतीत हो रहा था। आँखों के धँस जाने से गालों के ऊपर की हड्डियाँ कुछ कुछ उभड़ आई थीं। विषाद के एक ही आघात ने एक ही दिन में उसे बीस वर्ष आगे ढकेल दिया था। फिर भी उसके कंपित अधरों में बालकों की सी सहज कोमलता वर्तमान थी। दाँतों के ऊपर फैले हुए ओंठ आँसुओं को रोकने के प्रयत्न में काँप रहे थे। उसका एक हाथ पलँग की गद्दी पर निर्जीव-सा पड़ा था और अपने दूसरे

सहयोगी का आवाहन कर रहा था। पाल क्रुद्ध हो रहा था। उसे साहस नहीं हो रहा था कि दो आत्माओं के टूटे हुए बंधन को फिर से जोड़ दे। परन्तु उसे पुन पूर्व ही की भाँति अपनी बातें मिथ्या प्रतीत हो रही थीं।

'एगनेस, मेरी बात सुनो। विगत निशा में हम दोनों निराश की गहरी खाई के किनारे खड़े थे—परमेश्वर ने हम लोगों को अपने भरोसे छोड़ दिया था, हम तेजी से उस खाई में सरक रहे थे। परन्तु अब उस जगत्पिता ने हमारा हाथ फिर से पकड़ लिया है। अब वह हमें निर्धारित मार्ग दिखा रहा है। अब हमें उसमें गिरना नहीं चाहिए। सुना एगनेस!'—उसका नाम लेते-लेते भावावेश में वह काँप उठा।—'तुम समझती हो, मुझे कष्ट नहीं है? मुझे ऐसा कष्ट हो रहा है, मानो जीते-जी कब्र में गाड़ दिया गया होऊँ। मैं समझ रहा हूँ कि दु:खों का वारापार नहीं है। परन्तु तुम्हारे हित के लिए, तुम्हारी मुक्ति के लिए मैं सब कुछ सहन करूँगा। सुनो एगनेस, हिम्मत बाँधो।—उस प्रेम के लिए जिसने हमें तुम्हे मिलाया है, परब्रह्म की उस शुभाशा के लिए जिसने हमें-तुम्हे इस परीक्षा में डाला है। तुम मुझे शीघ्र ही भूल जाओगी तुम शीघ्र ही स्वस्थ हो जाओगी, तुम अभी युवती हो, तुम्हारा सारा जीवन अभी सामने पड़ा है। जब कभी तुम मेरा स्मरण करोगी, यह एक दुस्वप्न होगा, मानो तुम घाटी में मार्ग भूल गई हो कोई भयानक जन्तु मिल गया हो और वह तुम्हें कुछ हानि पहुँचाना चाहता हो, किंतु भगवान् ने तुम्हे बचा लिया हो। सभी वस्तुएँ जो इस

समय अंधकारमय प्रतीत हो रही हैं शीघ्र ही स्पष्ट हो जायँगी। तब तुम समझोगी कि थोड़ी देर तुम्हें कष्ट पहुँचाकर मैं तुम्हारा लाभ ही कर रहा था—उसी प्रकार निष्ठुर होकर जिस प्रकार कभी-कभी हम रोगियों के प्रति हो जाया करते हैं।'

वह रुक गया, उसके शब्द कंठ से बाहर न जा सके। एगनेस, जरा सँभलकर अपने स्थान पर बैठ गई, उसके नेत्र दीवार पर टँगे बारहसिंघों के सिरों की नकली आँखों की भाँति चमक रहे थे। वह उन्हें घूर रही थी। उसका निहारना उपदेश के समय गिर्जाघर में बैठी स्त्रियों की दृष्टि का स्मरण दिला रहा था—उसकी दृष्टि भी उसी प्रकार उसकी ओर लगी थी। वह उसके शब्दों की प्रतीक्षा कर रही थी। उसी दुर्बल मुद्रा में बिल्कुल शांति और नम्रता के साथ। फिर भी वह एक सामान्य स्पर्श से ही बिखर जा सकती थी। अब तक वह मौन थी। पर ज्यों ही उसने धीरे से सिर हिलाया, उसका मन्द स्वर कानों में सुनाई पड़ा।

'नहीं, नहीं, यह सत्य नहीं है'—वह बोली।

'तो सत्य है क्या ?'—उसने अपना विषादमय मुख उसकी ओर झुकाकर पूछा।

'इस प्रकार तुमने पिछली रात्रि में क्यों नहीं पूछा था ? इसीलिये कि उस समय और प्रकार की सत्यता थी। अब किसीने तुम्हे बाहर देख लिया है, शायद तुम्हारी माँ ने, इसीसे तुम सत्य से डरने लगे। यह ईश्वर का भय नहीं है, जो तुम्हे मेरी ओर से खींच रहा है।'

उसकी इच्छा हो रही थी कि वह जोर से चिल्लाकर उसकी बातों को दबा दे। उसने उसकी कलाई पकड़कर ऐंठी, मानो उसके कहे हुए शब्दों को ही ऐंठ रहा हो। फिर वह धीरे से पीछे हट गया।

'इससे क्या ? तुम समझती हो यह सब कुछ नहीं है ? हाँ, मेरी माँ ने ही सब बातें देख लीं। उसने मुझसे स्वय मेरी अतरात्मा की भाँति बातें की हैं। तुम्हें क्या आत्मा ही नहीं है ? तुम यही उचित समझती हो कि हम अपने आश्रितों को धोखा दें ? तुमने ही यह प्रकट कहा था कि हम लोग इस स्थान से भागकर दूसरे स्थान पर चलकर निवास करें। यदि हम लोग अपने प्रेम में असफल हो जाते तो यह उचित हो सकता था। पर इस प्रकार हमारे भाग जाने से, हमारे पापमय कार्य से कितनों का जीवन नष्ट हो जाता और उसके हेतु हमें अपना बलिदान करना होता।'

पर वह मानो कुछ समझ ही न रही हो। वह केवल एक शब्द पा गई थी, और उसी की भाँति सिर हिला रही थी।

'अतरात्मा ? हाँ, मेरे भी अतरात्मा है, मैं एक अबोध बच्ची नहीं हूँ। मेरी अतरात्मा कहती है कि मैंने तुम्हारी बात सुनकर या तुम्हें यहाँ बुलाकर गलती की। अब क्या ? अब तो समय निकल गया, पहले ही ईश्वर ने सब बातें स्पष्ट क्यों नहीं दिखला दीं ? मैं तो तुम्हारे घर गई नहीं थी, तुम्हीं मेरे घर आए थे। आकर मेरे साथ खेलते थे, मानो मैं बालकों का खिलौना थी। अब मैं क्या करूँ ? तुम्हीं बतलाओ। मैं तुम्हें नहीं भूल सकती, तुम्हारी भाँति अपनी बात को भी नहीं बदल सकती। मैं यहाँ से अवश्य

चली जाऊँगी—तुम मेरे साथ न भी चलो तो भी मैं तुम्हें भूल जाना चाहती हूँ। पर मैं यहाँ से जाऊँगी अवश्य, अथवा ...

'अथवा ?'

एगनेस ने कुछ भी उत्तर नहीं दिया। वह पुन पलँग पर झुक गई, और काँप उठी। उसने हाथ इस प्रकार ऊँचे उठाए, मानो सामने से विक्षिप्तता की छाया को हटाने का प्रयत्न कर रही हो।

वह कुछ भी नहीं बोल सका। हाँ, वह ठीक कहती है, उसे विश्वास दिलाने के लिए पाल जो कुछ कह रहा था वह ठीक नहीं था—यह तो ऐसा सत्य था, जो उन दोनों के बीच दीवार बनकर खड़ा था। वह नहीं समझ पाता था कि किस प्रकार उसे तोड़कर अलग कर दूँ। वह बैठा हुआ विचारों से लड़ रहा था। उसने पाल का हाथ पकड़ लिया, ऐसी मजबूती से मानों कोई शिकंजा हो।

'दीनबंधो !'—आँखें ढककर वह पुकार उठी।—'यदि ईश्वर है तो वियुक्त होने के लिए हमारा मिलाप न कराए। आज तुम इसीलिये आए कि मुझसे प्रेम करते थे। तुम समझते हो कि मैं उसे नहीं समझती ? मैं अवश्य समझती हूँ, और यह सत्य भी है।'

उसने मुँह ऊपर उठाया, अधर काँप रहे थे, नेत्रों से अश्रुधारा बह रही थी। वर्षा में चकाचौंध कर देनेवाली बिजली से उसके नेत्र चमक रहे थे। वह न तो एगनेस का मुखारविंद था, न भूतल की किसी अन्य रमणी का—वह साक्षात् प्रेम का मुख मंडल था।' पाल उसकी गोद में गिर पड़ा। दोनो भुजपाश में आवृत्त हो गए। अधरों से अधर उत्तप्त होकर मिल गए।

# १२

समस्त संसार पारा के लिए निस्सार था। उसे ऐसा मालूम हो रहा था, मानो वह धीरे-धीरे डूबा जा रहा है, भँवर का प्रबल चक्कर उसे दबाकर समुद्र के तल तक लिए जा रहा है। वह पुनः स्वस्थ हुआ। उसने अपने अधर उसके अधरों से हटा लिए। उसने अपने को टूटे हुए जहाज के अभागे यात्री की भाँति बालुका पर असहाय पड़ा पाया। यद्यपि वह सुरक्षित था, फिर भी भय और प्रसन्नता से काँप रहा था। उसमें प्रसन्नता की अपेक्षा भय ही अधिक था। प्रेम के जिस जाल से वह अपने को सदैव के लिए अलग समझ रहा था, उसी सुदृढ़ जाल का आज वह फिर दास बन गया। इसी समय उसे मंद स्वर सुनाई पड़ा—

'मैं जानती थी कि तुम मेरे पास फिर आओगे।'

वह और अधिक कुछ भी नहीं सुनना चाहता था, उसी प्रकार सेंजै एटिओकस के मकान पर दासी की बातें सुनने की उसकी इच्छा नहीं थी। ज्यों ही एगनेस ने उसके कंधे पर अपना सिर झुकाया, उसने उसके मुँह पर हाथ रख दिया। वह दीपक के आलोक में प्रकाशित सचिक्कण केशराशि पर हाथ फेरने लगा। उसके आलिं

गन में वह कितनी छोटी, कितनी असहाय प्रतीत हो रही थी। पर उसी में इतनी महान शक्ति अंतर्निहित थी, जो पाल को समुद्र के धरातल से खींच लाई, जिसने उसे अपने अंत करण तक से विमुख बना दिया। जब वह घाटियों और पहाड़ियों में दौड़ रहा था, तो वह शांतिपूर्वक अपने मकान का द्वार बंद किए बैठी थी। उसे विश्वास था कि वह अवश्य आएगा और वह आया भी।

'तुम जानते हो, तुम जानते हो '—उसने और कुछ कहने की चेष्टा की। उसका कोमल निश्वास मृतक की भाँति पाल की गर्दन को स्पर्श कर रहा था। उसने अपना हाथ फिर उसके मुँह पर रख दिया। उसने अपना मुख स्वयं बंद कर लिया। कुछ क्षणों तक दोनों मौन बैठे रहे। इसके उपरांत पाल ने अपने 'को संभालकर अपने भाग्य पर पुन' अधिकार जमाने की चेष्टा की। वह पुन' उसके पास आया था, हाँ, पर इस समय वह वही पाल नहीं था, जिसकी वह प्रतीक्षा कर रही थी। उसके नेत्र अब तक उसकी सुकुमार केशराशि पर लगे हुए थे—पर इस प्रकार, मानो वह दूर से फेनिल अंबुराशि को देख रहा हो, उसी अंबुराशि को जिससे अभी-अभी उसकी जान बची थी।

'अब तो तुम प्रसन्न हो'—उसने धीरे से कहा।—'मैं आ गया। लौट आया। अब मैं आजीवन तुम्हारा ही रहूँगा।'

उसे जान पड़ा कि एगनेस के हाथ काँप रहे हैं। मानो उनमें विद्रोह की प्रबल इच्छा हो। उसे मालूम हुआ कि वह भी मेरे लिये प्रस्तुत है। वह उन हाथों को सावधानी से पकड़े था—मानो

उसकी आत्मा को वशीभूत करने की अभिलाषा से।

'प्यारी एगनेस, सुनो! मैंने जो दुःख सहन किए हैं, उन्हें तुम नहीं समझ सकोगी, पर यह आवश्यक था। मैंने अपने ऊपर का आवरण छिन्न भिन्न कर दिया। वह अपवित्र था, मैंने जहाँ तक हो सका अपने को घटाया। परंतु अब मैं तुम्हारा ही हूँ, ईश्वर की भी यही इच्छा है कि मैं तुम्हारा ही होकर रहूँ देखो'—वह कहता गया। वह धीरे धीरे, पर बड़े श्रम से बोल रहा था। मानों वह अपने हृदय की गहरी तह से उन शब्दों को बलपूर्वक खींच कर एगनेस को भेंट कर रहा हो—'मैं समझता हूँ, हम लोगों ने वर्षों एक दूसरे को प्यार किया है, हम लोगों ने दूसरों के हृदय में खटकनेवाला आनंद उठाया है, मरणांत कष्ट सहे हैं। सभी विभूतियाँ हमारे हृदय में हैं। एगनेस, मेरी आत्मा की आत्मा एगनेस, अब और बड़ी वस्तु तुम मुझसे क्या चाहती हो? मैं तुम्हें क्या दे सकता हूँ, आत्मा से बढ़कर मेरे पास क्या है?'

वह इतना कहकर चुप हो गया। उसे मालूम हुआ कि वह कुछ नहीं समझ सकी और कुछ समझ भी नहीं सकेगी। उसने उसे और भी दृढ़ भुजपाश में बाँध लिया, मानो जीवन और मृत्यु बँधे हों। वह केवल इसीलिए उससे अब तक प्रेम करता था, पहले से भी अधिक उसका प्रेम जीवन से प्रेम करता था, उस जीवन से, जो प्रतिक्षण द्रुतगति से विनाश की ओर दौड़ा चला जा रहा था।

उसने फिर पाल के कंधे पर से सिर उठाकर उसके मुख-मंडल

की ओर देखा। उसके मुखपर फिर वही कोमलता थी, आँखों में वही विनम्रता।

'अब तुम मेरी बात सुनो'—उसने कहा।—'और अब और इस स्थान को छोड़कर अन्यत्र चलेंगे या नहीं? इस प्रकार के जीवन में हमलोग झूठ मत बोलें। विगत रात्रि के परामर्श के अनुसार हम लोग यहाँ नहीं रह सकते। यह निश्चित है। एकदम निश्चय!' उसने अपने उठते हुए क्रोधावेश में कहा। फिर वह दुःसमय शांति में परिणत हो गई। 'अगर हमलोगों को एक साथ चलना ही है तो हम अभी चल दें—इसी रात्रि में। मेरे पास रुपए हैं ही, तुम्हें मालूम है, वह सब मेरे है। तुम्हारी माँ, मेरे भाई और अन्य सभी लोग—जब यह जाने कि हमारा जीवन सत्यता था अवलम्बित था तो—हमें क्षमा कर देंगे। इस प्रकार हम नहीं रह सकते, न, कदापि नहीं!'

'एगनेस!'

'शीघ्र उत्तर दो! हाँ या नहीं?'

'आह—फिर तुम लौटकर क्यों आए? मुझे छोड़ दो! चले जाओ, मुझे छोड़ दो!'

उसने उसे छोड़ा नहीं। उसे मालूम हो रहा था कि मेरा सारा शरीर काँप रहा है। वह डर रहा था। ज्यों ही वह उसके भुजपाश की ओर झुकी, वह समझ गया कि शायद कुछ ही क्षणों में ये उसके माँस में धँस जायँगे।

'जाओ, जाओ!'—उसने फिर जोर दिया।—'मैंने तुम्हें नहीं

बुलाया है। हमें हिम्मत बाँधनी चाहिए। तुम फिर लौटकर क्यों आए? तुमने फिर अधरों को क्यों चूमा?

'उफ, यदि तुम यह समझते हो कि मैं इसी प्रकार इसके साथ प्रेम क्रीड़ा किया करूँगा तो यह तुम्हारी भूल है, नासमझी है। यदि तुम यह समझते हो कि मैं रात्रि में यहाँ आकर आनन्द उठाया करूँगा और दिन में जाकर अपमानजनक पत्र लिख भेजूँगा, तो मैं कहती हूँ कि तुम फिर गलती करते हो। तुम आज लौटकर आए हो और फिर आओगे, कल ही नहीं, नित्य आओगे तब तक आओगे जब तक मुझे पागल न कर लोगे। परन्तु मैं यह नहीं होने दूँगी।

'हमें पवित्र और साहसी बनना चाहिए, तुम कहते हो'—यह कहती गई, पर उसका मुख पुष्पों की भाँति सूख गया था और शव की भाँति पीला पड़ गया था—'परन्तु आज के पूर्व तुमने यह कभी नहीं कहा। तुम मुझे भयभीत कर रहे हो। अब तुम चले जाओ, अभी चले जाओ, जिससे कल प्रात काल उठकर मुझे आशा न रह जाय कि तुम रात्रि को फिर आओगे अथवा आज की भाँति ही फिर मेरा अपमान करोगे।'

'हे भगवन्! हे दयामय!'—उसके मुख से अकस्मात् निकल आया और वह उसके ऊपर झुक गया। परन्तु उसने उसी भाँति उसका तिरस्कार कर दिया।

'क्या तुम समझते हो कि तुम किसी बच्चे से बात कर रहे हो?' वह जोर से चिल्ला उठी—'मैं अब बच्ची नहीं हूँ। तुमने शुरू

ही घड़ियों में मुझे बूढ़ी बना दिया है। जीवन का सीधा मार्ग! हाँ, यही जीवन का सीधा मार्ग होता, यदि हम तुम गुप्त प्रेम स्थायी रखते। क्यों होता न? मैं अपने लिए एक पति चुन लेती, तुम स्वय आकर उसके साथ मेरा विवाह करा देते। फिर मैं तुमसे मिलती रहती, तुम मुझसे मिलते रहते, और इस प्रकार हम अपने जीवन के आनद के लिये समस्त ससार की आँखों में धूल झोंका करते। अहँ, यदि तुम्हारी ऐसी ही भावना है, तो अभी तक तुमने मुझे पहिचाना ही नहीं! पिछली रात को तुमने कहा था—'हमलोग यहाँ से कहीं अन्यत्र चलकर विवाह कर लें। मैं कुछ काम करने लगूँगा।' क्यों तुमने कहा था कि नहीं? बोलो, नहीं कहा था?

'आज आकर तुम मुझे त्याग और भक्ति की कहानियाँ सुना रहे हो। बस, अब इन सभी बातों का अत हो चुका। अब, हम अलग हो जाँयगे। मैं फिर कहती हूँ, तुम आज ही इस गाँव को छोड़कर चले जाओ, मैं तुम्हें अब नहीं देखना चाहती। यदि कल सबेरे तुम गिर्जाघर मे प्रार्थना करने गए तो मैं भी तुम्हारे साथ ही आऊँगी और वेदी की सीढियों पर खड़ी होकर उपस्थित जनता से चिल्ला कर कहूँगी—

'यही आपका उपदेशक है, जो दिन में पवित्र कार्य करता है और रात में गाँव की निस्सहाय बालिकाओं के पास जाता है—उन्हें लुभाने के लिए, उन कोमल पुष्पों की स्निग्ध सुरभि को नष्ट करने के लिए।'

उसने अपने हाथ से उसका मुँह बद कर देने का प्रयत्न किया

पर व्यर्थ। वह ज़ोर से चिल्ला उठी—'जाओ, हट जाओ!' उसने उसका सिर खींचकर हृदय से लगा लिया और सतर्क दृष्टि से वह दरवाज़े की ओर देखने लगा। उसी समय, अधकार में कहे हुए माँ के शब्द उसे स्मरण आ गए—'गाँव का पुराना पादरी मेरे समीप बैठा था, उसने कहा कि मैं शीघ्र ही यहाँ से तुम दोनों माँ-बेटों को निकाल बाहर करूँगा।'

'एगनेस, एगनेस, तुम पागल हो गई हो क्या!'—उसके कानों के पास अपने ओठों को ले जाकर पाल ने कहा। वह उसके बाहु-पाश से भागने का प्रयत्न कर रही थी।—'शांत होकर मेरी बातें सुनो। अभी कुछ बिगड़ा नहीं है। तुम नहीं समझतीं कि मैं तुम्हें कितना प्यार करता हूँ? मैं कहीं भाग नहीं रहा हूँ। मैं यहीं रहूँगा, तुम्हें बचाने के लिए, तुम्हें अपनी आत्मा समर्पित करने के लिए—उसी भाँति, जैसे अंतिम समय में इसे जगदीश्वर को भेंट करते हैं। तुम क्या समझो कि कल रात्रि को और इस समय मैंने कितने दुखों का अनुभव किया है? मैं यहाँ से भागा था परंतु तुम्हें अपने हृदय में रखकर। मैं इस प्रकार भाग रहा था, जैसे कोई मनुष्य आग में से भागकर बचना चाहता हो और अग्नि शिखाएँ उसे ढकेल रही हों। मैंने आज तुमसे अलग रहने के लिए क्या नहीं किया था? मैं आज कहाँ नहीं गया था? फिर भी मैं यहाँ आ ही गया। एगनेस, यहाँ आने से मैं कैसे रुक सकता था? क्यों मेरी बात सुन रही हो? मैं तुम्हें कैसे त्यागूँगा? तुम्हें कैसे भूलूँगा? असल बात यह है कि मैं तुम्हें भूलना चाहता भी नहीं।

परंतु एगनेस, हमें पवित्र रहना चाहिए, हमारा प्रेम इहलौकिक ही नहीं, पारलौकिक हो, स्थायी रहे। हमें जीवन की सर्वोच्च भावना लेकर मिलना चाहिए—इसमें मृत्यु भी हो तो परवा नहीं। क्यों, समझती हो, एगनेस ? कहो कि हाँ, समझती हूँ।'

उसने उसे पीछे ढकेल दिया, मानो अपने मस्तक की ठोकर से उसकी छाती विदीर्ण कर देना चाहती हो। अंत में वह आलिंगन से मुक्त हो गई। वह तनकर बैठ गई। मुख पर विषाद था और बालों की कोमल लटें संगमरमर की भाँति श्वेत मुख पर बिखर रही थीं। उसके बंद अधरों और नेत्रों को देखकर ऐसा प्रतीत होता, मानो वह प्रगाढ़ निद्रा में सो गई हो और उसी निद्रा में प्रतिशोध का सुखद स्वप्न देख रही हो। इस समय की उसकी मौन और अशक्त अवस्था से वह बहुत डर गया था—उसके कम शब्दों और विचित्र आकृति से भी अधिक। उसने उसके हाथ पकड़ लिए, परंतु अब वे हाथ प्रसन्नता के साथ प्रेमपाश डालने के लिए मृतक की भाँति अशक्त थे।

'एगनेस, तुम्हें यह ध्यान नहीं कि मैं ठीक कह रहा हूँ ? आओ, पवित्र बनो, जाकर आराम से सो रहो। कल ही हमारा जीवन दूसरे रूप से आरंभ होगा। हम तुम इसी प्रकार एक दूसरे से मिलेंगे, मैं तुम्हारा मित्र बनकर रहूँगा, तुम्हारा प्रिय होकर रहूँगा, और हम लोग सदैव एक दूसरे की सहायता में तत्पर रहेंगे। मेरा जीवन तुम्हारे हाथ है। जिधर चाहो उधर मोड़ दो। जीवन के अंतिम क्षण तक मैं तुम्हारे साथ रहूँगा—और उसके बाद परलोक में भी।

उसके विनम्र शब्दों ने उसे फिर स्वस्थ कर दिया। उसके हाथ उसने अपने हाथ में जरा ऐंठ लिए। उसने बोलने के लिए मुँह भी खोला। ज्यों ही उसने उसे छोड़ दिया, वह हाथ समेटे सिर झुका-कर अलग खड़ी हो गई। उसके मुख पर विषाद की गहरी छाया थी, परन्तु इस छाया में निराशा भी थी, साथ ही दृढ़ निश्चय भी।

वह लगातार उसकी ओर देख रहा था—जैसे कोई मरणासन्न व्यक्ति की ओर देखता है। उसका भय और बढ़ गया। उसने उसके सामने घुटने टेक दिए, अपना सिर उसकी गोद में रख दिया और उसके हाथ चूम लिए। उसे यह भय नहीं रह गया था कि कोई सुन लेगा या देख लेगा। उसने एक स्त्री के सामने घुटने टेक-कर सिर झुकाया था। अपने जीवन में उसे कभी इतनी पवित्रता का अनुभव नहीं हुआ था, कभी उसे इतनी शून्यता का अनुभव नहीं हुआ, फिर भी वह डर रहा था।

एगनेस बिना हिले-डुले अपने शीतल हाथों को समेटे बैठी थी—मृत्यु के भयानक चुंबनों का उसे कुछ भी ज्ञान नहीं था। इसके उपरांत पाल उठकर खड़ा हो गया और पहले की ही भाँति उसके कथनानुसार—झूठ बोलने लगा।

'धन्यवाद, एगनेस—यह ठीक है। मुझे बड़ी प्रसन्नता हो रही है। सभी कठिनाइयों पर तुमने विजय पा ली। अब तुम शांति पूर्वक आराम कर सकती हो। मैं अब जा रहा हूँ, और कल'—उसकी ओर घबराहट से झुककर उसने धीरे से कहा—'कल सवेरे तुम प्रार्थना में सम्मिलित होना, उसी समय हम दोनों उस

परम पिता को श्रद्धांजलि समर्पित करेंगे।'

उसने आँखें खोलकर उसको देखा और फिर आँखें बंद कर लीं। वह मरणासन्न एवं मर्माहत-सी बैठी थी। उसके नेत्र, मानो अंतिम बार खुलकर बंद हो गए।

'तुम आज रात को ही चले जाओगे, बहुत दूर, जिससे मैं तुम्हें कभी फिर न देख सकूँ'—वह प्रत्येक शब्द स्पष्टता और दृढता के साथ कह रही थी। वह भली भाँति समझ रहा था कि इस समय उसकी इस अध-दृढता का विरोध करना व्यर्थ है।

'मैं इस प्रकार नहीं जा सकता'—वह बड़बड़ा उठा। 'मैं कल प्रार्थना अवश्य करूँगा। तुम भी आकर सुन सकती हो। इसके बाद यदि आवश्यक होगा तो मैं चला जाऊँगा।'

'तो मैं भी कल आऊँगी और समस्त उपस्थित समुदाय के सम्मुख सब बातें घोषित करूँगी।'

'यदि तुम ऐसा करोगी तो वह भी उस परम पिता की इच्छा ही समझी जायगी। परंतु ऐसा तुम करोगी नहीं। एगनेस! तुम मुझसे घृणा करती हो तो करो, पर मैं तुम्हें शांति में ही छोड़े जाता हूँ। अच्छा नमस्कार!'

इतने पर भी वह गया नहीं। वह चुपचाप खड़ा-खड़ा उसके कोमल केशों की ओर देखता रहा। उनसे वह प्रेम करता था, उन्हें प्राय. अपने हाथों से सुलझाया करता था। इसी समय उसका हृदय दया से भर आया, क्योंकि केश राशि उसे आहत सिर पर बँधी काली पट्टी सी प्रतीत हो रही थी।

अंतिम बार उसने उसका नाम लेकर पुकारा—'एगनेस ! क्या यह संभव है कि हम इसी प्रकार बिछुड़ जायें ? आओ, अपना हाथ मेरी ओर बढ़ा दो। उठो मेरे लिए द्वार तो खोल दो।'

वह आज्ञाकारिणी की भाँति उठकर खड़ी हो गई। परन्तु उसने हाथ नहीं बढ़ाया। जिस द्वार से वह आई थी, सीधे उसी ओर चली गई। वहाँ चुपचाप खड़ी होकर उसकी प्रतीक्षा करने लगी। 'मैं क्या कर सकता हूँ ?'—उसने अपने मन में कहा। वह भली भाँति जान गया कि केवल एक ही बात से मैं उसे प्रसन्न कर सकता हूँ। एक बार फिर उसके पैरों पर घुटने टेककर, पाप पंक में लिप्त होकर, और स्पष्ट शब्दों में, सदैव के लिए अपना जीवन धूल में मिलाकर !

उससे यह नहीं हो सकता था। वह उसी स्थान पर दृढ़ता पूर्वक खड़ा रहा। उसने अपनी आँखें झुका लीं, जिससे उसका सामना न हो। उसने फिर आँखें ऊँची की। देखा सामने कोई नहीं है। वह अदृश्य हो गई थी, उसके शून्य प्रासाद के अंधकार ने उसे अंतर्निहित कर लिया था।

दीवार पर टँगे बारहसिंगों और हिरनों की काँच की आँखें उसकी ओर परिहास-मिश्रित वेदना के साथ घूर रही थीं। उस संदिग्ध क्षण में ही, उस वेदनामय स्थान पर उसने अपराध और अपमान की गहराई का अनुभव किया। वह अपने को चोर—नहीं-नहीं—उससे भी बुरा समझ रहा था, एक ऐसा अतिथि जो आतिथ्य और एकांत का अनुचित लाभ उठाकर चीजें चुराने के लिए ही किसी की शरण लिया करता है। उसने अपनी दृष्टि हटा ली—

परम पिता को श्रद्धांजलि समर्पित करेंगे।'

उसने आँखें खोलकर उसको देखा और फिर आँखें बंद कर लीं। वह मरणासन्न एवं मर्माहत-सी बैठी थी। उसके नेत्र, मानो अंतिम बार खुलकर बंद हो गए।

'तुम आज रात को ही चले जाओगे, बहुत दूर, जिससे मैं तुम्हें कभी फिर न देख सकूँ'—वह प्रत्येक शब्द स्पष्टता और दृढ़ता के साथ कह रही थी। वह भली भाँति समझ रहा था कि इस समय उसकी इस अध-दृढ़ता का विरोध करना व्यर्थ है।

'मैं इस प्रकार नहीं जा सकता'—वह बड़बड़ा उठा। 'मैं कल प्रार्थना अवश्य करूँगा। तुम भी आकर सुन सकती हो। इसके बाद यदि आवश्यक होगा तो मैं चला जाऊँगा।'

'तो मैं भी कल आऊँगी और समस्त उपस्थित समुदाय के सम्मुख सब बातें घोषित करूँगी।'

'यदि तुम ऐसा करोगी तो वह भी उस परम पिता की इच्छा ही समझी जायगी। परन्तु ऐसा तुम करोगी नहीं। एगनेस! तुम मुझसे घृणा करती हो तो करो, पर मैं तुम्हें शांति में ही छोड़े जाता हूँ। अच्छा नमस्कार!'

इतने पर भी वह गया नहीं। वह चुपचाप खड़ा खड़ा उसके कोमल केशों की ओर देखता रहा। उनसे वह प्रेम करता था, उन्हें प्राय अपने हाथों से सुलझाया करता था। इसी समय उसका हृदय दया से भर आया, क्योंकि केश-राशि उसे आहत सिर पर बँधी काली पट्टी सी प्रतीत हो रही थी।

अंतिम बार उसने उसका नाम लेकर पुकारा—'एगनेस ! क्या यह संभव है कि हम इसी प्रकार बिछुड़ जायँ ? आओ, अपना हाथ मेरी ओर बढ़ा दो। उठो मेरे लिए द्वार तो खोल दो।'

वह आज्ञाकारिणी की भाँति उठकर खड़ी हो गई। परंतु उसने हाथ नहीं बढ़ाया। जिस द्वार से वह आई थी, सीधे उसी ओर चली गई। वहाँ चुपचाप खड़ी होकर उसकी प्रतीक्षा करने लगी। 'मैं क्या कर सकता हूँ ?'—उसने अपने मन में कहा। वह भली भाँति जान गया कि केवल एक ही बात से मैं उसे प्रसन्न कर सकता हूँ। एक बार फिर उसके पैरों पर घुटने टेककर, पाप पंक में लिप्त होकर, और स्पष्ट शब्दों में, सदैव के लिए अपना जीवन धूल में मिलाकर!

उससे यह नहीं हो सकता था। वह उसी स्थान पर दृढ़ता पूर्वक खड़ा रहा। उसने अपनी आँखें झुका लीं, जिससे उसका सामना न हो। उसने फिर आँखें ऊँची की। देखा सामने कोई नहीं है। वह अदृश्य हो गई थी, उसके शून्य प्रासाद के अंधकार ने उसे अंतर्निहित कर लिया था।

दीवार पर टँगे बारहसिंगों और हिरनों की काँच की आँखें उसकी ओर परिहास मिश्रित वेदना के साथ घूर रही थीं। उस संदिग्ध क्षण में ही, उस वेदनामय स्थान पर उसने अपराध और अपमान की गहराई का अनुभव किया। वह अपने को चोर—नहीं-नहीं—उससे भी बुरा समझ रहा था, एक ऐसा अतिथि जो आतिथ्य और एकांत का अनुचित लाभ उठाकर चीजें चुराने के लिए ही किसी की शरण लिया करता है। उसने अपनी दृष्टि हटा ली—

दीवार पर टँगे मृत मुंडों से भी आँखें मिलाने में उसे भय जान पड़ता था। परंतु वह एक क्षण के लिए भी अपने मंतव्य से हटा नहीं, यहाँ तक कि यदि उस स्त्री की दुःखमय पुकार एकबारगी सारे प्रासाद को भयपूर्ण न बना देती तो उसे उसका तिरस्कार करने में दुख भी न होता।

वह कुछ देर तक प्रतीक्षा करता रहा, पर कोई भी दिखाई नहीं पड़ा। उसके मस्तिष्क में कुछ ऐसे अस्पष्ट भाव घूम रहे थे, मानो वह मृत-संसार के मध्य में खड़ा हो। मानो वह अपनी भूलों के स्वप्न में उन्मत्त होकर किसी पथप्रदर्शक की प्रतीक्षा करता हो, पर कोई भी आता दिखाई न पड़ता हो। अंत में, उसने स्वयं द्वार को ठेलकर खोल लिया और बगीचे में चला गया। बगीचे की बहार दीवारी की बगलवाली सड़क से होकर वह पूर्वपरिचित छोटे द्वार से बाहर निकल गया।

## १३

पाल अपने मकान की सीढ़ियों पर चढ़ रहा है, परन्तु इस समय कोई अप्रिय बात नहीं है, अथवा कम से कम उसको भय तो अवश्य ही नहीं है।

वह अंदर जाकर माँ के द्वार पर खड़ा हो गया। वह सोचने लगा कि इसी समय एगनेस की बातचीत का परिणाम और साथ ही उसकी धमकी की बात माँ से कह दूँ। पर माँ के श्वास की ध्वनि सुनकर वह आगे बढ़ गया। उसकी माँ गहरी नींद में सो रही थी, क्योंकि उसे विश्वास था कि मेरा पुत्र अब सुरक्षित है।

उसने अपने कमरे के अंदर से चारों ओर देखा, मानो वह किसी लंबी और भयानक यात्रा के बाद लौटा हो। सभी वस्तुएँ ठीक थीं। कपड़े उतारते समय वह दबे पाँव चल रहा था, क्योंकि उस मनोहारिणी शांति को भंग करने की उसकी इच्छा नहीं थी। उसके कपड़े खूँटियों पर लटकने लगे। पाजामे की मोहरी, मानो थककर झूल रही हो। सबके ऊपर उसका ऊनी टोप रखा हुआ था। सब चीजें मिलकर किसी निर्जीव मूर्ति का सा दृश्य उपस्थित कर रही थीं—किसी रक्त माँस विहीन मूर्ति का, जो किसी अज्ञात भयानकता

का परिचय दे रही हो। वह उस पाप की छाया सी प्रतीत हो रही थी जिससे उसने अपने आपको अलग कर लिया था। वह कल हो उसे अपने में फिर मिला लेने की प्रतीक्षा सी कर रही थी।

दो एक क्षण बीत गए। उसका हृदय इस भय से पूर्ण हो गया कि मानो प्रेमिका अभी तक मेरे ऊपर आक्रमण कर रही है। वह अब भी सुरक्षित नहीं था। अभी उसे एक रात्रि और बितानी थी—उसी प्रकार जैसे कोई यात्री निर्जन प्रदेश को व्यग्रतापूर्वक पार करता है। वह थका हुआ था, उसकी पलकें थकावट से झँपी जा रही थीं। परतु कोई अज्ञात जिज्ञासा उसे शय्या पर जाने से रोक रही थी—यहाँ तक कि आरामकुर्सी पर बैठकर सुस्ताने से भी। वह इधर से उधर टहल रहा था। छोटे-छोटे अस्वाभाविक और निरर्थक कार्य इस समय उसके जीवन के ध्येय हो रहे थे। एक के बाद दूसरा दराज खोलकर वह देख रहा था कि उनमें क्या है।

ज्यों ही वह बड़े दर्पण के सामने से निकला, उसकी दृष्टि अपने प्रतिबिंब पर पड़ी। उसने देखा, चेहरा पीला पड़ गया है, अधरों का रग उड़ गया है, आँखें धँस गई हैं।—'पाल, भली भाँति अपने को देख लो'—उसने अपनी छाया से कहा, और एक कदम पीछे हट गया, जिससे दीपक का प्रकाश दर्पण पर अच्छी तरह पड़ सके। दर्पण का प्रतिबिंब भी पीछे हट गया, मानो वह भी उससे आँख बचाना चाहता हो। वह अपने प्रतिबिंब को घूरकर देख रहा था। उसी समय उसके मन में यह विचार उठा कि वास्तविक पाल आईने में ही है, ऐसा पाल जो कभी झूठ नहीं बोला, जो कभी

आगामी घटनाओं के भय से अपमानित नहीं हुआ।—'मैं उसका अधिकारी क्यों बनूँ जिसे मेरी आत्मा स्वयं नहीं मानती ?'— यही उसका मूक प्रश्न था।—'आज ही रात्रि को मैं यहाँ से चला जाऊँगा—यही उसका आदेश था।'

अपनी प्रतिज्ञा से उसे कुछ शांति का अनुभव हुआ। वह जाकर पलँग पर लेट गया। नेत्र और मुख बंद करके उसने अपना सिर तकिए में गड़ा लिया। उसे विश्वास था कि इस प्रकार मैं अपनी अंतरात्मा के धुँधले चित्रों को और स्पष्ट देख सकूँगा।

'हाँ, मैं आज अवश्य चला जाऊँगा। भगवान की यही आज्ञा है कि इस प्रकार की अपमानजनक बातों से बचना चाहिए। अच्छा हो कि मैं माँ को जगाकर सब बातें समझा दूँ। संभव है, आज ही हम लोग चल दें। संभव है, वह मुझे लेकर अन्यत्र जा सके, उसी प्रकार जैसे एक बार मुझे बचपन में ले गई थी। शायद वहाँ जाकर मैं अपना जीवन दूसरे ही रूप में आरंभ करूँ।'

वह समझ रहा था कि यह सब केवल मेरी कल्पना मात्र है। मेरा इतना साहस नहीं कि मैं अपने निश्चयानुसार कार्य कर सकूँ। फिर मैं ऐसा करूँ भी क्यों ? उसे निश्चय था कि एगनेस अपनी धमकी के शब्दों को कभी पूर्ण नहीं करेगी, इसीलिए भागने की कोई आवश्यकता नहीं थी। उसे अब उसके पास जाकर पाप पंक में फँसने का भय भी नहीं रह गया था—क्योंकि अब वह सभी लोगों पर विजय प्राप्त कर चुका था।

किंतु उसके गौरव के विचारों ने उसे फिर

'कुछ भी हो, पाल, तुम्हें जाना ही होगा। जाओ, अभी माँ को जगाकर, उसके साथ प्रस्थान कर दो। तुम नहीं समझते, तुमसे यह कौन कह रहा है ? यह मैं हूँ, एगनेस। तुम समझते हो कि मैं अपनी धमकी के अनुसार कार्य नहीं करूँगी ? शायद मैं न भी करूँ, परतु तुम्हारे लिए मेरा वही परामर्श है। तुम समझते हो कि मैं इससे बच गया ? पर मैं अभी तक तुम्हारे हृदय में हूँ, मैं तुम्हारे जीवन का एक अशुभ नक्षत्र हूँ। यदि तुम यहाँ रहे, तो मैं तुम्हे छोड़ नहीं सकती—एक क्षण के लिए भी नहीं, मैं तुम्हारी छाया बनकर तुम्हारे साथ रहूँगी, तुम्हारे और तुम्हारी माँ के बीच ही नहीं, तुम्हारे और तुम्हारी आत्मा के बीच भी मैं काँटा बनकर रहूँगी। जाओ, अब भी चले जाओ।'

तब वह अपनी अतरात्मा को शात करने की चेष्टा करने लगा।

'हाँ, मैं जा रहा हूँ, मैं तुमसे कहता हूँ, मैं जा रहा हूँ—हम दोनों साथ ही जायँगे, तुम मेरे हृदय में रहोगी, मुझसे भी अधिक जीवित अवस्था में। तुम सतुष्ट रहो, मेरे हृदय पर और गहरा आघात मत पहुँचाओ। हम दोनों साथ हैं, एक साथ ही यात्रा करेंगे, विनाश की ओर दौड़ते हुए एक ही समय एक ही चक्र में हम दोनों का जाना हुआ है। उस समय भी हम दोनों दूर थे पहले-पहल ही हम दोनों की आँखें मिली थीं, पहले-पहल ही अधर से अधर मिले थे, इसके उपरांत हम फिर अलग हो गए, नहीं नहीं—शत्रु बन गए। किंतु सोचो तो, वास्तविक मिलाप का आरंभ

अब हो रहा है—तुम्हारी घृणा से और मेरी सहनशीलता एवं पवित्रता से।'

इसके उपरांत वह थकावट म चूर हो गया। उसे बाहर किसी के लगातार रोने का शब्द सुनाई पड़ा, मानो कोई बतख अपना जोड़ा ढूँढ रहा हो। मालूम पड़ता था, रात्रि स्वय ही उस शब्द म क्रदन कर रही है, स्निग्ध चाँदनी खिली हुई थी, आकाश में श्वेत-श्याम बादल रूई के ढेरों की भाँति छाए हुए थे। उसे मालूम हुआ कि वह रोने का शब्द, उसका अपना ही है। उधर निद्रा भी उसके ऊपर अधिकार जमा रही थी। उसके विचार स्थिर हो रहे थे। भय, विषाद और स्मृतियाँ उसका साथ छोड़ रही थीं। वह स्वप्न में देख रहा था कि मैं सचमुच ही यात्रा में हूँ, पहाड़ों पर चढ़ रहा हूँ। समस्त वातावरण शात और स्पष्ट है। सामने हरा-भरा मैदान पड़ा है, चट्टानों पर बैठे हुए धनवाक भगवान भास्कर की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

अकस्मात गाँव का मुखिया सामने आकर खड़ा हो गया। नमस्कार के उपरात उसने अपनी पुस्तक घोड़े की जीन पर रख दी। वह सेंट पाल के उपदेश को पढ़कर पूछने लगा कि कल कहाँ तक उपदेश हुआ था। उसने बतला दिया—'परब्रह्म सबके विचार जानता है। और यह भी समझता है कि वे व्यर्थ हैं।'

रविवार के दिन प्रार्थना कुछ देर से हुआ करती थी। परतु पाल प्रात काल ही गिर्जे में जाकर आगतुक रमणियों की पाप-स्वीकृति सुन लिया करता था। इसलिए माँ ने प्रात काल ही उसे

आवाज दी। वह कुछ ही घंटे सोया होगा—परंतु कष्टमय निद्रा में। जब वह सोकर उठा तो उसका मस्तिष्क निर्विकार था। उसकी एकमात्र अभिलाषा, उसी समय फिर सो जाने की थी। परंतु दरवाजा खटखटाने के कारण वह न सो सका। तब तो उसे सब कुछ स्मरण हो आया क्षण भर बाद ही वह उठकर खड़ा हो गया—भय से बिलकुल शिथिल।

'एगनेस, गिर्जे में आकर सब लोगों के समक्ष मुझे बदनाम करेगी'—यही था उसका एकमात्र विचार।

जब वह सो रहा था, तभी उसके हृदय में यह बात जम गई थी कि वह अपनी धमकी अवश्य पूर्ण करेगी—न जाने ऐसा क्यों हुआ!

वह लड़खड़ाकर कुर्सी पर बैठ गया। उसके पैर काँप रहे थे। हृदय में असमर्थता के भाव थे। उसका मस्तिष्क क्षुब्ध हो रहा था। उसे आश्चर्य हो रहा था कि अभी तक मैं इस बदनामी से बचने का उपाय क्यों नहीं निकाल सका—वह बीमार हो जाय और प्रार्थना करने न जाय। इस प्रकार कुछ अवसर पाकर एगनेस को शांत करने की चेष्टा करे। परंतु इस विचार को कार्य रूप में परिणत करना पिछले दिन के सभी कष्टों का पुनः आवाहन करना था। इस विचार ने उसकी मानसिक वेदना को और बढ़ा दिया।

वह उठकर खड़ा हो गया। उसका मस्तक खिड़की के शीशे को तोड़कर आकाश से टकरा जाना चाहता था। उसने पैर उठा कर जोर से जमीन पर पटक दिया, मानो वह अपनी नसों में दौड़ते हुए रक्त को कुंठित कर देनेवाले भय को दूर भगाने की

चेष्टा कर रहा हो। उसने अपना चमड़े का कमरबंद खींचकर अपनी कमर में बाँध लिया—ठीक उसी प्रकार, जैसे शिकारी लोग बाहर जाने के पूर्व अपना कोट कमर के चारो ओर लपेट लिया करते हैं। जब उसने खिड़की खोलकर बाहर सिर निकाला, तो उसे मालूम हुआ कि रात्रि की अंधकारमय घड़ियों के बाद उसके नेत्र सूर्यालोक की प्राप्ति कर रहे हैं। उसी समय उसे अपनी अंतरात्मा के कारागार से मुक्ति मिली। अब वह बाहर के पदार्थों से मैत्री करने लगा। परंतु वह मैत्री बलपूर्वक प्राप्त होनेवाली थी—कटुता से पूर्ण थी। उसके लिए यही ठीक था कि वह शीतल वायु से अपना सिर हटाकर उसे कमरे के भीतर ऊष्ण वातावरण म कर ले—पर उसके लिए ऐसा करना पुन अपनी भावनाओं में विलीन हो जाने के बराबर था।

वह दौड़कर नीचे की सीढ़ियों पर उतरने लगा—यह सोचते हुए कि अभी चलकर माँ से कुछ बातें कह दूँ।

माँ की आवाज उसे सुनाई पड़ रही थी। शायद वह भोजनालय में पक्षियों को उड़ा रही थी। उनके छोटे-छोटे पर फड़फड़ा रहे थे। गर्मागर्म काफी और बगीचे के सुरभित पुष्पों का सुंदर सुगंध आ रही थी। घाटी के नीचे बकरों के कंठ में लटकती हुई घंटियाँ टनटना रही थीं, वे चरने जा रहे थे। छोटी-छोटी घंटियाँ एटिओकस के बजाए हुए घंटे की कोमल प्रतिध्वनि सी प्रतीत हुईं।

उसके चारों ओर की वस्तुएँ मधुर और शांत थीं—सूर्यालोक से प्रकाशित थीं। पाल को अपना स्वप्न याद आ गया।

आवाज दी। वह कुछ ही घंटे सोया होगा—परंतु कष्टमय निद्रा में। जब वह सोकर उठा तो उसका मस्तिष्क निर्विकार था। उसको एकमात्र अभिलाषा, उसी समय फिर सो जाने की थी। परंतु दरवाजा खटखटाने के कारण वह न सो सका। तब तो उसे सब कुछ स्मरण हो आया क्षण भर बाद ही वह उठकर खड़ा हो गया—भय से बिलकुल शिथिल।

'एगनेस, गिर्जे में आकर सब लोगों के सम्मुख मुझे बदनाम करेगी'—यही था उसका एकमात्र विचार।

जब वह सो रहा था, तभी उसके हृदय में यह बात जम गई थी कि वह अपनी धमकी अवश्य पूर्ण करेगी—न जाने ऐसा क्यों हुआ!

वह लड़खड़ाकर कुर्सी पर बैठ गया। उसके पैर काँप रहे थे। हृदय में असमर्थता के भाव थे। उसका मस्तिष्क क्षुब्ध हो रहा था। उसे आश्चर्य हो रहा था कि अभी तक मैं इस बदनामी से बचने का उपाय क्यों नहीं निकाल सका—वह बीमार हो जाय और प्रार्थना करने न जाय। इस प्रकार कुछ अवसर पाकर एगनेस को शांत करने की चेष्टा करे। परंतु इस विचार को कार्य रूप में परिणत करना पिछले दिन के सभी कष्टों का पुन' आवाहन करना था। इस विचार ने उसकी मानसिक वेदना को और बढ़ा दिया।

वह उठकर खड़ा हो गया। उसका मस्तक खिड़की के शीशे को तोड़कर आकाश से टकरा जाना चाहता था। उसने पैर उठा-कर जोर से जमीन पर पटक दिया, मानो वह अपनी नसों में दौड़ते हुए रक्त को कुंठित कर देनेवाले भय को दूर भगाने की

चेष्टा कर रहा हो। उसने अपना चमड़े का कमरबंद खींचकर अपनी कमर में बाँध लिया—ठीक उसी प्रकार, जैसे शिकारी लोग बाहर जाने के पूर्व अपना कोट कमर के चारो ओर लपेट लिया करते हैं। जब उसने खिड़की खोलकर बाहर सिर निकाला, तो उसे मालूम हुआ कि रात्रि की अंधकारमय घड़ियों के बाद उसके नेत्र सूर्यालोक की प्राप्ति कर रहे हैं। उसी समय उसे अपनी अंतरात्मा के कारागार से मुक्ति मिली। अब वह बाहर के पदार्थों से मैत्री करने लगा। परंतु वह मैत्री बलपूर्वक प्राप्त होनेवाली थी—कटुता से पूर्ण थी। उसके लिए यही ठीक था कि वह शीतल वायु से अपना सिर हटाकर उसे कमरे के भीतर ऊष्ण वातावरण में कर ले—पर उसके लिए ऐसा करना पुनः अपनी भावनाओं में विलीन हो जाने के बराबर था।

वह दौड़कर नीचे की सीढ़ियों पर उतरने लगा—यह सोचते हुए कि अभी चलकर माँ से कुल बातें कह दूँ।

माँ की आवाज उसे सुनाई पड़ रही थी। शायद वह भोजनालय में पक्षियों को उड़ा रही थी। उनके छोटे-छोटे पर फड़फड़ा रहे थे। गर्मागर्म काफी और बगीचे के सुरभित पुष्पों की सुंदर सुगंध आ रही थी। घाटी के नीचे बकरों के कंठ में लटकती हुई घंटियाँ टनटना रही थीं, वे चरने जा रहे थे। छोटी-छोटी घंटियाँ एंटिओकस के बजाए हुए घंटे की कोमल प्रतिध्वनि सी प्रतीत हुईं।

उसके चारों ओर की वस्तुएँ मधुर और शांत थीं—सूर्यालोक से प्रकाशित थीं। पाल को अपना स्वप्न याद आ गया।

अब कोई भी उसे बाहर जाने से रोकनेवाला नहीं था—न गिर्जे में जाने से और न अपना दैनिक कार्य करने से। पर भय फिर लौट आया। उसे बाहर जाने में और पीछे लौटने में—दोनों ही में समान रूप से भय मालूम पड़ता था। खुले हुए द्वार पर वह इस प्रकार खड़ा था, मानो किसी ऊँचे पर्वत के शिखर पर खड़ा हो और ऊँचाई के कारण और अधिक ऊपर न जा सकता हो, नीचे की गहरी खंदक उसे देखकर भीषण अट्टहास कर रही हो। दोनों के मध्य में उसका हृदय धड़क रहा हो। उसे संदेह हो रहा था कि मैं नीचे गिरना ही चाहता हूँ। उसे ऐसा प्रतीत हो रहा था, मानो नीचे फेनिल जलराशि से पूर्ण खाड़ी में अनंत लहरें चक्र की भाँति टकरा रही हैं और उसी में मैं विलीन होनेवाला हूँ।

यह उसका अपना ही हृदय था जो जीवन के भँवर में निस्सहाय चक्कर खा रहा था। उसने द्वार बंद कर दिया। घर में लौटकर वह सीढ़ियों पर बैठ गया, वहीं जहाँ पिछली रात्रि में माँ आकर बैठ गई थी। उसने अपनी समस्या को व्यर्थ सुलझाने का प्रयत्न करके अपने हृदय को कष्ट देना उचित नहीं समझा। वह चुपचाप बैठा-बैठा किसी की प्रतीक्षा कर रहा था, ऐसे व्यक्ति की जो आकर उसकी सहायता करता।

उसकी माँ ने उसे देखा। ज्यों ही उसने देखा वह उठकर खड़ा हो गया। उसे कुछ शांति का, साथ ही-साथ कुछ अपमान का भी अनुभव हुआ। उसके हृदय की भीतरी तह में यही विचार उठ रहा था कि माँ मुझे अपने निर्धारित मार्ग पर ही चलने का परामर्श देगी।

परंतु उसका सामना होते ही वह पीली पड़ गई, मानों वेदना की अग्नि में तपकर खड़ी हो गई हो।

'पाल !'—उसने पुकारा।—'तुम वहाँ क्या कर रहे हो? अस्वस्थ हो क्या ?'

'माँ'—उसने कहा। वह सामनेवाले द्वार की ओर जा रहा था। पर भोजनालय की ओर मुड़े बिना ही उसने कहा—'मैंने रात्रि में तुम्हें जगाना उचित नहीं समझा, मुझे बहुत देर हो गई थी। अच्छा, वो मैं उसके यहाँ गया था। मैं उसके पास गया था।'

उसकी माँ पहले से ही सतर्क होकर उसकी ओर जिज्ञासु दृष्टि से देख रही थी। पाल के शब्दों में आए हुए थोड़े से विराम में गिर्जे का घंटा सुनाई पड़ा—बड़ी तुमुल ध्वनि से बज रहा था, मानो छत के ऊपर ही बज रहा हो।

'वह बिलकुल स्वस्थ है'—पाल कहता गया।—'पर वह बहुत उत्तेजित हो गई है और कहती है कि तुम इसी समय इस स्थान को छोड़कर चले जाओ, नहीं तो मैं गिर्जाघर में आकर तुम्हें समस्त समुदाय के संमुख बदनाम करूँगी।'

उसकी माँ चुप रह गई। वह उसे अपने पक्ष में समझ रहा था। मानो वह दृढ़ता के साथ पाल को उठा रही हो, उसे सहारा दे रही हो, जिस प्रकार उसने उसे बचपन में सहारा दिया था।

'वह चाहती थी कि मैं आज ही रात्रि में यहाँ से चला जाऊँ। उसने कहा है कि यदि तुम नहीं जाओगे तो प्रातःकाल मैं स्वयं गिर्जाघर में आऊँगी। मुझे इसका भय नहीं है, साथ ही मुझे

यह विश्वास भी नहीं है कि वह आवेगी।'

उसने सामनेवाला दरवाजा खोल दिया। सारा मार्ग सुनहरे प्रकाश से आलोकित हो उठा—मानो उन दोनों माँ-बेटों को मनोहर आलोक अंतर्निहित कर लेना चाहता हो। पाल बिना पीछे मुड़े ही गिर्जे की ओर बढ़ने लगा। माँ द्वार पर खड़ी उसकी ओर सतृष्ण नेत्रों से देख रही थी।

उसने अपना मुँह नहीं खोला, परन्तु एक क्षीण प्रकंपन ने उसे फिर अधिकृत कर लिया। कुछ प्रयत्न करके ही वह अपनी बाह्य आकृति को शांत रख सकी। सहसा वह शयनागार में चली गई और गिर्जाघर में जाने के लिये वस्त्र पहनने लगी। वह तैयार हो गई। उसने अपना कमरबंद उतारकर कस लिया और गंभीर गति से चलने लगी। मकान छोड़ने के पूर्व उसने चिड़ियों को उड़ा दिया और चाय के बर्तन को आग पर से उतार कर अलग रख दिया। इसके उपरांत उसने सिर से ठोढ़ी तक गुलूबंद लपेट लिया—जिससे उसका काँपना छिपा रहे।

मार्ग में आते हुए लोगों को नमस्कार का उत्तर वह अपने नेत्रों से ही देती जा रही थी। बहुत से बूढ़े, गिर्जे के चारों ओर चबूतरे पर बैठे थे। उनकी काली-काली नुकीली टोपियाँ प्रातःकालीन गुलाबी आकाश के नीचे आनंदपूर्वक खड़ी थीं।

## १४

अब तक पान गिर्जा में पहुँच गया था।

कुछ उत्सुक मनुष्य उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। वे लोग पाप-स्वीकृति के लिये आकर उसके चारों ओर एकत्र हो गए। जो स्त्री सर्वप्रथम आई थी, वह भी उसके सामने घुटने टेके बैठी थी। दूसरी स्त्रियाँ भी पास ही बेंचों पर बैठी हुई अपने पुकारे जाने की प्रतीक्षा कर रही थीं।

निना माशा घुटने टेके बैठी थी। बड़े लड़के उठकर भाग आनेवाले कुछ शरारती लड़के उसे चारों ओर से घेरकर खड़े थे। पादरी अपने मनोभावों में ही विलीन था। वह उसी अवस्था में प्रत्येक मनुष्य के मस्तक पर हाथ रख रहा था। उस लड़की को पहचानते ही उसे क्रोध आ गया। उसकी माँ ने मानो इसीलिए उसे वहाँ भेज दिया था जिसमें वह सबको आकर्षित करे। उसे वह सदैव मार्ग में दिखाई पड़ती थी और बाधा के रूप में।

'भाग जाओ यहाँ से!'—उसने लड़कों को फटकारा, इतनी जोर से कि सारा गिर्जाघर गूंज उठा। उसी समय बालकों का वह वृत्त कुछ और बड़ा हो गया, लड़के जरा जरा पीछे हट गए।

निना बीच में ही बैठी रही। अब वे इस प्रकार खड़े थे कि सब लोग निना माशा को देख सकते थे। सभी स्त्रियाँ घूमकर उसको ओर देखने लगीं—प्रार्थना में विघ्न डाले बिना ही वह ऐसी मालूम हो रही थी, मानो वहाँ की आराध्य मूर्ति हो। किसानों के साथ आई हुई खेतों की सुगधि और प्रात कालीन प्रकाश में आलोकित गिर्जे में उसकी स्थापना थी।

पाल सीधे वेदी तक चला गया, पर उसके हृदय में वेदना बराबर बढ़ती जा रही थी। वह वेदी की ओर बढ़ा जा रहा था। उसका चोगा उस स्थान का स्पर्श करता हुआ चला गया, जहाँ एगनेस प्राय. बैठा करती थी। यही उसके परिवार के बैठने का स्थान था। सामने एक नक्काशीदार तिपाई रखी थी। अपनी दृष्टि और अपने नपे-तुले डगों से वह अनुमान कर रहा था कि उसका स्थान वेदी से कितनी दूर होगा।

'जब मैं देखूँगा कि वह अब उठकर अपनी बात पूर्ण करना चाहती है तो अंदर चला जाऊँगा।'—अदर जाते समय वह यही विचार रहा था।

एंटिओकस दौड़कर नीचे आ गया। उसे पाल को वस्त्र पहिनाने थे। वह उसी जगह बक्स खोले बैठा था। पास में उसके आभरण लटक रहे थे। उसका मुख पीला और विपण्ण हो रहा था—किस लिये ? अपने भविष्य की निश्चित कल्पना से। उसके मुख पर मुसकुराहट थी, स्फूर्ति थी। उसके नेत्र चमक उठे। अपनी हँसी रोकने के लिए उसने ओंठ दाँतों-तले दबा लिए। उसका युवा

हृदय प्रात कालीन शोभा से नाच उठा। जब वह पाल की कलाई में फीता बाँधने लगा तो उसके नेत्र चंचल हो उठे। उसे साफ मालूम हुआ कि फीते के नीचे हाथ काँप रहा है। उसने देखा कि पाल का मनोहर मुख-मंडल क्षीणप्रभ हो रहा है।

'क्या आप अस्वस्थ हैं, श्रीमान् ?'

पाल अस्वस्थ था, पर उसने उसे छिपाने के लिये सिर हिलाकर प्रगट किया 'नहीं'। उसे ऐसा जान पड़ा, मानो मुख रक्त के आवेश से भरकर तमतमा उठा हो। फिर भी आशा का एक छोटा सा सून उसकी विपत्ति के बीच में दिखाई पड़ रहा था।

'मैं मर जाऊँगा, गिरते ही मेरा हृदय विदीर्ण हो जायगा। उस समय सभी बातों का अंत तो अवश्य हो जायगा।'

वह फिर गिर्जे में स्त्रियों की पाप स्वीकृति सुनने गया। द्वार के पास ही माँ भी दिखाई पड़ी। वह अचचल-भाव से घुटने टेके बैठी थी। प्रत्येक आगतुक पर उसकी सतर्क दृष्टि थी। सारे गिर्जा-घर पर उसका पहरा था।

उसमें बिलकुल साहस नहीं रह गया था। उसके हृदय में केवल आशा का एक सूत्र भर रह गया था। उसके हृदय में केवल मृत्यु की आशा शेष रह गई थी—तब तक के लिए जब तक उसका श्वास बंद न हो जाय।

जब तक वह स्वीकृति के स्थान पर बैठा रहा, तब तक कुछ शांत रहा। उसे ऐसा जान पड़ता, मानो मैं समाधि-शिला के अदर पड़ा हूँ। यद्यपि उसे हृदय के मनोविकार जान नहीं पड़ते पर मुख

की छाया स्पष्ट है। स्त्रियों की स्वीकृति की फुसफुसाहट, उनकी आहें, गर्म निश्वास ऐसे प्रतीत हो रहे थे—मानो पास के मैदान में मेढक फुदुक रहे हों। एगनेस भी वहीं बैठी थी। बहुत गुप्त स्थान में—सुरक्षित। उसी हृदय में—जिसमें वह प्राय' निवास किया करती थी। स्त्रियों का कोमल निश्वास, उनके बालों की सुदर सुगध, वस्त्रों पर पड़े हुए इत्र ने उसकी दबी हुई वासना को पुन' जागरित कर दिया।

उसने सबको दड-मुक्त कर दिया, सभी अपराधों के लिये क्षमादान दे दिया—केवल यह सोचकर कि शायद कुछ दिनों में मैं भी किसी दिन उनकी वासनाओं का पूरक बन बैठूं।

इसके उपरात वह बैठा न रह सका। वह उठकर बाहर गया। केवल यह देखने के लिये कि एगनेस अभी आई या नहीं। पर उसका स्थान खाली पड़ा था।

सभव है, वह न आवे। वह थोड़ी देर तक नीचे रुक भी जाया करती है। शायद, आती हो। घूमकर देखा तो माँ की विपण्ण मूर्ति के अतिरिक्त कुछ भी न दिखाई पड़ा। जैसे ही वह प्रार्थना के लिए वेदी की ओर झुकी उसे ऐसा मालूम हुआ मानो 'उसकी' आत्मा ईश्वर की ओर झुक रही है—अपनी वेदनाओं के वस्त्र पहिने हुए। ठीक वैसे ही जैसे पाल प्रार्थना के वस्त्र पहिने था।

अब उसने निश्चय कर लिया कि मैं घूमकर पीछे नहीं देखूँगा, अब जब कभी आशीर्वाद के लिए घूमना होगा, अपनी आँखें

बंद कर लूँगा। उसे ऐसा मालूम पड़ रहा था मानो वह किसी ऊँचे पहाड़ पर चढ़ रहा हो। जब उसे जनता की ओर घूमना पड़ता, तो उसे मतली-सी आने लगती। उसने अपनी आँखें बंद कर लीं। पैरों की ओर सिर झुका लिया। किंतु उसकी बंद आँखों से भी पलकों के उस पार वही नक्काशीदार बेंच और एगनेस की मूर्ति दिखाई पड़ रही थी। काले वस्त्रों से आच्छादित वह शांति के साथ बैठी थी।

एगनेस वहाँ सचमुच आ गई थी। श्वेत हाथी दाँत के समान सुंदर शरीर पर श्याम वस्त्र सुशोभित थे। उसके नेत्र अपनी प्रार्थना-पुस्तक पर लगे हुए थे। हाथों पर काले दस्ताने चढ़े हुए थे और उनके बीच में पुस्तक की क्लिप चमचमा रही थी। परंतु उसने पुस्तक का पृष्ठ एक बार भी नहीं बदला। उसकी दासी पास ही घुटने टेके बैठी थी, बार बार अपनी मालकिन की ओर देख रही थी। उसकी दृष्टि में मूक सहानुभूति थी—उसके हृदय के उन दु:खमय विचारों के प्रति जिनसे वह तड़प रही थी।

वह वेदी पर से ही सब कुछ देख रहा था। उसकी आशा हृदय में ही विलीन हो गई। परंतु फिर भी उसकी अंतरात्मा बार-बार यही कह रही थी कि वह अपनी धमकी पूर्ण नहीं करेगी। वह प्रार्थना पुस्तक के पृष्ठ उलट रहा था, पर उसकी लड़खड़ाती हुई जिह्वा से शब्द बड़ी कठिनता से निकलते थे। उसे हलकी तंद्रा-सी आ रही थी, उसने कसकर पुस्तक पकड़ ली, मानो मूर्छित होकर गिरने ही वाला हो।

तुरत ही उसने अपने को सँभाला। जब पाल इस प्रकार की विचार-धारा में पड़ा था, उस समय एंटिओकस बराबर उसकी ओर देख रहा था। उसके चेहरे पर होनेवाले कौतूहलपूर्ण परिवर्तनों को वह बड़े ध्यान से निहार रहा था। पाल के चेहरे का रंग उस समय वैसा ही फक हो गया था जैसा शव का हो जाता है। वह बालक बड़ी सतर्कता से पाल की गति विधि लख रहा था। यदि कहीं वह गिरने लगे तो वह उसे सँभालने के लिये सचेष्ट भी था। साथ ही वह वेदी के पास बैठे हुए बूढ़ों की ओर भी दृष्टि फेंकता जाता था कि कहीं उन लोगों ने पादरी के चेहरे का परिवर्तन लख तो नहीं लिया है। पर किसी ने यह बात नहीं जान पाई। यहाँ तक कि माँ ने भी अपने पुत्र के चेहरे का परिवर्तन नहीं देख पाया। वह बेचारी अपने स्थान पर ज्यों की त्यों स्थिर थी। वह ईश्वर की प्रार्थना करने में ध्यान मग्न थी, अपने पुत्र के ऊपर होनेवाले परिवर्तन का उसे कुछ भी ज्ञान नहीं था। एंटिओकस पादरी के और निकट चला आया, उसके रंग-ढंग से साफ जान पड़ता था कि वह पादरी की सहायता करने के लिये सतर्क है। पाल के लक्षण से व्यग्रता स्पष्ट झलक रही थी। पर बालक अपनी दृष्टि से मानो उसे सान्त्वना दे रहा था और चमकती हुई आँखों से कह-सा रहा था कि घबड़ाने की आवश्यकता नहीं। मैं यहाँ मुस्तैदी से खड़ा हूँ। आप अपना कार्य करते रहिए।

पाल अब तक उस खड़े पहाड़ पर चढ़ता ही जा रहा था। उसके शरीर में फिर रक्त-संचार होने लगा। तने हुए स्नायु शिथिल

पड़ गए। पर यह शैथिल्य निराशा के कारण था—भय के राशीभूत होने के कारण था। पाल के शरीर की यह शिथिलता उस मनुष्य की शिथिलता के समान थी जो अथाह जलराशि में डूब रहा हो और जीवन की सपूर्ण आशा छोड़कर शात हो गया हो—जिसमें तरगों से द्वंद्व करने की शक्ति का एकात लोप हो गया हो। जब वह उपस्थित जन-समुदाय की ओर फिर मुड़ा तो उसने अपनी आँखें बद नहीं कीं।

'ईश्वर आपका मगल करें।'

एगनेस भी अपने स्थान पर धर्म पुस्तक के पृष्ठ पर सिर झुकाए स्थिर भाव से बैठी थी। वह पृष्ठ को पलटती नहीं थी। पुस्तक ज्यों की त्यों उसके सामने खुली थी। धुँधले प्रकाश में पुस्तक का सुनहला पुट्ठा चमचमा रहा था। उसका सेवक उसके पैरों के पास झुका खड़ा था। अन्य स्त्रियों के साथ साथ पाल की माँ भी चर्च के फर्श पर नगे पैर खड़ी थी। वे लोग बराबर इस प्रतीक्षा में थीं कि पादरी पुस्तक का पन्ना उलटे और हम लोग घुटने के बल बैठकर प्रार्थना आरभ कर दें।

पादरी ने पन्ना उलटा। वह उपासना की शात मुद्रा से प्रार्थना करने लगा। इस समय उसके निराश हृदय में बड़ी कोमल भावना प्रवेश कर रही थी। वह सोच रहा था कि मानो एगनेस मेरे साथ-साथ पहाड़ पर चढ़ रही है। ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार शूली पर चढ़ने के समय 'मेरी' ईसा मसीह के साथ थी। उसे जान पड़ा कि क्षण भर बाद एगनेस महत्व की सीढ़ियों से चढ़कर मेरे बगल में

आकर खड़ी हो जायगी। मानो नियमभंग की परम सीमा को पारकर अब वे दोनों साथ ही आत्म-निवेदन करना चाहते हैं, क्योंकि दोनों ने पाप भी साथ ही किया था। जब वह अपने साथ ही पाल को भी दण्डभागी बनाना चाहती है तो वह बेचारा उससे घृणा भी कैसे कर सकता था, क्योंकि वह घृणा प्रेम के आवरण में छिपी हुई थी।

भोग लगने का समय आ गया। मदिरा की थोड़ी-सी बूँद उसके वक्ष स्थल के भीतर पहुँचकर रक्त में उत्तेजना उत्पन्न करने लगीं। उसे शक्ति का अनुभव होने लगा, नवजीवन-सचार सा हो गया। उसे जान पड़ा कि मेरे हृदय मे स्वय ईश्वर का अवतार हो गया है।

पादरी सीढियों से उतरकर रमणियों के पास जाने लगा। उस समय उसकी दृष्टि में एगनेस की मूर्ति ही अन्य रमणियों में प्रमुख जान पड़ती थी। यद्यपि वह भी सबकी भाँति अपने हाथों पर सिर झुकाए बैठी थी। उसका सिर झुकाना ऐसा जान पड़ रहा था, मानो वह अपने हृदय में साहस को जगाने की चेष्टा कर रही हो। पाल का हृदय उसके लिये अनत करुणा से भर गया। उसके हृदय में यह इच्छा होने लगी कि मैं सीधे उसी के पास जा कर प्रसाद दूँ, जैसे मरणासन्न स्त्री को दिया करता हूँ। पर वह भी शक्ति-सचय करने के फेर में पड़ा था, क्योंकि जिस समय वह प्रसाद की थाली रमणियों के सामने करता उस समय उसके हाथ काँपने लगते थे।

शीघ्र ही प्रसाद बँट गया। एक वृद्ध किसान गायन करने लगा। उसके उच्चारण करने के अनंतर जन-समुदाय कुछ मंद ध्वनि से उसी की पुनरावृत्ति करता। फिर दो बार टेक को बड़े उच्च स्वर से दुहराता। यह ऋचा बड़ी प्राचीन और उदास जान पड़ती थी। वह ऐसी जान पड़ती मानो अत्यंत प्राचीन कल्प में जब मनुष्य निर्जन अरण्य में निवास करता था, तब इसका निर्माण हुआ हो। उसका मेल निर्जन समुद्र-तट पर टकरानेवाली लहरों की ध्वनि से ही मिल सकता था। चारों ओर होनेवाली उस मंद ध्वनि ने उसके मस्तिष्क में ये विचार पुन उत्पन्न कर दिए। ऐसा जान पड़ रहा था कि किसी घनघोर वन में रात्रि के समय वह बेतहाशा भागी जा रही हो अथवा किसी समुद्र वेला पर वह स्वयं प्रादुर्भूत होकर बालुका के टीलों के बीच मनोरम पुष्पों से आवृत्त हो कर खड़ी हो और उसके ऊपर उषा की सुनहरी किरणें रम रही हो।

उसके अंतरतम में कोई भावना जागरित हो उठी। किसी अज्ञात मनोवेग ने उसका कंठावरोध कर दिया। उसे जान पड़ा कि उसके सहित सारी पृथ्वी उलटी जा रही है, मानो वह सिर के बल चल रही हो और इस समय किसी प्रकार प्रकृतिस्थ हुई हो।

यह उसका अतीत था, स्त्री-जाति का अतीत था, जो उसकी परवरिश किया करता था। औरतें गाती थीं, वृद्ध गाते थे। परिचारिका पुचकारती थी, दास खड़े थे। वे ही मनुष्य और स्त्री जिन्होंने उसका भवन निर्मित किया, उसे सुसज्जित करके रहने

योग्य बनाया। उन्होंने खेत जोतकर अन्न उत्पन्न किया और बुनकर पहनने के लिये कपड़े तैयार किये।

इन मनुष्यों के सम्मुख वह किस प्रकार अपने पापों का प्रकाश करे। ये लोग उसके गुरु-वर्ग के जान पड़ते थे। ये लोग उसे उस पुरोहित से भी अधिक पवित्र जान पड़ते थे। उसे यह भी जान पड़ा कि ईश्वर मेरे पास बाहर खड़ा है। हृदय के भीतर भी वही व्याप्त है और मेरे मनोवेग में भी।

उसे भली भाँति ज्ञात हो गया कि मैं अपने पाप सहचर के ऊपर जो दण्ड लगाना चाहती हूँ उसी की मैं भी दण्ड-भागिनी हूँ। पर इस समय करुणा वरुणालय भगवान् ने पुरुषों, स्त्रियों एवं अबोध शिशुओं के स्वर में उसे बतलाया कि वह अपनत्व से सावधान रहे। उन्होंने उसे सलाह दी कि तू मोक्ष का मार्ग ग्रहण कर।

ज्यों ज्यों उसके इर्दगिर्द की जनता ऋचा का पाठ करती, उसकी आंतरिक कल्पनाएँ उसके एकांत जीवन के दिन एक-एक करके सामने लाने लगीं। पहले वह छोटी सी बालिका के रूप में दिखाई पड़ी, फिर किशोर-वयसा युवती के रूप में और तदनंतर वयस्क नारी के रूप में। इसी मंदिर में, इसी स्थान में उसके पुरखा आते थे और घुटने टेककर हाथ-जोड़कर प्रार्थना किया करते थे। एक प्रकार से यह मंदिर उसीके कुटुम्ब का था। यह उसीके वंश के एक पूर्व पुरुष द्वारा निर्मित हुआ था। यही नहीं परंपरागत जनश्रुति तो यहाँ तक कहती थी कि मंदिर में उ

देवी की मूर्ति स्थापित थी वह उसीके दूर के रिश्ते के पितामह ने वहाँ पर लाकर स्थापित की थी।

उसका जन्म और पालन पोषण इस प्रकार के लोगों के वश और इस प्रकार के वायुमंडल मे हुआ था। उनकी कीर्ति उसे उस स्थान की साधारण जनता से उच्चतर सिद्ध कर रही थी। वह यद्यपि रहती थी साधारण लोगों के ही मध्य में, पर ठीक उसी प्रकार जैसे किसी साधारण संपुट में रखा हुआ मोती।

इन आत्मीय लोगों के सामने वह अपने पापों को कैसे प्रकट करे? 'मैं इस पवित्र मंदिर की अधिकारिणी हूँ'—यह भावना उसके लिये बहुत ही असह्य हो गई। यहाँ तक कि जो व्यक्ति उसके पातकों का सहयोगी था उसके सामने रहने पर भी वही भावना प्रबल रही। उसका वह पाप सहचर इस समय पवित्र वेदी के पास साधुओं का वस्त्राभरण पहने खड़ा था, उसके हाथों में देव प्रसाद का पवित्र पात्र भी था। जिस समय इसने झुककर उसके चरणों पर प्रणाम किया उस समय वह लंबा व्यक्ति अत्यंत देदीप्यमान् दिखाई पड़ रहा था। वह इस बात की अपराधिनी थी कि उसने उस व्यक्ति को प्यार किया था।

खेद और क्रोध से अभिभूत होकर उसका हृदय तिलमिला उठा। चारों ओर से गाई जानेवाली ऋचाओं की ध्वनि में ज्यों ज्यों आरोह एवं अवरोह होता त्यों-त्यों उसके भावावेश में भी उतार चढाव होता। उसे जान पड़ा कि मेरी भावनाओं का समर्थन करती हुई कोई प्रार्थना भूगर्भ से प्रकट हो रही है, जो रक्षा

और न्याय की कामना रखती है। उसे ईश्वर के आदेश की ध्वनि सुनाई पड़ी। बड़ा कठोर और भीषण आदेश था, वह उसे निर्दिष्ट कर रहा था कि तू मेरे इस नालायक दास को मेरे पवित्र मंदिर से निकाल बाहर कर।

उसका चेहरा पीला पड़ गया। शरीर से पसीना निकलने लगा। उसके पैर काँपने लगे। उसने तुरत अपना सिर ऊपर कर लिया और तनकर वेदी के पास खड़े हुए पादरी की गतिविधि का अवलोकन करने लगी। ऐसा जान पड़ा कि कोई विनाशिका शक्ति उसके शरीर में से निकलकर पादरी के शरीर में समा गई। वह जड़ीभूत हो गया, उसका शरीर उसी प्रकार के भयंकर आक्रमण से निश्चेष्ट हो गया जिस प्रकार के आक्रमण से एगनेस विकल थी।

एगनेस की इच्छाशक्ति के द्वारा चलाई गई वह कृत्या जाकर उसके मर्मस्थल में लगी। उसे ऐसा जान पड़ा कि उसकी अँगुलियों को पाला मार गया है, वे हिम की हो गई हैं। वह भीषण जाड़े के कारण सिर से पैर तक हिल उठा। जब वह आशीर्वचन कहने के लिये मुड़ा तो उसने देखा कि एगनेस मुझे घूर रही है। बिजली की भाँति दोनों की आँखें चार हुईं। उसे उस समय अतीत के सभी आमोद एक ही क्षण में स्मरण हो आए। यह आमोद उसी रमणी के प्यार के कारण मिला था। यह आमोद उसके प्रथम कटाक्ष-पात से, उसके प्रथम अधर-चुंबन से प्रादुर्भूत हुआ था।

उसने देखा कि वह पुस्तक लिए हुए अपने स्थान से उठ खड़ी हुई

'हे भगवन्, तेरी इच्छा पूर्ण हो'—उसने लड़खड़ाते हुए घुटने के बल बैठकर कहा। उसे जान पड़ा कि मैं इस समय स्वर्ग के शांति-भवन में अपने भाग्य के अनिवार्य आक्रमण की प्रतीक्षा कर रहा हूँ। वह बड़े जोर से प्रार्थना कर रहा था। उस समय प्रार्थना करनेवाली जनता की तुमुल ध्वनि में से वह एगनेस के पैरों के चलकर आने की आहट को भली भाँति लक्ष्य कर रहा था।

'वह आ रही है, वह अपना स्थान छोड़ चुकी है, इस समय वह अपने स्थान और वेदी के बीच है। वह आ रही है। वह देखो, यहाँ तक आ गई। सब लोग उसे घूर रहे हैं। वह मेरी बगल में आ गई।'

उसका भयानेरा इतना अधिक था कि उसके अधरों पर शब्द ठहरते ही नहीं थे। उसने देखा कि जो एटिओकस बत्तियाँ बुझाने में लगा था वह सहसा मुड़कर देखने लगा। उसे दृढ विश्वास था कि एटिओकस उसीको देख रहा है, वह मेरे पास ही सीढ़ियों पर खड़ी है।

वह उठ खड़ा हुआ। उसे जान पड़ा कि छत टूटकर मेरे सिर पर गिर पड़ेगी और मेरी खोपड़ी चकनाचूर हो जायगी। वह बड़ी कठिनाई से अपने पैरों पर खड़ा था। सहसा उसने साहस करके वेदी पर से पवित्र-पात्र फिर उठाने का प्रयत्न किया। उसे लेकर जब भंडार-घर में घुसने लगा तो उसे जान पड़ा कि एगनेस बढ़कर कठघरे तक पहुँच गई है और सीढ़ियाँ चढ़कर आ ही जाना चाहती है।